धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

# शाश्वत धर्म

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

अगस्त-2016 हिन्दी मासिक

दिशादर्शक-
धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति
जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

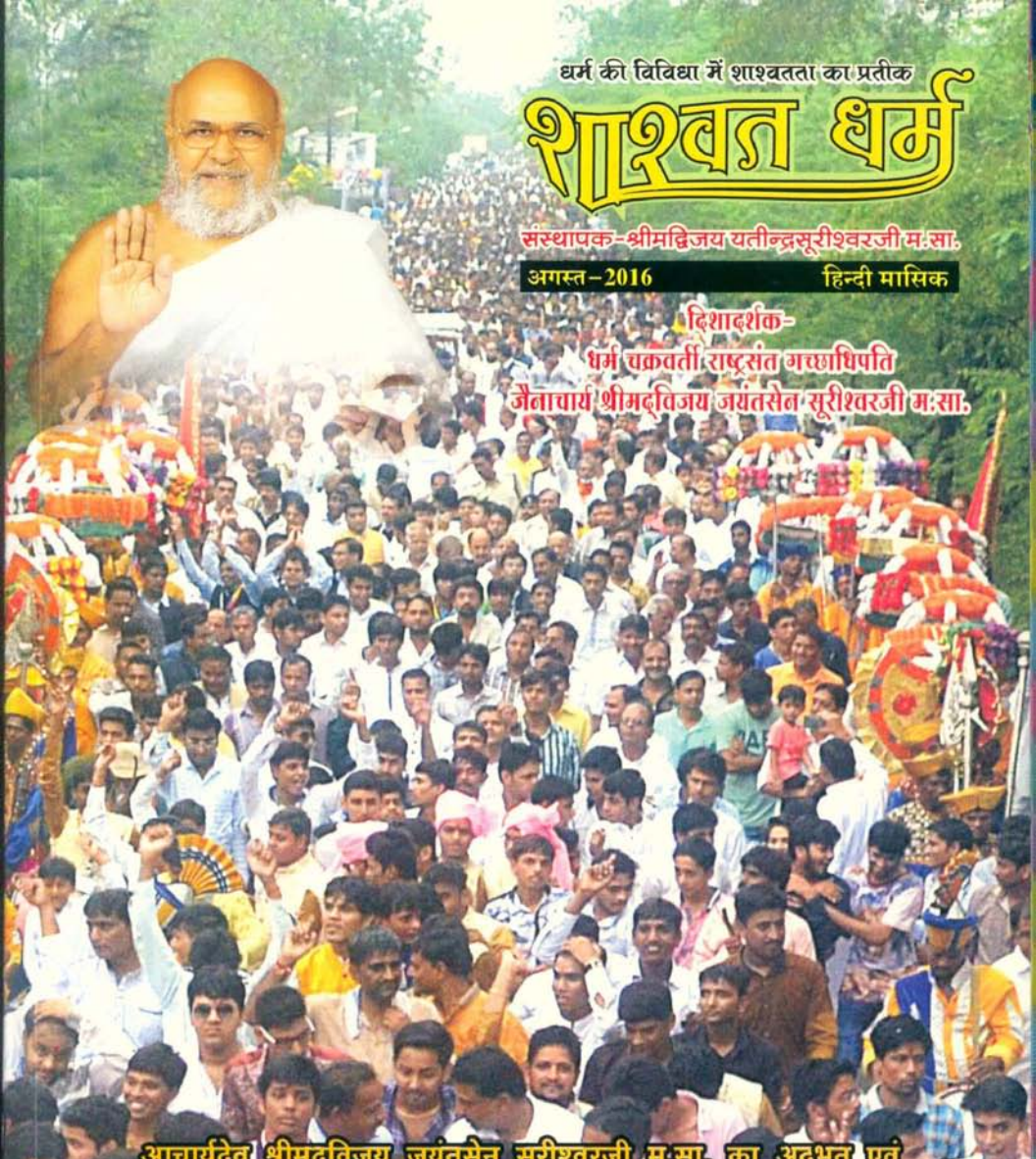

## आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का अद्भुत एवं अभूतपूर्व चातुर्मास प्रवेश रतलाम में 35000 नागरिकों ने की अगवानी।

### युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में

दि. 10 अगस्त 16 से नवकार मंत्र की आराधना रतलाम में, दि. 18 अगस्त 16 को रक्षाबंधन एवं नवकार मंत्र आराधना का समापन ● दि. 11 अगस्त 16 श्री जयंतसेन धाम रतलाम में प्रतिष्ठोत्सव प्रारंभ ● दि. 18 अगस्त 16 को श्री जयंतसेन धाम में श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनेन्द्र तथा गुरूश्री राजेन्द्रसूरिजी के बिम्बों का प्रतिष्ठोत्सव ● दि. 29 अगस्त 16 से पर्वाधिराज पर्युषण पर्व प्रारंभ दि. 2 सितम्बर 16 को महावीर जन्म वाचन ● दि. 5 सितम्बर 16 को संवत्सरी महापर्व ● परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन दि. 24 एवं 25 सितम्बर 16 जयन्तसेन धाम रतलाम पर आयोजित।

# विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

## हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

## राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

# हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंदुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोंघीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तत्वतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कवदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खींमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीराचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. धेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराय्

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटोरिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दगाजी सकलेचा

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR

32457

# हमारे गौरव


शा. नरेन्द्रकुमारजी रावकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
धलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड़ में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

# हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी बिनाजी
पटियाल धानसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

# हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पावेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सतु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

## गुजरात

बोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

बोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

# हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

श्री पुखराजजी ओरा
थराद

वोहरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

## मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

श्री मानसिंहजी
राजगढ़

## कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचीपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौपाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह मोहनलाल
मिश्रीचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोत्रा, बीजापुर/भीनमाल

ज्ञा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (साथला)

# रतलाम में अद्भूत
# शानदार प्रवेश

रतलाम। जिस क्षण की प्रतिक्षा में समस्त पूरे देश विशेषत: मालवा एवं रतलाम के गुरुभक्त अपने पलक पावड़े बिछाए हुए थे। आखिर वह क्षण पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत, संघनायक श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के ऐतिहासिक अद्वितीय चातुर्मास प्रवेश के साथ ही अपार उत्साह एवं भव्यता के साथ समस्त साकार हो गया। दिनांक 10 जुलाई 2016 को पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा., वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. एवं समस्त साधु-साध्वीवृंद के साथ पूरे उत्साह से प्रातः 7.30 बजे खेरादीवास स्थित नीमवाला उपाश्रय से विशाल चल समारोह प्रारंभ हुआ जो शहर के प्रमुख चौराहों एवं मार्गों से होता हुआ सागौद रोड़ स्थित श्री जयंतसेन धाम पहुंचा। विशाल चल समारोह में हजारों भक्तों की जनमेदिनी के

साथ कई झांकियां, हाथी, घोड़े एवं लोकनृत्यदल अपनी प्रस्तुति देते हुए चल रहे थे। जिसमें सबसे आगे श्री अष्टापद एवं गुरु श्री राजेन्द्रसूरिजी की झांकी थी, उसके पीछे मुंबई की लेजिम पार्टी, घोड़ों पर सवार पंचरंगी ध्वजा लिये समाजजन, शिवम कला ग्रुप अपनी कला प्रस्तुति देते हुए पारस बैण्ड मधुर स्तवनों की ध्वनियां बिखरेता हुआ चल रहा था । पश्चात् सुसज्जित हाथी, ऊँट, मयुर नृत्य करते हुए एवं कलाकार नवकार महामंत्र की आकर्षक झांकी, चण्डकोशी के नाग के प्रसंग की सुन्दर झांकी, अहमदाबाद का करताल ग्रुप, गहुंलियों से सुसज्जित वाहन, अहमदाबाद का रास ग्रुप, त्रिस्तुतिक पाट परम्परा की झांकी के बाद मन मधुकर ग्रुप नागदा जं. अपने भक्तिमय गीतों से सभी भक्तों को झूमने पर मजबूर कर रहा था । आदिवासी नृत्य, डी.जे., गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म. की विशाल झांकी जिसमें गुरुदेव के सम्पूर्ण जीवन को दर्शाया हुआ था, बड़ी आकर्षक लग रही थी। मंदसौर, जावरा, रतलाम आदि स्थानों की ढोल पार्टियां, अहमदाबाद का डांस ग्रुप, मुंबई के ढोल, ताशे अपनी गूंज से सबके आकर्षण का

केन्द्र बने हुए थे। सिर पर केशरिया, हरी पगड़ी पहने एक वेशभूषा में बालिकाएँ कतारबद्ध चल रही थी। तो महिलाएँ केसरिया वेशभूषा में सिर पर कलश उठाए अगुवानी कर रही थी पश्चात बड़नगर के जनता बैण्ड 'जिन शासन के राजा पधार रहे हैं' की धुन के साथ आगे बढ़ रहा था। पूज्य गच्छाधिपति एवं समस्त साधु-साध्वी वृन्द इस भव्य चल समारोह को शोभायमान कर रहे थे। सभी भक्त नाचते-झूमते हुए गुरुदेव की जय-जयकार करते हुए अपनी खुशी का इजहार करते हुए चल रहे थे। राष्ट्रसंत गुरुदेवश्री भी प्रसन्नमुद्रा में सभी को आशीर्वाद दे रहे थे। भव्य जुलूस में अनेक स्थानों पर समाजजनों द्वारा गहुंली की गई व अन्य सभी समाजों के वरिष्ठजनों एवं नागरिकों ने पूज्यश्री का आशीर्वाद लेकर स्वागत किया। लक्कड़पीठा में बोहरा समाज ने सैफी स्काउट बैंड से संतश्री का स्वागत किया। आमिल मुल्ला हुसैन भाई समीवाला, समाज सचिव मुल्ला जुजर भाई मास्टर मौजूद थे। अंजुमन इस्लाहुल मुस्लेमीन कमेटी सदर याह्या खान, शहरकाजी सैयद अहमद अली, नेता प्रतिपक्ष यास्मीन शैरानी, खुर्शीद अनवर, मंजूर अली

पटोदी ने स्वागत किया । श्री गुरु सिंध सभा के ज्ञानी मानसिंह, चौबीसा ब्राह्मण समाज अध्यक्ष नरेन्द्र जोशी, गुर्जर समाज के मोहनलाल धभाई, तोपखाना में श्री पद्मवंशी मेवाड़ा तेली राठौड़ समाज समिति के रतनलाल खन्नीवाल ने स्वागत किया। माली समाज, जायसवाल समाज, कुमावत समाज, स्वर्णकार समाज, सिंधी समाज आदि ने भी आचार्यश्री की वंदना की।

लगभग तीन किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा श्री जयंतसेन धाम पहुंची जहाँ श्री चैतन्यजी काश्यप परिवार द्वारा पू. गुरुदेव को गहुंली से बधाया गया । पश्चात वहां स्थित विशाल पांडाल में धर्मसभा हुई। संगीतकार श्री नरेन्द्रजी वाणीगोता एवं श्री विनोदजी अग्रवाल ने गुरुभक्ति के गीतों की सरिता बहाई। पूज्य गुरुदेव के पधारते ही 'राष्ट्रसंत की जय-जयकार' से पूरा गगनमण्डल गूंज उठा। श्री नरेन्द्र वाणीगोता द्वारा सामूहिक गुरुवंदन कराया गया। पश्चात गुरुदेव की मांगलिक श्रवण कर धर्मसभा को गति दी गई । अतिथियों द्वारा द्वीप प्रज्वलन किया गया । काश्यप परिवार द्वारा अतिथियों का स्वागत शाल,श्रीफल एवं माला से किया गया।

सर्वप्रथम चातुर्मास लाभार्थी एवं अ.भा. त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री चेतन्यजी काश्यप ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि आप सभी ने यहाँ आकर मुझ पर एवं रतलाम श्रीसंघ पर बहुत बड़ी कृपा की है । सभी समाजों ने पलक-पावड़े बिछाकर पू. गुरुदेव का प्रवेश कराया। यहाँ पू. गुरुदेव एवं मुनि भगवंतों की निश्रा में चार माह

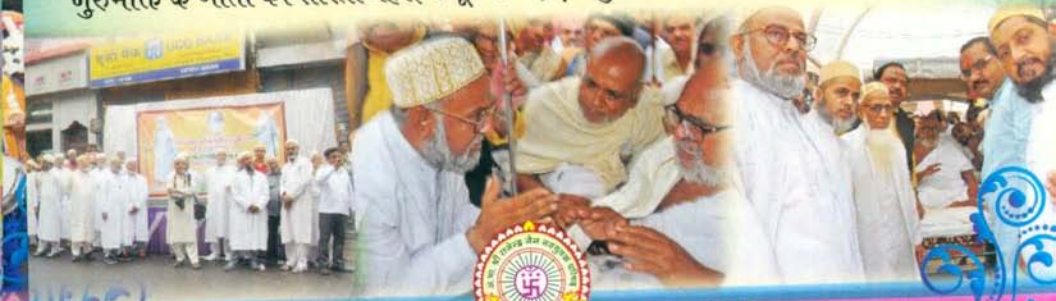

तक धर्म की गंगा बहेगी। जिसका अमृतपान कर हमें जीवन को सार्थक बनाना है। पूज्य गुरुदेव की परिवार पर सदा कृपा रही है। समाज के वरिष्ठों की भावना एवं सहयोग से श्री जयंतसेनधाम का निर्माण हुआ। पू. गुरुदेव के चरण कमलों से यह स्थान तीर्थ बन गया है।

त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा ने कहा कि रतलाम त्रिस्तुतिक संघ का त्रिस्तुतिक परम्परा में अपूर्व योगदान रहा है। यहीं पर गुरुदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. को पिताम्बर विजेता की उपाधि मिली। रतलाम का यह चातुर्मास 'सर्वजन सुखाय व सर्वजन हिताय' का संदेश देगा।

केन्द्र शासन के जनकल्याण एवं सामाजिक न्याय मंत्री श्री थावरचंदजी गेहलोत ने कहा कि हम बहुत भाग्यशाली हैं जो राष्ट्रसंतश्री का चातुर्मास यहाँ हुआ। हमारा देश साधु-साध्वियों की भूमि रहा है। यहाँ अनेक साधु भगवंत हुए जिन्होंने पूरे विश्व को कल्याण का मार्ग दिखाया। चातुर्मास में पू. गुरु भगवंतों के आशीर्वचन सुन उन्हें जीवन में अंगीकार करें तभी यह चातुर्मास सफल होगा।

सांसद श्री कांतिलालजी भूरिया ने कहा कि उन्हें आचार्यश्री का आशीर्वाद सदैव प्राप्त हुआ है। मेरे संसदीय क्षेत्र में ही आपका चातुर्मास मेरे लिये गौरव का आख्यान है। मैं सदैव आचार्यदेवश्री तता श्री मोहनखेड़ातीर्थ से जुड़ा हुआ रहा हूँ। मुझे इनसे प्रेरणा मिलती है। आचार्यदेवश्री के उपदेशों से मुझे मेरे जीवन में प्रकाश प्राप्त होता है।

केन्द्रीय मंत्री श्री थावरचंदजी गेहलोत, म.प्र. ऊर्जा मंत्री श्री पारसजी जैन एवं काश्यप परिवार द्वारा गुरुदेव को काम्बली अर्पण की गई।

पू. गुरुदेव ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि हमें अपने जीवन में साधना-

आराधना का लक्ष्य बनाकर निरंतर प्रभु भक्ति करते रहना है जो वास्तव में सच्चा आनंद है। भारत भूमि धर्म परंपरा की भूमि है जिस पर अनेक महात्माओं ने स्व परकल्याण कर मनुष्य को जीवन जीने की सही राह दिखाई। इस धरती पर जन्म लेना हमारे प्रबल पुण्यों का ही परिणाम है। हमें निरंतर परमार्थ करते हुए साधना करते रहना चाहिए। जिस तरह यहाँ जैन समाज ही नहीं अन्य सभी समाजों ने मेरा बहुमान किया उसने मुझे सबका बना दिया। मैं यहाँ त्रिस्तुतिक समाज का साधु या जैन समाज का साधु बनकर नहीं आया हूँ, मैं यहाँ सम्पूर्ण मानव समाज के साधु के रूप में आया हूँ। मैं आपकी हर काम में मदद करूंगा। आप कभी भी मुझे जरूर याद करें। राष्ट्रसंत ने कहा रतलाम में चातुर्मास के लिए श्री चेतन्य काश्यप वर्षों से विनती कर रहे थे। बीमार होने से अहमदाबाद में भर्ती होना पड़ा। मैंने गुरुदेव से प्रार्थना की कि स्वस्थ हुआ तो मोहनखेड़ा तीर्थ पहुंचूंगा और फिर रतलाम में चातुर्मास करूंगा।

मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में रतलाम चातुर्मास की भव्यता एवं सार्थकता को बताते हुए इस संबंध में 9 अंक की महिमा बताई। आपश्री ने फरमाया कि यहाँ प्रवेश के दौरान बहुत ही अद्‌भुत माहौल दिखा। आज के माहौल को देखकर बच्चे, बूढ़े और

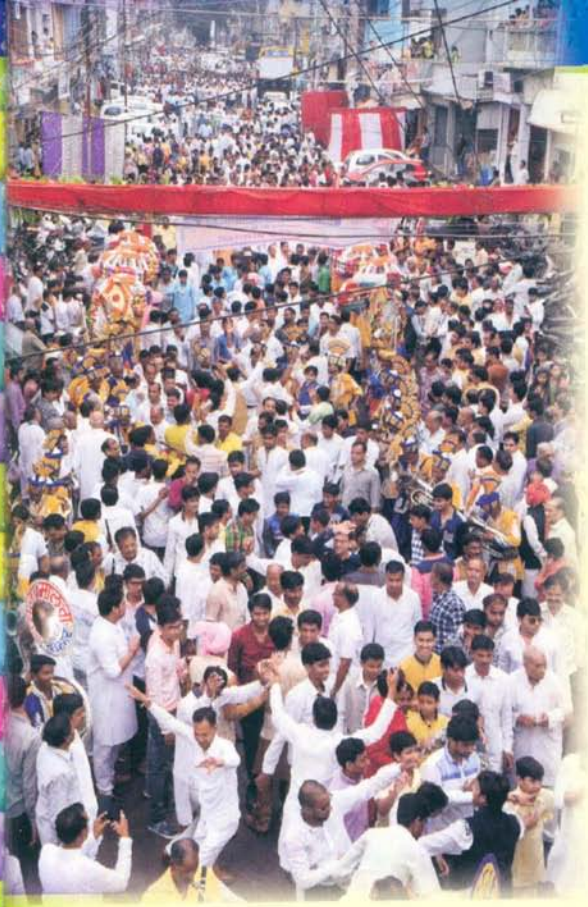

जवान हर कोई खुश है।

म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंहजी चौहान ने मोबाइल पर अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि मैं रतलाम आया लेकिन मौसम खराब था। रतलाम की हवाई पट्टी छोटी एवं पायलट को साफ न दिखाई देने के कारण हमें वापस लौटने का निर्णय लेना पड़ा। मैं तन से जरूर अभी भोपाल में हूँ लेकिन मन से अब भी वहीं (रतलाम समारोह में हूँ)। मैं चातुर्मास के दौरान राष्ट्रसंतश्री के दर्शन करने जरूर आऊँगा। इस अवसर पर भारत के जनकल्याण एवं सामाजिक न्यायमंत्री श्री थावरचंदजी गेहलोत, म.प्र. के ऊर्जामंत्री श्री पारसजी जैन, रतलाम सांसद श्री कांतिलालजी भूरिया, त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोहरा, मंदसौर सांसद श्री सुधीर गुप्ता, धार सांसद श्रीमती सावित्री ठाकुर, मल्हारगढ़ विधायक श्री जगदीश देवड़ा, पेटलावद विधायक श्रीमती निर्मला भूरिया, नीमच विधायक श्री दिलीपसिंह परिहार, जावद विधायक श्री ओमप्रकाश सखलेचा, रतलाम ग्रामीण विधायक श्री मथुरालाल डामर, सैलाना विधायक श्रीमती संगीता चारेल, थांदला विधायक श्री कलसिंह भावर, रतलाम की महापौर डॉ. सुनिता यार्दे, रतलाम जिला पंचायत अध्यक्ष श्री प्रमेश मईड़ा, रतलाम भाजपा जिलाध्यक्ष श्री बजरंग पुरोहित, मंदसौर भाजपा जिलाध्यक्ष श्री देवीसिंह धाकड़, अ.भा. श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू, रतलाम श्रीसंघ अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन मंचासीन थे।

संचालन अब्दुल सलाम खोकर एवं आभार श्री संघ अध्यक्ष डॉ. श्री ओ.सी. जैन ने माना।

रतलाम चातुर्मास
10 जुलाई 2016, रविवार

रतलाम चातुर्मास

वंदन
QUSHPANJAL

वंदन
णमो सिद्धाणं
णमो अरिहंताणं
चातुर्मास
2016
छाजेड़ ज्वेलर्स

# काश्यप ने श्रीसंघ को समर्पित किया सम्मान

चातुर्मास आयोजक एवं विधायक श्री चेतन्य काश्यप ने अपने सम्मान को रतलाम श्रीसंघ और चातुर्मास आयोजन की तैयारियों में लगे साथियों को समर्पित करते हुए कहा चातुर्मास आयोजन का मौका देकर श्रीसंघ ने उनका मान बढ़ाया है।

# चातुर्मास की शानदार तैयारी

सागोद रोड़ स्थित नवोदित तीर्थ जयंतसेन धाम में पूज्य राष्ट्रसंतश्री का चातुर्मास हो रहा है । चातुर्मास स्थल पर राष्ट्रसंत जयंतसेन सूरीश्वरजी की धर्मसभा के लिए 25 हजार वर्ग फीट में वॉटर प्रूफ पंडाल (डोम) बनाया गया है । धाम को धर्म अध्यात्म पर आधारित पेंटिग्स से सजाया है । इसमें जैन दर्शन पर केंद्रित धर्म, अध्यात्म एवं संस्कृति के साथ आधुनिक सभी शैलियों के दर्शन एक्रेलिक वाटरप्रूफ कलर से तैयार मार्डन आर्ट वाली पेंटिग्स के जरिए हो रहे हैं ।

इस पंडाल को बारिश के मद्देनजर जमीन से डेढ़ फीट ऊँचा रखा गया है। इसे लकड़ी और प्लाय से ऊंचा किया गया है । इससे जमीन गिली होने पर लोगों को बैठने में दिक्कत नहीं होगी । डोम के आसपास पानी की निकासी होती रहे इसलिए ड्रेनेज सिस्मट का आकार दिया गया है । पंडाल डेढ़ हजार बांस से बंगाल के कारीगर द्वारा तैयार किया गया है । इसमें पांच हजार से ज्यादा लोग बैठकर प्रवचन सुन सकेंगे । यहाँ 20 हजार वर्ग फीट में भोजन पंडाल भी बनकर तैयार है । इसमें एक हजार से ज्यादा श्रद्धालु एक साथ भोजन कर सकेंगे। डोम को विशेष कलाकृति से बनाया गया है और प्रवेश द्वार को विशेष आकार दिया गया है ।

## मुंबई के कलाकारों ने उकेरी

# आकर्षक चित्रकारी

चातुर्मास स्थल पर मंदिर, उपाश्रय, पंडाल और आवास व्यवस्था के साथ आकर्षक चित्रकारी की गई है। इससे जयंतसेन धाम की छटा नजर आ रही है। मुंबई से आए अशोक पंवार के मार्गदर्शन में कैनवास पेंटिंग दल के सदस्यों द्वारा इसे आकार दिया गया है। ये पेटिंग्स यात्री आवास, परिसर, पंडाल के आसपास लगाई गई है। पेंटिंग्स में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की संस्कृति दिखाई गई है। इसमें जैन धर्म के सिद्धांतों, महावीर स्वामी के उपदेशों, ओम, स्वस्तिक, नवकार मंत्र, आचार्यश्री के चित्रों के साथ जैन शास्त्रों के संदेशों, धार्मिक प्रतीक चिन्हों, मंदिर पूजा, गरबा रास एवं राजा की बरात को कैनवास पर उकेरा गया है।

चातुर्मास स्थल पर मोहनखेड़ा तीर्थ स्थित जयंतसेन म्यूजियम की कलाकृतियों को भी प्रस्तुत किया गया है। यह कलाकृतियां पंडाल की दीवारों पर लगाई गई है। आवागमन की सुविधा के लिए चातुर्मास के दौरान जयंतसेन धाम में 8 ई-रिक्शा भी चलाए जाएंगे।

## ध्यान दीजिये

* शाश्वत धर्म का प्रकाशन प्रत्येक मास की 3 तारीख को होता है। दिनांक 10 तक आपको अंक प्राप्त न होने पर दोप. 2:30 से 5 के मध्य कार्यालय पर टेलीफोन से सम्पर्क करें।
* प्रकाशनार्थ लेख, रचनाऐं प्रत्येक-मास की 2 तारीख तक मंदसौर कार्यालय पर प्राप्त हो जाना आवश्यक है।
* प्रकाशनार्थ समाचार एवं चित्र उस मास की दिनांक 15 तक मंदसौर प्राप्त होने पर ही उनको उस मास के अंक में सम्मिलित किया जाना संभव है। समाचार हो सके तो कम्प्यूटर पर टाइप करवाकर भेजे।
* पते में परिवर्तन या नए ग्राहक की सूचना शाश्वत धर्म के मेल Mail ID : shashwatdharmajain@yahoo.in पर दी जा सकती है। डाक से लिखित मिजवाने की भी सुविधा है।

# ऐसा निर्माण हुआ श्री जयंतसेन धाम का

रतलाम के सागौद रोड़ पर 4 बीघा (80 हजार वर्ग फीट) जमीन पर जयंतसेन धाम का निर्माण किया गया है। इसमें 2500 वर्ग फीट में सफेद मार्बल का जिनेश्वर देव मंदिर और 2000 वर्ग फीट में लाल पत्थरों का गुरु मंदिर बनाया गया है। दोनों मंदिरों में जैन स्थापत्य कला के दर्शन होंगे। निर्माण कार्य 10 साल पहले शुरू हुआ था।

जिनेश्वर देव मंदिर के लिए सफेद मार्बल राजस्थान के रामनगर से मंगवाया गया है। इसमें राष्ट्रसंत श्री के निर्देश और निश्रा में तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा 9 गुणा 9 के गर्भगृह में प्रतिष्ठित की जाएगी।

जिनेश्वर देव मंदिर की ऊंचाई 65 फीट रहेगी। उसके ऊपर 17 फीट की ध्वजा भी लगाएंगे। पांच फीट ऊँचा पेडस्टल बनाकर यह मंदिर बनाया गया है। आगे 40 गुणा 60 फीट का गोलाकार परिसर बनाया गया है। इसकी छत पर जैन धर्म से जुड़ी कलाकृतियां उकेरी गई हैं। गुरु मंदिर के लिए लाल पत्थर राजस्थान के भरतपुर से मंगवाया गया हैं। इसमें सफेद मार्बल की ढाई फीट की गुरुदेव राजेन्द्रसूरीश्वरजी की प्रतिमा विराजित की जाएगी। यहाँ लाल पत्थर से 35 फीट ऊंचे और 40 फीट चौड़े भव्य प्रवेश द्वार का निर्माण भी किया जा रहा है।

गुरु मंदिर की ऊंचाई 30 फीट है । इस पर भी 11 फीट की ध्वजा चढ़ाई जाएगी । मंदिर परिसर में लगी प्रतिमाओं और जैन धर्म के प्रतीकों को खंभों, दीवारों पर यहीं गढ़कर तैयार किया गया है । यहाँ 1500 वर्ग फीट में दो मंजिला साधु-साध्वीवृंद निवास, 3000 वर्ग फीट में 14 कमरों का दो मंजिला यात्री निवास, 2000 वर्ग फीट में, भोजनशाला 1800 वर्ग फीट में बनाई गई है । साधु-साध्वी निवास में धर्म विधान अनुसार ठहरने की व्यवस्था की गई है । वहीं यात्री निवास में चातुर्मास के बाद भी वहीं यात्री निवास में चातुर्मास के बाद भी यात्री ठहर सकेंगे । भोजनशाला में 2 हजार लोग एक साथ भोजन कर सकेंगे । 20 बाय 50 वर्गफीट में मंदिर की पेढ़ी बनाई गई है । ये सारा निर्माण एक ट्रस्ट के माध्यम से हो रहा है ।

## बगीचे के लिए पुणे से लाई गई मखमली घांस व खास म्यूजिक सिस्टम भी लगा

जयंतसेन धाम परिसर में 3000 वर्ग फीट में आकर्षक बगीचे का निर्माण किया गया है । बगीचे में फूल व फलदार पौधे लगाए जा रहे हैं । इसमें पूणे से मंगवाई गई मखमली घांस लगाई गई है । इसे इंदौर से आए एक्सपर्ट ने लगवाई । यहां संगीत के लिए विशेष म्यूजिक सिस्टम से सुबह नवकार मंत्र के साथ श्रद्धालु भक्ति रस से सराबोर हो सकेंगे ।

श्री जयंतसेन धाम में 24 तीर्थंकरों में से एक मूलनायक की ऐसी प्रतिमा विराजित की जाएगी जो रतलाम के किसी भी मंदिर में नहीं है । नगर के जैन मंदिरों में स्थापित प्रतिमाओं से अलग प्रतिमा रखने के पीछे उद्देश्य है कि भक्तों को देव दर्शन में नयापन मिले ।

# गुरू स्तवन

(तर्ज-प्रेम स्तन धन पायो....)

रचना-श्री प्रदीप ढालावत, मुंबई

मन था प्यासा, थी एक आशा, होगा चौमासा यहाँ
रतलाम नगरे, गुरूवर पधारे, कश्यप कुल हरखा-2
गुरूवर पधारे, पलके बिछा दी-2
रतलाम संघ की, किस्मत जगादी
आओजी-16
जयन्तसेन सूरी-2, पधारे मुझ नगरी,
जयन्तसेन सूरि गुरूवर-2

गुरू तुम आये, मन मुस्काये, खिल गये चेहरे सभी
अवसर है ये, उत्सव है ये, या त्यौहार कोई
उत्साह में है सभी
आँखों में मोती भरके वधाए
गुरू आशीष में, हम भीग जाये
आओजी....-16
जयन्तसेन सूरि गुरूवर-2 ।।1।।

गुरूदेव तुम से, लगनी है लागी, तुमसे है प्रीत हमे
ज्ञाता तुम्ही हो, दाता तुम्ही हो
माना मित तुम्हे, गाने है गीत हमे
जयन्तसेन नाम की, धुनी लगा दी
गुरू भक्ति की, धुम मचा दी
आओजी.....-16
जयन्तसेन सूरि गुरूवर-2 ।।2।।

भावना झमकुदेवी की पावन, चातुर्मास की थी
पौत्र चेतनजी कश्यप ने की, दादी की चाह पूरी
पधारे जयन्तसेन सूरी
मुनि चारित्र रतन गुरू गुण गाये
जयन्तसेन सूरि प्रदीप मन समाये
आओजी.....-16
जयन्तसेन सूरि गुरूवर-2 ।।3।।

ज्ञानायतन आराधना के सभी
विद्यार्थीजन।
धर्म लाभ।
ज्ञानायतन से ज्ञान को प्राप्त कर अपने जीवन को सुसंस्कार मान अपने बनाया है, यह क्रम आजीवन अपने जीवन में पूर्ण रूप से बनाये रखना यह मेरी मनोकामना है। आप सभी ज्ञान से जैन एवं जैन से सुश्रावक बनने के पथ पर अग्रसर हों यही कामना।

रतलाम — जयन्तसेनसूरि ...
दि. १८।५।२०१६ — धर्मलाभ

## याद आवे ज्ञानायतन

याद आवे ज्ञानायतन, मारू प्यास ज्ञानायतन करे धर्म तणु जतन, जय जय श्री ज्ञानायतन आनंद आनंद आनंद आनंद

**ज्ञानायतन माँ आनंद (2)**

प्रभाते ज्या अनुपम सुनाय प्रभु ना वचन जिनदर्शन गुरुवंदन थकी आतम आये पावन तै पलने करू हुँ नमन।

जय जय श्री ज्ञानायतन...

संवेदना नृत्य भक्ति नै शांति तणो ज्या वास मैरुगिरिनी याद अपावै अभिषेक अहैशाश अवै मुक्ति भणी गमन।

जय जय श्री ज्ञानायतन...

प्रतिक्रमण भक्ति भाव त्यां सौम्य तीरथ धाम निलगगन मा सुवास फैलावे तैवु संस्कार धाम परिषद नु तपौवन

जय जय श्री ज्ञानायतन...

माता पिताओं करता ज्ञान संस्कार प्रसिद्धि नै कान गुरुसेवा मा निपुण बनावे वाचनानौ अवाज थाप संयम संवेदन।

जय जय श्री ज्ञानायतन ...

जयंतसेन गुरुवर निश्रा जाणै नवलु नंदनवन हृदय वणी उज्जड़ भूमि पर मधुकर नु मधुवन जिनागम नु उपवन...

जय जय श्री ज्ञानायतन ...

मुनि जिनागनरत्नविजयजी म.सा.

# मारे बनवुं अणगार ...

मुनिराज श्री जिनागमरत्नजी म.सा.

मारे बनवु अणगार, मारे बनवु अणगार
मारे तरवो संसार, मारे बनवु अणगार
संयम...संयम....संयम....संयम.... मारे लेवो संयम

प्रभु पंथने पामी करूं हुं....आतमने उजमाल
गुरु चरण ग्रहीने मारे थावु छे भवपार
मुज नैया पार उतार....मारे बनवु अणगार।।1।।

शान ध्याननो योग बन्यो जे अनंतनो आधार
ए योगने साधीने मारे करवो निज निस्तार
मुज गुणोनो रखवाल, मारे बनवु अणगार ।।2।।

प्रभु पण चाल्या जे मारगडे बनवाने निराकार
बज्र मनके बालपणमा, धर्यो जेनो शणगार
आतमनो ए हितकार....मारे बनवु अणगार ।।3।।

मोज शोखमा रही रहीने सर्जयो में संसार
परिषहोने सही सहीने, दूर करूं अंधकार
मारो छे तारणहार, मारे बनवु अणगार ।।4।।

पद-प्रतिष्ठा लोभ लालचे, वधार्यो अहंकार
राग द्वेषने विषय कषायमां फेकयो नर अवतार
हवे तो पार उतार, मारे बनवु अणगार ।।5।।

कहे प्रभु संयम विना थाय नहीं उद्धार
देवो पण झुरी-झुरीने मांगे आ अवतार
मानव जीवननो सार...मारे बनवु अणगार ।।6।।

नक्कर विकास जीवननो कहे जयन्तसेन स्वीकार
मेरू जेवो अडग बनीने मे कर्यो छे निरधार
जिनागमनो सार...मारे बनवु अणगार ।।7।।

# याद आवे ज्ञानायतन

ज्ञानायतन अर्थात् ज्ञान की पाठशाला... आधुनिकता की अंधी दौड़ में जब युवा पीढ़ी अपना सही मार्ग भुल रही है, विषमता के वातावरण में संस्कार क्या है उसे समझना-समझाना बहुत ही मुश्किल बन रहा था तब आधुनिकता के साथ युवाओं को ज्ञान दिया जाये ऐसे विचार की परिकल्पना आई मेरे गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरि म.सा. के विशाल और गंभीर हृदय में। अपने शिष्यों को परिकल्पना का विस्तृत स्वरूप समझाया।

पुना नगर से ये परिकल्पना ने साकार रूप लिया। कार्यकर्ता के साथ गुरुदेव की निश्रा में 108 सदस्यों से शुरु हुआ ज्ञानायतन सिर्फ 14 महिनों में 5 ज्ञानायतन हजारों माता-पिता की प्रसन्नता का कारण बना और हजारों युवाओं के जीवन परिवर्तन का राह बना।

ज्ञानायतन I के बाद सिर्फ 22 दिन में एक दीक्षा, कई युवानों के संयम जीवन के भाव ये ही नहीं कई माता-पिता के पत्र द्वारा समाचार आते हैं कि 'ज्ञानायतन से मेरा बेटा बदल गया है' यह फलश्रुति देखकर सकल संघ भी अगले ज्ञानायतन का इंतजार करता है। एक ही विनती है पाठकगण को कि आप भी आपके लाडले युवा को अगले ज्ञानायतन में भेजकर निश्चिंत बने यह भाव।

– मधुकर संस्कार ज्ञानायतन परिवार...

# मधुकर संस्कार ज्ञानायतन का प्रतीक चिन्ह

मधुकर संस्कार ज्ञानायतन के प्रतीक चिन्ह को बड़े ही विचार विमर्शता के बाद तर्कपूर्ण बनाया गया है। जिससे इसे देखकर हर कोई प्रेरणा ले सके। इस प्रतीक चिन्ह का अपना ही महत्व है । कमल के पुष्प की कलाकृति में बने इस प्रतीक चिन्ह में कमल की पांच पंखुड़ियों पर हर पंखुडी में अलग–अलग पांच महाव्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, एवं अपरिग्रह) को अंकित किया गया हैं जो जिन शासन के प्रत्येक समुदाय एवं संसार के प्रत्येक धर्म को मान्य है। पुष्प पर एक भ्रमर संस्कार रूपी रस का पान करते हुए दर्शाया गया है । पुष्प के नीचे के भाग में पवित्र जल को दर्शाया है जो सभी को जल के समान सरल एवं निर्मल बनने की प्रेरणा देता है । "MSG" शब्द ''मधुकर संस्कार ज्ञानायतन'' को संक्षिप्त रूप में अंकित किया गया है । प्रतीक चिन्ह में गुलाबी, केसरिया, हरे एवं पीले रंग का उपयोग किया गया है जो सब को शांत, शासन के प्रति निष्ठा, प्रेम भाव एवं आनंद से जीवन जीने की प्रेरणा देता है ।

# पाँचवा ज्ञानायतन श्री मोहनखेड़ा तीर्थ

## प्रथम दिवस - 10 जून 2016

(राहुल चौधरी)

बच्चों में ज्ञान की ज्योति से उनका जीवन प्रकाशमान करने एवं अपने जीवन में सुकर्मों का निर्वाहन करते हुए, धार्मिक क्रिया करते हुए जीवन में पापों का क्षय कर सकल जीवन की ओर अग्रसर होने का बीज बोने के लिये आज के इस द्रुत गति से बढते हुए आधुनिक युग में चारों ओर प्रत्येक परिवेश में हर चीज बड़ी ही तीव्र गति से बदल रही है। लोगों का व्यवहार, चाल-चलन, खान-पान, बोली आदि सब में परिवर्तन हो रहा है। इस बदलते परिवेश में मनुष्य भौतिक उन्नति तो कर रहा है परंतु अपने आत्मकल्याण की उन्नति की ओर उसका ध्यान नहीं जा रहा है। वह अपने ही हाथों अपने पतन के मार्ग को प्रशस्त करता जा रहा है। भविष्य में यह स्थिति बहुत ही भयावह रूप लेगी। आज के आधुनिक युग में निरंतर बढ़ते अंधानुकरण से मनुष्य अपने वास्तविक धर्म को भूलता जा रहा है। वह पूजा, भक्ति, सम्यक ज्ञान एवं साधु-भगवंतों के सान्निध्य से दूर होता जा रहा है । इस भयावह स्थिति से वर्तमान युवा पीढ़ी को बचाने के लिये जो कल के समाज निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी उसे संस्कारवान बनाना अति आवश्यक है। इस हेतु आज की युवा शक्ति एवं किशोरवय के बालकों में संस्कारों की नींव रखने के लिये ''मधुकर संस्कार ज्ञातायतन'' का आव्हान किया गया। यह पांचवे भाग का शंखनाद दि. 10 जून से 16 जून तक चलने वाले इस ज्ञानायतन में सभी पालकगण उत्साह एवं

अपने बच्चों के जीवन में बदलाव हेतु पूर्ण समर्पण भाव से बच्चों को लेकर ''श्री जयन्तसेन म्युजियम'' प्रांगण में दि. 9 जून को पधारे एवं बच्चों का पंजीयन आदि करवाया। देर रात्रि तक सबके आने का क्रम जारी रहा। दिनांक 10 जून को प्रातः 4.30 बजे सामूहिक प्रतिक्रमण हुआ जिसमें 150 बच्चों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। आज ''मधुकर संस्कार ज्ञानायतन हेतु पूज्य गच्छाधिपति का प्रवेश होना था अतः सभी बच्चे तैयार होकर पू. गुरुदेव की अगुवानी करने को आतुर हो रहे थे। श्री मोहनखेडा तीर्थ एवं श्री जयंतसेन म्युजियम प्रांगण का दृश्य ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे कि पृथ्वी पर स्वर्ग उतर गया हो। समस्त प्रांगण देवलोक के समान दिखाई दे रहा था। सभी की नजरें पू. गुरुदेव के दर्शन हेतु आतुर हो रही थीं। सभी की उत्सुकता अपने चरम शीर्ष पर थी। सभी बच्चे पू. गुरुदेव के स्वागत हेतु एक जैसी वेशभूषा में मार्ग के दोनों ओर खड़े थे। दो-दो की कतार में पूर्णतया सुसज्जित किसी के हाथ में झंड़ा, किसी के हाथ में बेनर तो किसी के हाथ में अक्षत के थाल सुशोभित हो रहे थे। पूज्य गुरुदेव के प्रवेश होते ही चारों ओर जय-गुरुदेव की जय-जयकार से पूरा गगन मंगल गुंजायमान हो गया। सभी मोहनखेड़ा की तलेटी से कतारबद्ध होकर पूर्णतः अनुशासन में पंक्तिबद्ध होते हुए पूज्य गुरुदेव की जय-जयकार करते हुए मोहनखेड़ा तीर्थ पर पहुँचे वहां पहुंचकर सभी ने पूज्य गुरुदेव के साथ सामुहिक रूप से भगवान श्री आदिनाथ प्रभु को चैत्यवंदन कर दादागुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की स्तुति एवं वंदना की। 'दर्शनं देव देवस्यं' की ध्वनि से पूरा मंदिर प्रांगण गुंजित हो उठा। नन्हें-नन्हें बालकों ने गुरुभक्ति की धूम मचाई एवं ऐसा अलौकिक दृश्य उत्पन्न किया कि सभी भक्त देखते ही रह गये। प्रभु एवं दादा गुरुदेव के दर्शन-वंदन के पश्चात् सभी श्री जयन्तसेन म्युजियम प्रांगण में पधारें। नवकारसी करने के पश्चात् प्रातः 9 बजे पूज्य राष्ट्रसंत गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में ''मधुकर ज्ञानायतन भाग-5'' का भव्य शुभारंभ का कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। श्री मिलापजी चौधरी के अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि पूज्य गुरुदेव की कृपा से कितने ही असंभव कार्य पूर्ण हो जाते हैं ऐसे पूज्य गुरुदेव का सान्निध्य पाकर म.प्र. की जनता के भाग खुल गए हैं। श्री सुरेशजी तांतेड ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि पूज्य गुरुदेव जिस पर कृपा की एक नजर कर दें वह भव-भव से पार हो जाता है। मधुकर संस्कार ज्ञानायतन के माध्यम से आज नई पीढ़ी को सही दिशा मिल रही हैं। वे परिजन भी सराहना के पात्र हैं जिन्होंने अपनी संतानों को ज्ञान के इस पवित्र मिशन में भेजा। श्री मोहितजी तांतेड, धार एवं श्री चिराग जी भंसाली ने मधुकर संस्कार ज्ञानायतन का परिचय देते हुए बताया कि किस प्रकार श्री पू. गच्छाधिपति गुरुदेव के प्रेरणा से अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद एवं मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी, मुनिराज श्री जिनागमरत्न विजयजी एवं मुनिराज श्री

प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा. व अन्य मुनि भगवतों के अथक प्रयासों से बच्चों में धार्मिक ज्ञान की आधार शिला रखने के लिये अन्य शिविरों से अलग जिस में धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ बच्चों का सर्वांगीण विकास हो के प्रयोजन से ज्ञानायतन

की शुरुआत की। श्री पक्षालजी कोरड़िया ने बताया कि जिस प्रकार ज्ञानायतन 1 से लेकर 5 तक के माध्यम से बच्चों में सकारात्मक परिवर्तन आए हैं फलस्वरूप इसमें भाग लेने वाले बच्चों की संख्या भी बड़ी ही तेजी बढ़ती जा रही है। सबका सहयोग भी मिल रहा है।

मुनिराज श्री जिनागमरत्नविजयजी ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि बच्चों को यदि बचपन से ही अच्छे संस्कार एवं सन्मार्ग पर चलने का पथ दिखाया जाए तो वे निश्चित ही भगवान बन सकते हैं। मुनिश्री ने समस्त अभिभावकों को आह्वान किया कि वे अपने बच्चों को ज्ञानायतन में भेजें एवं भविष्य में एक उत्कृष्ट जैन समाज की नींव को मजबूत करें। आपने आज त्रिस्तुतिक संघ का नाम रोशन करनेवाले श्री सुरेन्द्रजी लौढ़ा, श्री रमेशजी धरु आदि का नाम लेकर कहा कि वे धार्मिक शिविरों के माध्यम से ही बाहर आए हैं। उसी प्रकार ज्ञानायतन के माध्यम से हजारों युवा एवं श्रेष्ठ श्रावक भविष्य में जिनशासन की जयणा करेंगे। अब तक 14 माह के समय में हुए पांचों ज्ञानायतन में से 7 लड़कों के दीक्षा भाव जागृत हुए जो दीक्षा अंगीकार करने के लिए तैयार हैं। यह ज्ञानायतन के माध्यम से दिये गये गहन ज्ञान का ही परिणाम है। मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी ने अपने प्रवचन में गुरु का महत्व बताकर हमारे जीवन में गुरु के प्रति हमारा क्या ओचित्य होना चाहिए यह समझाया। आपने फरमाया कि गुरु बिना स्वयं की चिंता किये अपने शिष्य

के जीवन को संवारने के लिये उसे हर प्रकार से परिपक्व बनाता है ताकि वह जीवन की प्रत्येक कठिनाइयों का सहजता से सामना कर सके। मुनिराज श्री ने फरमाया कि ज्ञानायतन आज के बच्चों में संस्कार एवं स्वधर्मी भक्ति की अलख जगाने में शत प्रतिशत सफल हो रहा है अतः प्रत्येक माता-पिता का भी यह दायित्व बनता है कि वे अपने बच्चों को इस ज्ञान यज्ञ में अवश्य भेजें।

मुनिराज श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा. ने अपने प्रवचन में फरमाया कि आज के ये छोटे-छोटे बच्चे ही कल के भावी समाज का निर्माण करेंगे। इनका जीवन अभी कोरे कागज के समान है जिस पर संस्कारों एवं ज्ञान की लेखनी से प्रेरणास्पद काव्य की रचना की जा सकती है। इस आयु में बच्चे जो सीखते हैं वह जीवन भर वैसा ही व्यवहार करते हैं अतः सभी माता-पिता अपने बच्चों का जीवन संस्कारवान बनाने के लिये उन्हें ज्ञानायतन में अवश्य भेजें।

पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने प्रवचन में पुराने शिविरों को याद किया एवं फरमाया कि धार्मिक शिविरों के माध्यम से हमारे समाज में ऐसे रत्न निकलकर आए हैं जो आज अपने परिवार और शंहर ही नहीं, बल्कि पूरे देश में जैन समाज एवं त्रिस्तुतिक संघ का नाम गौरवान्वित कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेव श्री ने ज्ञानायतन-5 के लाभार्थी परिवार शा. सूर्यप्रकाशजी मिश्रीमलजी भंड़ारी परिवार की गुरुभक्ति का परिचय देते हुए बताया कि यह परिवार हमेशा गुरु, गच्छ.एवं शासन की सेवा में समर्पित भाव से तन,मन, धन से शासन प्रभावना के कार्य करता है। एवं भंडारी परिवार द्वारा किये गए कार्यों का उल्लेख किया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव को काम्बली ओढ़ाने एवं गुरुपूजन का लाभ म्युजियम ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मिलापचंदजी चौधरी ने लिया। पश्चात् पूज्य गुरुदेव द्वारा मांगलिक श्रवण कराया गया।

दोपहर में सभी शिविरार्थियों ने एक साथ भोजन किया जिसमें 150 से ज्यादा शिविरार्थियों ने बियासने की तपस्या की एवं 200 से ज्यादा ने गर्म पानी पीने का नियम लिया।

दोपहर में वाचना सत्र प्रारंभ करने से पूर्व सभी शिविरार्थियों का आई क्यू टेस्ट लिया गया जिसमें सभी उत्तीर्ण हुए। तत्पश्चात दोपहर 2 बजे से पूज्य गुरुदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म. की निश्रा में मुनिराज श्री जिनागम रत्नविजयजी म. ने अपनी वाचना में पांच सूत्र बताए, पहले सूत्र में शांत सुधा रस सूत्र के माध्यम से जीवन की महीमा बताई एवं धर्म संग्रह ग्रंथ के माध्यम से औचित्य पालन में माता-पिता को पंचाग प्रणिपात प्रणाम करने की विधि सिखाई। यह सम्पूर्ण वाचना नाटकीय दृश्य के माध्यम से प्रभु भक्ति करते हुए सजीवता के साथ प्रदर्शित की गई। नाटक का प्रभावी मंचन विश्व कोरड़िया, जय डांगी, आदिश सुराणा, हर्ष सुराणा एवं उमंग जैन आदि ने किया। जिसे देखकर उपस्थित सभी शिविरार्थियों ने अपने माता-पिता को पंचाग प्रणिपात प्रणाम करने के नियम लिए। दूसरे सूत्र में हमें नित्य प्रातः उठकर क्या पहुति करना चाहिए उसकी जानकारी दी जिसमें करीबन 250 बच्चों ने कम से कम नवकारसी के पच्चक्खाण करने का संकल्प लिया। तीसरे सूत्र में ध्रुतस्व सूत्र के माध्यम से धर्म में प्रमाद नहीं करने एवं मुनि भगवंतों को वंदन करने की क्रिया बताई जिसके नाटकीय प्रदर्शन से बच्चों पर अधिक प्रभाव पड़ा। चौथे सूत्र में घर से बाहर

निकलते वक्त हमारा माता-पिता के प्रति क्या औचित्य होना चाहिए एवं पांचवें सूत्र में किसी व्यक्ति से बात करते समय हमारा क्या औचित्य होना चाहिए आदि के बारे में बताया। सम्पूर्ण वाचना के साथ नाटकीय मंचन से बच्चों को सभी बातें सीखने में अधिक आनंद आया एवं सभी ने सहज ही सभी सूत्रों को सीख लिया। इसके बाद सभी शिविरार्थियों को 15 मिनट का विश्राम दिया गया जिसमें उन्हें ज्यूस आदि का पान कराया गया। इसके पश्चात 3.30 बजे ''वन मिनिट शो'' परीक्षा ली गई जिसमें सभी को एक मिनट में दिया गया प्रश्न पत्र हल करना था। परीक्षा के बाद मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने अपनी वाचना में नवकार महामंत्र की महिमा का गुणगान किया। नवकार महामंत्र का सारगर्भित अर्थ बताते हुए उसके नौ पदों के गुण एवं उन पदों के 64 अक्षरों की महिमा बताई एवं नवकार मंत्र जाप करने से होने वाले लाभ आदि के बारें में अवगत कराया। अनेक दृष्टांतों के साथ शाश्वती सूत्रों के पढने से होने वाले लाभ बताए। एक कहानी के माध्यम से मनुष्य के विवेक एवं सोच के बारे में बताते हुए कहा कि हमारी सोच प्राणीमात्र के लिए उदार होनी चाहिए। सभी जीवों के प्रति हमारी मैत्रीभावना होना चाहिए हमें संकट में सभी को सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहना चाहिए तभी हमारा जीवन सार्थक होगा।

ठीक 6:15 पर सभी शिविरार्थियों ने एक साथ प्रार्थना करके शाम का भोजन किया। उसके बाद समस्त मुनिगणों एवं पूज्य गुरुदेव की निश्रा में सामुहिक प्रतिक्रमण में सभी शिविरार्थियों ने भाग लिया।

रात्रि में संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 40 शिविरार्थियों ने भाग लिया। किसी ने गुरु, माता-पिता तो किसी ने प्रभु भक्ति के स्तवन गाकर अपने भाव प्रकट किए। प्रतियोगिता में सभी बच्चों का भरपूर उत्साह दिखा। प्रत्येक प्रतिभागी की प्रस्तुति के पश्चात ''जय-जय ज्ञानायतन'' के नारों से पूरा प्रवचन हॉल गुंजित हो उठा। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान-भव्य शाह, द्वितीय-अभिनंदन दसेड़ा एवं तृतीय स्थान वैभव कुमार ने प्राप्त किया। निर्णायक मण्डल में श्री किरण जी वाणी गोता एवं श्री पवनजी कटारिया थे एवं संचालन दीप जोशी एवं संयम मोरड़िया ने किया। प्रतियोगिया में सभी प्रतिभागियों ने ''आसरा इस जहां का मिले ना मिले हमको तेरा सहारा सदा चाहिए'' ऐवु लागे हो आज मने प्रभु आया मारा हृदय मा'' ''थारी प्रीति केसी असर मणती मुझमें साची डगर'' जैसे भक्ति स्तवनों की सुन्दर प्रस्तुतियां दी।

आज के आई क्यू. टेस्ट में प्रथम स्थान आदित्य धोका, द्वितीय स्थान आदिश सुराणा, तृतीय स्थान पराग जैन एवं चतुर्थ स्थान गौरव श्रीश्रीमाल ने प्राप्त किया। 1 मिनट में उत्तर दो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान शाश्वत मेहता, द्वितीय स्थान चेतन गादिया एवं तृतीय स्थान अभिषेक हरण ने प्राप्त किया।

# जीवन में अतिक्रमण नहीं प्रतिक्रमण करें

(आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी ने फरमाया)

ठण्डी पवनों में प्रभु के मधुर स्तवनों से भक्ति की सुवास से म्युजियम प्रांगण खिला-खिला सा लग रहा है । ब्रह्ममुहूर्त में प्रातः 4.30 बजे 250 बच्चों ने प्रतिक्रमण में भाग लिया । धीरे-धीरे शिविरार्थी श्री यतीन्द्र भवन के सम्मुख खुले प्रांगण में अपने जीवन में ज्ञान के प्रकाश को अंर्तनिष्ठ करने हेतु वाचना में एकत्रित हुए । मुनिराज श्री जिनागम रत्नविजयजी म. ने पांच इंद्रियाँ एवं उनके सदुपयोग के बारे में बताया । पहली स्पर्शेन्द्रिय अर्थात् जिसके द्वारा हम किसी भी वस्तु के स्पर्श का अनुभव करते हैं । इसका उपयोग हमें नित्य प्रभु एवं सद्गुरु के चरण स्पर्श आदि द्वारा करना चाहिए । दूसरी रसनेन्द्रिय अर्थात् जिसके द्वारा हमें किसी भी पदार्थ का स्वाद पता चलता है इसका उपयोग हमें सात्विक एवं

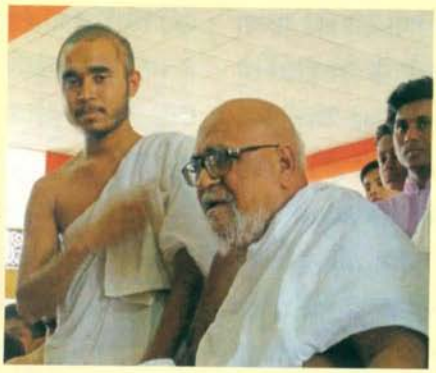

जीवन यापन हेतु आवश्यक भोज्य पदार्थों के लिए करना चाहिए न कि स्वाद लोलुपता में अभक्ष पदार्थों के सेवन में । तीसरी घ्राणेन्द्रीय जिसके द्वारा हमें सुगंध व दुर्गंध आदि का बोध होता है । चौथी चक्षुःरीन्द्रीय अर्थात् जिसके द्वारा हम संसार में देख सकते हैं इसका उपयोग हमें नित्य प्रभु दर्शन एवं पूज्य गुरु भगवंतों के दर्शन हेतु करना चाहिए । पांचवीं श्रोतेन्द्रीय जिसके द्वारा हम सुन सकते हैं इसका उपयोग हमें प्रभु स्तवन एवं सत्पुरुषों की वाणी का श्रवण करने हेतु करना चाहिए । यदि हम इन इंद्रियों का सद्उपयोग नहीं करते हैं तो अगले भव में हमें ये ज्ञानेन्द्रियां प्राप्त नहीं होती हैं । हमें जो मनुष्य भव प्राप्त हुआ है यह समस्त कृतियों में सर्वश्रेष्ठ है । देवता भी मनुष्य भव प्राप्त करने के लिए

बरसते हैं। मानव, देव, तिर्यंच एवं नरक गति में सबसे उत्तम मनुष्य को माना गया है। हमारा शरीर चिंतामणि रत्न के समान है जिसका कोई मोल नहीं । मनुष्य भव में ही हम अपने पापकर्मों की निर्झरा कर सकते हैं एवं परम पद मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। अतः हमें इसके महत्व को समझकर अधिक से अधिक धर्माराधना कर प्रभु भक्ति में लीन रहते हुए पापों का क्षय करना चाहिए । क्योंकि संसार के आडंबरों में पड़कर यदि हमने इस भव को व्यर्थ गंवा दिया तो पुनः हमें यह प्राप्त नहीं होने वाला। चार गतियों मनुष्य, देव, तिर्यंच एवं नरक गति में सबसे सर्वश्रेष्ठ मनुष्य गति है । पूर्व भव में किए गए सुकृत्यों से ही हमें मनुष्य गति प्राप्त होती है अतः हमें इसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए ।

इसके पश्चात् सभी शिविरार्थियों को गहरा ध्यान कराया, सभी ने ध्यान मुद्रा में बैठकर पूरी तल्लीनता से ध्यान किया एवं ईश्वर को अपने आप के नजदीक महसूस किया ।

ध्यान के पश्चात मुनिराज ने बच्चों से प्रश्न किया कि आपको ध्यान में सबसे अच्छा दृश्य कौन सा लगा ? तब सबने एक स्वर में उत्तर दिया कि परमात्मा हमारे सर पर हाथ रख कर हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। यह दृश्य हमें सबसे अच्छा लगा । इस पर मुनिराज ने पुनः फरमाया कि परमात्मा अभी मोक्ष या सिद्धशिला क्षेत्र में है। हमें परमात्मा के पास जाना है उनसे प्रार्थना कर कहना है कि अपने हाथ हमारे सर पर रख दें। इस हेतु ज्ञानायतन में सभी गुरुभगवंत हमारे जीवन को अनुशासित करने की प्रेरणा दे रहे हैं उसका सम्पूर्ण जीवन में पालन करें। उनके पास रजोहरण देखकर हमारी भी यही भावना जागृत होनी चाहिए कि मैं भी शासन की समर्पित भाव से सेवा करूं ।

इसके बाद सभी मुनिभगवंतों ने सुपात्र दान विधि बताई कि साधु-साध्वियों को गोचरी वोहराते समय कौन-कौन सी हमें सावधानी रखनी चाहिए एवं साधु-साध्वियों को उनके ग्रहण करने योग्य गोचरी वोहरानी चाहिए ।

सभी शिविरार्थी एक कतार में 'वंदे-वंदे-वंदे-विरम-विरम -विरम का नारा लगाते हुए देव व गुरु वंदन के लिए पहुंचे एवं 'पार्श्व श्री शंखेश्वर थारे द्वारे आयो छू' स्तवन को एक स्वर में दोहराया ।

पूज्य गुरुदेव, शासन सम्राट श्रीमद्

विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. तथा समस्त मुनि मण्डल के साथ पधारे। झाबुआ के सात वर्षीय हर्ष लोढ़ा ने सभी को भावपूर्वक सामुहिक गुरुवंदन कराया।

पूज्य गुरुदेव ने सभी शिविरार्थियों को आशीर्वचन प्रदान करते हुए फरमाया कि आप सभी हमें ज्ञान मिल जाए, हमारा जीवन ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशमान हो जाए यह सुन्दर लक्ष्य लेकर ज्ञानायतन में आए हो अतः यहाँ गुरुभगवंतों के द्वारा सिखाई गई बातों को पूर्ण श्रद्धा भाव से ग्रहण करें। ज्ञान के बिना जीवन बेकार है। ज्ञान है तो सब कुछ है। हमें ऐसा ज्ञान प्राप्त करना है जो हमें तो प्रकाश की ओर ले जाए साथ ही साथ अन्य लोगों के जीवन को भी प्रकाशमान करे। पूज्य गुरुदेव ने प्रतिक्रमण का अर्थ बताते हुए फरमाया कि प्रतिक्रमण अर्थात् वापस लौटना जिस प्रकार कोई व्यक्ति सरकारी जमीन पर अतिक्रमण कर लेता है तो सरकार द्वारा उसे चेतावनी आदि देकर उसे खाली कराया जाता है। उसी प्रकार हमारे जीवन में भी मोह माया, लोभ, क्रोध आदि ने अतिक्रमण कर हमें ईश्वर से दूर कर दिया है अतः हमें प्रतिक्रमण कर जीवन की समस्त प्रकार की विरक्तियों से वापस लौटना है। प्रतिक्रमण अर्थात् अपने जीवन में सही स्थान पर आ जाना। पूज्यश्री ने फरमाया कि यदि बचपन में ही आप सभी धार्मिक क्रिया-कलापों को समझ लेंगे तो जीवन पर्यन्त आपको कोई कठिनाई नहीं आएगी। हमें जीवन में सामायिक, स्वाध्याय एवं धार्मिक क्रियाओं के महत्व को समझना है। हमारा जैन धर्म अति प्राचीन है जब से संसार है तब से जैन धर्म का अस्तित्व है। भगवान आदिनाथ के समय कुलकरों का शासन चलता था जो आज भी विद्यमान है। उन्हीं ने हमें उत्कृष्ट जीवन जीने की कला सिखाई एवं जीवनयापन करने हेतु प्रत्येक कला का ज्ञान दिया। प्रभु आदिनाथ ने ही हमें असि अर्थात् अस्त्र-शस्त्र, मसि अर्थात् लेखन आदि की कला सिखाई। भगवान आदिनाथ ही पहले राजा तीर्थंकर बने और सबको जीवन जीने की कला सिखाई।

इस अवसर पर मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. सभी ज्ञानायतन के शिविरार्थियों के बीच विद्यार्थी की भांति गुरुदेव की वाणी का श्रवण कर रहे थे।

सभी शिविरार्थियों को नित्य आवश्यक सामग्री की कीट एवं पूजा-जोड़ी की प्रभावना का वितरण किया गया ।

सुबह को नाश्ता करने के पूर्व कुछ शिविरार्थी सभी साधु-साध्वी भगवंतों को गोचरी का लाभ प्रदान करने के लिए विनंती करने पहुंचे । साधु-साध्वी भगवंतों के पधारने पर सभी ने बारी-बारी से 'सुपात्र दानम्' के विशेष आयोजन में साधु-साध्वी भगवंतों को विधिपूर्वक गोचरी वोहराई । पश्चात् सभी ने एक साथ नवकार मंत्र का जाप कर नाश्ता किया ।

प्रातः नाश्ते के पश्चात सभी शिविरार्थी एक समान पूजा वस्त्र पहनकर श्री जयंतसेन प्रवचन हाल में आये । जहाँ शिविर के कार्यकर्ताओं द्वारा ही मेरू शिखर पर्वत की मनोरम कलाकृति बनाई गई जिस पर इन्द्र द्वारा 108 प्रकार की औषधियों एवं नाना प्रकार के द्रव्यों से अभिषेक किया गया । सर्वप्रथम प्रभु आदिनाथ की प्रतिमा का सभी शिविरार्थियों ने नाचते-गाते हुए शानदार प्रवेश कराया ।

मुनिराजश्री जिनागमरत्नविजयजी सभी शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि यदि हमें हमारे जीवन को बदलना है तो आज प्रभु के अभिषेक में परमात्मा से यही प्रार्थना करना है कि प्रभु मेरा जीवन तो दोषों से भरा पड़ा है आज आपका अभिषेक कर मेरे पापों का क्षय हो एवं मैं आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर होकर प्राणी मात्र का कल्याण करूं । एक परमात्मा ही है जो हमें पर भव में मोक्ष प्रदान करेंगे । अतः सभी भावपूर्वक प्रभु का अभिषेक करें । 'शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व नो अभिषेक विश्व मंगल करे' की धुन पर सभी शिविरार्थियों ने भावपूर्वक अक्षत, केशर एवं अनेक प्रकार की औषधियों व द्रव्यों से प्रभु का अभिषेक किया । अभिषेक के दौरान मुनिगणों द्वारा अलग-अलग प्रकार के पदार्थों का महत्व बताया गया । आज के इन्द्र बनने का लाभ आदिश सुराणा खाचरौद को सबसे अधिक नियम लेने के टेंडर फार्म भरने पर प्राप्त हुआ ।

मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी ने एक प्रसंग द्वारा बताया कि इस महान जिनशासन को पाकर हम संसार के कई पाप कर्मों से

बच गए हैं । प्रभु के इस शासन का इतना प्रभाव है कि इसके आचरण से हम जीवन में कई कठिनाइयों एवं दुर्घटनाओं से बच जाते हैं । अतः हमें प्रभु से यही प्रार्थना करनी है कि आपके शासन में हमारी यह भव यात्रा जल्दी पूर्ण हो । हे ! प्रभु आपकी वंदना के लिये हमारे पास कोई शब्द तो नहीं परन्तु हम भावपूर्वक आपकी वंदना व स्तुति करते हैं । 'जिनवर तरु शासन आ जग में है महान' की स्वर लहरियों पर सभी भावपूर्वक प्रभु भक्ति में लीन हो झूमने लगे ।

पूज्य आचार्य गुरुदेव ने फरमाया कि हमारे द्वारा पूर्व जन्मों में किए गए पुण्य कार्यों के प्रबल प्रताप से ही हमें यह जिनशासन प्राप्त हुआ है । जिन प्रभु के दर्शन हेतु देवतागण भी तरसते हैं ऐसे जिनवर प्रभु के दर्शन, वंदन एवं अभिषेक करने का हमें परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है । प्रभु से हमें यही प्रार्थना करना है कि हमें जब भी मानव जन्म मिले तो वह जिनशासन में ही मिले जिससे हम अपने कर्मों की निर्झरा कर भव सागर से पार हो जाएं एवं जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पा जाएँ ।

दोपहर की नवकारसी के पश्चात् पुनः वाचना सत्र प्रारंभ हुआ जिसमें मुंबई के भाई नीलशाह (एम.एस.जी.) ने सभी को 'आर्ट ऑफ थिंकिंग' के बारे में बताया । सर्वप्रथम उपस्थित मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी, मुनिराज श्री जिनागमरत्नविजयजी व मुनिराज श्री प्रसिद्धरत्नविजयजी म.सा. को 'इच्छामि' के पाठ से सामूहिक गुरुवंदन किया गया । मुनि भगवंतों की निश्रा में भाई नील ने सभी को बताया कि यदि हमें इस भव से पार जाना है तो स्वयं ही कर्म करना होगा । एक प्रसंग द्वारा उन्होंने बताया कि यदि हम आलस्य या अहंकार भाव के कारण कोई कार्य नहीं करते तो उसमें हमारी ही क्षति होती है । उन्होंने बताया यदि गुरु को हम याद करे तो वह हमारा श्रद्धा भाव है । गुरु हमें याद करें तो वह हमारा सौभाग्य है और यदि हम गुरु के हृदय में बस जाएं तो हमारा संसार रूपि मोहमाया एवं चक्र से बेड़ा पार हो जाता है अतः हमें हमारे गुरुदेव के प्रति सदैव सच्चे मन से श्रद्धा रखना चाहिए ।

भगवान महावीर का वर्णन करते हुए उनकी जीवों के प्रति मैत्री भावना प्रमोद भावना एवं करुणा भावना आदि का उल्लेख कर समस्त जीवों के प्रति उदार भाव रखने की प्रेरणा दी । उन्होंने बताया कि हम जिस माहौल में रहते हैं वैसे ही बन जाते हैं । हमारी सोच में बहुत ताकत होती है । किसी के लिए अच्छा सोचना भी पुण्य का ही काम है । सभी तीर्थंकर भी अपने तीसरे भव में सभी जीवों के लिए मोक्ष की कामना करते थे । अतः हमें भी सभी जीवों के प्रति करुणा भाव रखना चाहिए ।

इसके पश्चात 'नाम कहेवत शोध

स्पर्धा' में सभी विद्यार्थियों ने आचार्यों, तीर्थंकरों एवं महासतियों आदि के नाम क्रमवार जमाकर लिखे ।

आज के एक मिनिट प्रतियोगिता के परिणाम सुनाए गए जिसमें आदित्य धोका ने प्रथम, महावीर जैन ने द्वितीय एवं आदिश सुराणा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

दोपहर स्वल्पाहार के बाद के वाचना सत्र में संगीत सम्राट श्री नरेन्द्रजी वाणीगोता पूज्य गुरुदेव के दर्शन हेतु पधारे। गुरुदेव को दर्शन, वंदन करने के पश्चात ज्ञानायतन के शिविरार्थियों के बीच ज्ञान चर्चा की । एक प्रसंग के माध्यम से उन्होंने सभी को जीवन में कभी हिम्मत न हारने एवं प्रतिदिन माता-पिता को प्रणाम करने की प्रेरणा दी । ज्ञानायतन गीत की रचना के पश्चात उसका सर्वप्रथम गायन श्री नरेन्द्रजी द्वारा ही किया गया । कई हास्य प्रसंगों द्वारा सबको गुदगुदाया एवं भक्ति स्तवनों की प्रस्तुति दी।

मुनिराजश्री प्रसिद्धरत्नविजयजी ने ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, आयुष्य आदि आठ कर्मों के बारे में बताया एवं उन्हें कंठस्थ कराया । मुनिश्री ने कहा कि जीवन में सफलता पाने के लिये आज का काम आज करो, स्वयं करो, तुरंत करो, अच्छा करो एवं उसे पूर्ण करो इन पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए एवं लगन एवं निष्ठा भाव से कार्य करना चाहिए।

ज्ञानायतन के कार्यकर्त्ताओं द्वारा श्री नरेन्द्रजी वाणीगोता एवं भाई श्री नील शाह का बहुमान तिलक, माला, श्रीफल व पूजा की जोड़ भेंट कर किया गया ।

शाम की नवकारसी में भी शिविरार्थियों ने प्रातः एवं दोपहर की भांति सुपात्र दान में भाग लिया । पश्चात सामूहिक प्रतिक्रमण किया ।

रात्रि में मॉडलिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सभी बच्चों ने एक से बढ़कर एक कला का प्रदर्शन किया। किसी ने देश का प्रधानमंत्री तो किसी ने सफाईकर्मी बनकर स्वच्छता एवं देश के प्रति जागरूकता का संदेश दिया तो किसी ने जैन साधु एवं शिक्षक बनकर जिनशासन की महानता को विशिष्ट कला प्रदर्शन द्वारा बताया । निर्णायक मण्डल में भाई नीलशाह, किरण वाणीगोता एवं संयम भाई ने सभी के मनमोहक प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए प्रदर्शन के आधार पर श्रेणी प्रदान की । तथा प्रदर्शन करने के पश्चात प्रत्येक प्रतिभागी को उनकी विशेषता एवं कमियां आदि बताकर उचित दिशा निर्देश भी प्रदान किए ।

इस प्रतियोगिता में प्रथम अक्षत, समकित वया, द्वितीय सौरभ कोरड़िया एवं निखिल देशरना एवं तृतीय स्थान गौरव श्रीश्रीमाल व जैनिश शाह ने प्राप्त किया ।

# मिथ्यात्व को छोड़ वास्तविक ज्ञान की ओर अग्रसर होवे

सुबह के सामूहिक प्रतिक्रमण में 300 से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लिया । उसके पश्चात् नित्य वाचना हेतु सभी शिविरार्थी वाचना सत्र में आना प्रारंभ हुए । प्रातःकालीन वाचना प्रारंभ करते हुए मुनिराज श्री जिनागमरत्नविजजी म. ने 'अणु परमाणु शिव बन जाओ' गीत के माध्यम से संसार के प्रत्येक कण-कण के प्रति दया भाव रखने की प्रेरणा दी । संसार में व्याप्त कण-कण धरम शिव पद को प्राप्त करें और संसार के सभी प्राणियों के कल्याण की मंगल भावना रखनी चाहिए एक प्रसंग का उदाहरण देते हुए बताया कि हम जैसा करते हैं हमें वैसा ही फल प्राप्त होता है । यदि हम सबके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो सब हमारे साथ भी प्रेमपूर्वक रहेंगे और यदि हम दूसरों के साथ अशिष्ट व्यवहार करेंगे तो कोई भी हमें न तो सम्मान देगा और न ही हमारे प्रति सद्भाव रखेगा । पूज्य साधु भगवंतों की निश्रा अनंत आनन्दायक होती है । वे ही हमें जीवन का वास्तविक ज्ञान देते हैं । उन्हीं के सान्निध्य में हमारे आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है । वे ही हमें इस संसार चक्र से मुक्ति पाने के लिये सन्मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करते हैं । अतः हमें हमेशा पूज्य गुरुदेव एवं साधु भगवंतों के सान्निध्य में रहना चाहिए एवं अपने आत्मकल्याण के किसी भी अवसर को छोड़ना नहीं चाहिए ।

पूज्य गच्छाधिपति, आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा., वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी म.सा. तथा समस्त मुनि मण्डल के साथ आगमन । सभी द्वारा सामूहिक गुरुवंदन किया जाता है पश्चात पू. गुरुदेव की निश्रा में देववंदन किया गया ।

पूज्य गुरुदेव ने अपने आशीर्वचन देते हुए फरमाया कि वास्तविकता में जैन बनना है, जैन संस्कारों को अपने अन्तर मन में स्थापित कर एक उत्कृष्ट जैन साधक बनकर नित्य प्रभु की आराधना कर श्रेष्ठ जैन साधक बनने का उदाहरण देना है । हम देव, गुरु एवं धर्म की भक्ति के प्रभाव से उत्तरोत्तर प्रगति करते हैं । ज्ञानायतन में आपको देव, गुरु, साधु-साध्वी भगवंतों के दर्शन वंदन एवं उनका पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ है । जिनके द्वारा आपको नित्य स्वयं एवं पर कल्याण का सद्ज्ञान प्राप्त हो रहा है । इनसे मिले ज्ञान को समझना एवं उसे हृदय में स्थापित करना है । ज्ञानायतन में सिखाई गई शिक्षा एवं ज्ञान को नित्य अपने परिवारजनों में चर्चा करें । आप निश्चय करें कि ज्ञानायतन से सद्ज्ञान लेकर ही जाना है । तुम महान बनोगे तो जैन शासन भी महान बनेगा । पू. दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. 14 वर्ष की उम्र में चाहे कितनी ही सर्दी, गर्मी या बारिश क्यों न हो नित्य प्रतिक्रमण करते थे । अतः हमें भी दृढ़

संकल्प लेकर नित्य प्रभु की आराधना में लीन रहना है।

गतरात्रि में हुई प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले सभी प्रतियोगियों ने पूज्य गुरुदेव के समक्ष पुनः अपनी कला का प्रदर्शन किया। जिसको देखकर उपस्थित सभी मुनि भगवंतों एवं गुरु भक्तों ने खूब सराहा। इसके पश्चात् पू.गुरूदेव ने मांगलिक श्रवण कराकर अनेक उपवास एवं नियमों के पच्चक्खाण कराए। इस अवसर सभी मुनि भगवंतों एवं वरिष्ठजन भी शिविरार्थियों के बीच बैठकर बच्चों की ही भांति गुरुदेव की वाणी का श्रवण कर रहे थे।

प्रातः नवकारसी में सभी शिविरार्थियों द्वारा साधु-साध्वी भगवंतों से विनंती की गई एवं सुपात्र दान किया गया। पश्चात सभी शिविरार्थी प्रवचन हॉल में प्रभु के महाभिषेक हेतु एकत्रित हुए। प्रभु भक्ति में झूमते हुए प्रभु का अभिषेक हेतु प्रवेश कराकर मेरू शिखर पर स्थापित किया गया। सभी अभिषेक के लिए अति उत्साहित नजर आ रहे थे।

मुनि भगवंतों ने सार पूर्वक राजयोग की परिभाषा बताई एवं फरमाया कि हमें स्वयं के आत्मकल्याण के लिए बदलना है अतः प्रभु का अभिषेक करते हुए यही भावना रखना है कि प्रभु आपके अभिषेक से मेरे पाप कर्म नष्ट हो जाए एवं मेरा जीवन सत्कार्यों में अग्रसर हो जाएं। जब हम छोटे थे तो निष्पाप थे परन्तु जैसे-जैसे हम बड़े होते जा रहे हैं संसार की मोह - माया में पड़कर पाप कर्मों की ओर बढ़ते जा रहे हैं अतः परमात्मा से प्रार्थना करें कि हमें संसार के पापकर्मों से दूर रखे। 'दोष थी हरो भरियो झूंझता, तुझमें मणवा नी घणी आस छे' गीत की मधुर स्वर सरिता में सभी झूमते हुए प्रभु भक्ति में मग्न होकर अपने कर्मों की निर्झरा कर रहे थे। सभी ध्यान में लीन होकर प्रभु भक्ति में ऐसे डूबे हुए थे मानों सबको चिर आनन्द की प्राप्ति हो गई।

आज के अभिषेक में इन्द्र बनने का लाभ शाश्वत जैन एवं जय डांगी को मिला।

'शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व नो अभिषेक विश्व मंगल करे' की पावन धुन पर 108 प्रकार की औषधियों एवं द्रव्यों से प्रभु के अभिषेक की ऐसी धारा बही कि सभी पूर्णतः प्रभु भक्ति में लीन हो गए। सभी यही कामना कर रहे थे कि हे प्रभु ! आपका अभिषेक करते हुए मेरे जीवन में किए हुए सभी पाप कर्म धुल जाएं और मैं इस कंचन काया का मोह त्याग कर मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हो जाऊँ।

आज के अभिषेक में अपनी सुर-सुरावलियों से भक्ति का जमघट लगाने मोहनखेड़ा (राजगढ़) की माटी के ही सितारे, जैन संगीतकार श्री देवेश भाई 'अक्कू' अपने साथियों संग आए एवं प्रभु भक्ति के गीतों से सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया। 'ऊँचा अंबर ती आवोनी प्रभुजी दर्शन करवाने तरसे

आखड़ी', 'प्रभुजी का मंदिर में रेलगाड़ी आई', 'एक डंडा वाला आया', 'नाम है तेरा पालनहारा कब तेरा दर्शन होगा', 'विरती धन रो वेश प्यारो लागे रे', 'पौ सातम की रात दादा आप थाने आणों है' जैसे भक्ति गीतों से भक्ति का समा बांध दिया। सभी प्रभु भक्ति में झूमते हुए गरबा नृत्य आदि कर अपनी भावना प्रकट कर रहे थे। सब भक्ति में इस प्रकार मग्न हुए कि सभी शिविराथियों ने मिलकर उपस्थित मुनिगणों को उठा लिया एवं भक्ति की धूम मचाई।

दोपहर की नवकारसी के पश्चात पू. गुरुदेव की निश्रा में वाचना सत्र में मुनिराज श्री जिनागमरत्नविजयजी ने अपनी वाचना में फरमाया कि हम भौतिक ज्ञान में तो काफी आगे बढ़ गए हैं परन्तु परमात्मा द्वारा दिखाए गए मुक्ति दिलाने वाले एवं सबका कल्याण करने वाले सम्यक् ज्ञान को जीवन में उतारने के बजाय उसे नकारते जा रहे हैं। आज हम धार्मिक ज्ञान में शून्य हैं। हम निरंतर उस ज्ञान की ओर अग्रसर होते जा रहे, जो हमें नैतिक पतन की ओर ले जा रहा है। हम आज भी अपने आत्मोत्थान के प्रति सजग नहीं हैं। पू. मुनिराज ने अनेक उदाहरण देकर बताया कि किस प्रकार हम प्रभु के सिद्धांतों पर चिंतन व अमल न करते हुए मिथ्यात्व की ओर बढ़ते जा रहे हैं। जीवन में व्यवहारिक शिक्षा आवश्यक है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम अपने मूल ज्ञान को नकार कर धर्म से दूरी बना लें। आज सबसे ज्यादा जैन धर्म को क्षति पहुंच रही है। आज जैन धर्म की रक्षा हेतु हजारों साधु भगवंत भूखे-प्यासे अपनी चिंता किए बिना हजारों किलोमीटर नंगे पैर विहार करते हुए धर्म आराधना करते हुए धर्म प्रचार में सतत् प्रयासरत हैं किन्तु हम सांसारिक आडम्बरों एवं भौतिक सुखों में फंसकर पावन, मंगलकारी, मोक्षगामी मुक्तिकारक जिन शासन से दूर होते जा रहे हैं।

मुनिराज ने जिनशासन में हुए वस्तुपाल, तेजपाल, भामाशाह आदि महान आत्माओं के जीवन का उदाहरण देकर जिनशासन में त्याग के महत्व पर प्रकाश डाला एवं परमात्मा द्वारा जिनशासन की रक्षा हेतु किए गए कठोर तप एवं उनको दी गई असहनीय वेदनाओं का मार्मिक चित्रण किया। मुनिराज श्री की प्रेरणास्पद बातों का सभी शिविरार्थियों पर इतना गहरा असर पड़ा कि उपस्थित सभी शिविरार्थियों ने चाहे कुछ भी हो जाए जीवन भर नित्य प्रभु पूजा एवं धार्मिक क्रियाओं से जुड़े रहने का नियम लिया। जिसकी सभी के द्वारा अनुमोदना-अनुमोदना के स्वर से पूरा हॉल गूंज उठा।

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने आशीर्वचन में फरमाया कि हमें आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति भी रुचि रखना चाहिए। भौतिक ज्ञान तो केवल इस भव में काम आएगा परन्तु आध्यात्म के ज्ञान को पाकर हम इस संसार चक्र से मुक्ति पाकर अपने अनेक भव सुधार सकते हैं। आध्यात्म शास्त्र में आए हुए तत्वों का बार-बार चिंतन, मनन और भावन करना चाहिए। आत्म तत्व का विषय ही ऐसा है जिससे व्यक्ति अपने निज स्वरूप में लीन हो जाता है एवं उसके अन्तः करण की परतें खुलती जाती हैं और उसे विशिष्ट आनंद की

अनुभूति होती है । इसीलिए जीवन में मिथ्यात्व के अंधकार को दूर करने एवं आंतरिक प्रकाश की वृद्धि के लिए आध्यात्मिक सत्यों का बार-बार चिंतन मनन करना चाहिए।

इसके पश्चात 'समानार्थी शब्द शोध यात्रा' परीक्षा ली गई जिसमें सभी ने सजगता से प्रश्न पत्र हल करने के बाद स्वल्पाहार किया।

स्वल्पाहार के पश्चात पुनः वाचना सत्र में मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म. ने 'मधुकर संस्कार ज्ञानायतन' का अर्थ बताते हुए कहा कि मधुकर अर्थात् भंवरा जो फूलों से थोड़ा-2 रस लेकर उनकी सुगंध का अर्जन करता है उसी प्रकार हमें भी जीवन में धीरे-धीरे ज्ञान की सुवास का अर्जन कर जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। मुनिराज ने चार प्रकार की संतानों का वर्णन करते हुए बताया कि प्रथम संतान 'अभिजात' अर्थात् जिसमें पिता के जीवन में जो शुभ संस्कार एवं गुण होते हैं उनसे भी अधिक शुभ संस्कार अपने जीवन में होना।

दूसरी 'अनुजात' जिसमें पिता के समान ही गुण होते हैं न तो पिता से ज्यादा और न ही उनसे कम । तीसरी 'कुलांघर' जिसमें पिता से कुछ कम गुण हों और चौथी 'अपजात' अर्थात् हीन गुण वाली संतान जिसमें पिता में जो अच्छे गुण होते हैं उसका अंश मात्र भी नहीं होना । अतः हमें हमेशा प्रथम प्रकार की संतान बनने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे हमारे माता-पिता भी हम पर गर्व कर सकें।

मुनिराज श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म. ने राग व द्वेष का अर्थ बताते हुए कहा कि अनुकूल चीजों के प्रति हमारी आसक्ति 'राग'एवं प्रतिकूल चीजों के प्रति हमारी नापसंदगी द्वेष कहलाता है हम वो ही चीजें पसंद करते हैं जिनसे हमें सुख मिलता कोई चीज हमें जरा सा भी दुःख दे तो हम उसे नापसंद करने लगते हैं परन्तु परमात्मा सभी के प्रति करुणा भाव रखते हैं प्रभु को अनेक वेदनाएं देने के बाद भी उन्होंने सभी जीवों के प्रति उदार भाव रखा एवं सबके कल्याण की भावना से प्रत्येक जीव को मोक्ष मार्ग दिखाया । अतः हमें भी किसी के प्रति कोई भी द्वेष भाव नहीं रखना चाहिए।

शाम की नवकारसी के पश्चात् सभी ने चेयररेस आदि खेलों में भाग लिया जिसमें विजेताओं को पुरस्कार भी दिए गए । उसके पश्चात् समस्त शिविरार्थियों ने पूज्य गुरुदेव की निश्रा में शाम का प्रतिक्रमण किया।

रात्रि में नवकार मंत्र के जाप के पश्चात् विशेष प्रतियोगिता 'दमसेरास' का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता हेतु मधुकर शाश्वत्, भक्तामर, राजेन्द्र, जयंत, नवकार आदि अनेक ग्रुप बनाए गए । जिसमें सबके द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया एवं सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए राजेन्द्र ग्रुप विजेता रहा।

आज दिन में अ.भा. त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री चेतन्यजी काश्यप, पू. गुरुदेव के दर्शन हेतु पधारे । पू. गुरुदेव से धर्म चर्चा कर ज्ञानायतन-6 का आयोजन रतलाम में करने की विनंती कर स्वीकृति प्राप्त की । इसके अलावा बाग, टाण्डा, झाबुआ आदि शहरों के श्रीसंघ गुरुदेव के दर्शन वंदन हेतु पधारे।

## सभी ने लिया केशरियाजी

# तीर्थ उद्धार का संकल्प

प्रातः काल की शुभ बेला में मंदिरों में कहीं घंटनाद तो कहीं स्तुति और आरती सुनाई दे रही है। पू. गुरुदेव श्री की निश्रा एवं श्री मोहनखेड़ा तीर्थ का प्रांगण जहाँ विश्वपूज्य दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. स्वयं अपनी दिव्य ज्योत से समूचे क्षेत्र को दैदीप्यमान कर रहे हैं। ऐसी परम पावनकारी धरती पर श्री जयंतसेन म्युजियम के पावन प्रांगण में संघपति, हजारों भक्ति की श्रद्धा के आयाम राष्ट्रसंत गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं समस्त साधु-साध्वी मंडल की पावन निश्रा में देश के विभिन्न क्षेत्र से आए 400 शिविरार्थी अपने जीवन में ज्ञान की ज्योत जलाकर संघ एवं शासन की सेवा तत्पर होने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। ज्ञानायतन के चौथे दिन प्रतिदिन अनुसार प्रातः 4.30 बजे 300 से भी अधिक शिविरार्थियों ने अपने कर्मों का क्षय कर जीवन में प्रभु से प्रीत लगाते हुए प्रतिक्रमण में भाग लिया। पश्चात् सभी शिविरार्थी नित्य वाचना सत्र में आकर बैठे जहाँ मुनिराज अपने ज्ञान की सरिता से सबके जीवन को निर्मल बनाने हेतु संकल्पित हैं।

प्रातः वाचना सत्र प्रारंभ करते हुए मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने सभी शिविरार्थियों को मन की चुस्ती के साथ शरीर की चुस्ती भी बनी रहे इस हेतु अनेक योग मुद्राएँ एवं प्राणायाम कराया। सभी के एक साथ ऊँकार की ध्वनि से समस्त प्रांगण में पवित्र सुवास फैल गई। मुनिराज श्री जिनागमरत्न विजयजी ने एक कहानी के माध्यम से बताया कि यदि हम किसी भी व्यक्ति से झूठ बोलकर या छलपूर्वक व्यवहार कर उसे क्षति पहुंचाते हैं तो हमारा भी कभी लाभ नहीं होता हमें भी उस कुकृत्य की सजा अवश्य ही मिलती है। मुनिराज ने सभी को कालचक्र के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं कहा कि हमारा म्युजियम प्रांगण भी कल्पतरू के समान ही है जहाँ आप जो चाहें वो सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। आपके एक बार निवेदन करने मात्र से सभी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। यह सब पू. गुरुदेव की ही कृपा का परिणाम है। अतः हमें भी पूर्ण ईमानदारी एवं निष्ठा से यहाँ बताएं गए ज्ञान को अर्जन करना है।

आज प्रातः के वाचना सत्र में विशेष रूप से मुंबई के मंगल जीवन नेचर क्योर एण्ड यौगिक साइंस सेंटर के डॉ. रमणीकजी गड़ा ने विशेष क्लास ली जिसमें उन्होंने सबको बिना दवाई के हमेशा स्वस्थ रहने के कई नुस्खे बताए। शरीर के विभिन्न अंगों पर अलग-अलग पाइंट करके एक्युप्रेशर के माध्यम से हर प्रकार के असाध्य रोगों का किस प्रकार निदान हो सकता है उसकी जानकारी दी एवं उपस्थित अनेक विद्यार्थियों के कई रोगों का तुरंत निदान भी किया। जिससे

सभी बच्चों में यह कला सीखने का उत्साह जागृत हुआ एवं सभी ने मुस्कुराते हुए डॉ. श्री गड़ा द्वारा बताई गई कला को सीखा ।

इसके पश्चात् मुनिराजद्वय ने गुरुवंदन के तीनों प्रकारों को सविधि विस्तार पूर्वक समझाया एवं खमासणे की क्रिया-विधि सिखाई । पश्चात् सभी ने सामूहिक देववंदन किया । पूज्य गुरुदेव के पधारने पर सभी ने सामुहिक गुरुवंदन किया । पूज्य आचार्यश्री ने सभी को आशीष देते हुए फरमाया कि आप सब ज्ञानायतन में आए हैं तो यहाँ सम्यक् ज्ञान प्राप्त करके ही जाएं । आप सब आत्मनिरीक्षण करें कि आज तक हमने क्या सीखा ? और हमारी स्थिति क्या है ? ज्ञान के बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते । ज्ञान दीपक के समान है जिसके प्रकाश के अभाव में व्यक्ति उजाले की ओर आगे नहीं बढ़ सकता । आप अपने जीवन में ज्ञानवृद्धि कर उन्नति के शिखर पर पहुंचे यही ज्ञानायतन का लक्ष्य है । ज्ञानायतन में आने के बाद हमारे संस्कार इस प्रकार हों कि हर कोई हमें देखकर प्रेरणा ले । हम शीष झुकाते हैं तो हमें आशीष प्राप्त होता है अतः हमें हमारे वडीलों का सदैव आदर करना चाहिए ।

सभी शिविरार्थियों ने गुरुदेव के सम्मुख विशेष कला का प्रदर्शन करते हुए सभी को ताली बजाकर बारिश की अनुभूति कराई ।

सभी विद्यार्थियों ने प्रातः काल नवकारसी में सुपात्र दानम कर सभी साधु भगवंतों को वोहराया । सभी साधु भगवंत भी बच्चों के उत्साह एवं उमंग को देखकर सबका मनोबल बढ़ा रहे थे एवं शिविरार्थियों को आवश्यक निर्देश प्रदान कर रहे थे ।

नवकारसी के पश्चात् सभी शिविरार्थी वाचना में आए एवं 'सब जीव शासन रसी' की भावना को दृढ़ कर ध्यान में एकाग्र होकर आत्मचिंतन किया । आज का अभिषेक विशेष रूप से भगवान केशरियाजी के लिए आयोजित किया गया। अभिषेक में आज के इन्द्र बनने का लाभ छः भाग्यशालियों को विशेष रूप से प्राप्त हुआ । 'ऐरी सखी मंगल गोवा री' की मधुर स्वर लहरियों के साथ, अक्षत, पुष्प आदि से प्रभु श्री अदिनाथ की प्रतिमा को भगवान श्री केशरियाजी के रूप में बधाया गया एवं प्रभु का जोरदार प्रवेश कर स्थापना की गई । सर्वप्रथम मुनिराज श्री जिनागमरत्नविजयजी ने जैन तीर्थों एवं भगवान केशरियाजी तीर्थ की दुर्दशा से सभी को अवगत कराते हुए कहा कि आज केशरियाजी तीर्थ की दुर्दशा इतनी विचारणीय हो गई है कि उसके बारे में सोचने मात्र से हमारी आँखों से अश्रु धारा बहने लगती है । किस प्रकार अन्य सम्प्रदाय के लोग जैन भावना को ठेस पहुंचाते हुए प्रभु की घोर आशातना कर रहे हैं । पू. मुनिराज ने बताया कि हमारे तीर्थों की रक्षा के लिये हमारे पूर्वजों, साधु भगवंतों व कई आचार्यों ने अनेक बलिदान दिये हैं । अतः प्रभु आदिनाथ के रूप में प्रभु श्री केशरियाजी को स्थापित कर उनके अभिषेक के समय हमें यही भावना मन में रखनी है कि जिस प्रकार आपके अभिषेक से हम निर्मलता का अनुभव कर रहे उसी प्रकार हमारे तीर्थों की भी शुद्धि हो । इस अवसर पर श्री किशोरजी खिमावत द्वारा खिमेल में कराई गई ऐतिहासिक भव्य, अद्वितीय प्रतिष्ठा समारोह का वर्णन करते हुए उनके द्वारा किए गए शासन प्रभावना के

कार्यों की अनुमोदना की ।

पूज्य मुनिराजश्री की ओजस्वी वाणी एवं प्रभु श्री केशरियाजी तीर्थ की दुर्दशा के मार्मिक वर्णन को सुनकर सभी शिविरार्थियों का हृदय भर गया एवं सभी में त्याग भावना इतनी प्रबल हो गई कि सभी शिविरार्थियों ने एक साथ संकल्प लिया कि जब तक श्री केशरियाजी तीर्थ श्वेताम्बर संघ को प्राप्त न हो जाए और उसका कायाकल्प सुधार न हो तब तक हम भी सतत् प्रयास करेंगे । जिसके लिये सभी ने कई नियम भी लिये ।

मुंबई से आए विशाल भाई ने बताया कि अरिहंत परमात्मा तो शुद्ध है । हम अभिषेक के दौरान यहीं भावना रखें कि प्रभु आपके अभिषेक से हमारा जीवन निर्मल बन जाए । जिस प्रकार माँ बच्चे को खिलाकर तृप्ति का अनुभव करती है उसी प्रकार भगवान का अभिषेक करने से हमारी आत्मा तृप्त होती है । 'शंखेश्वर प्रभु पार्श्व नो अभिषेक विश्व मंगल करे' की धुन पर निरन्तर अभिषेक की धारा बह रही थी । छः इन्द्र एक साथ मेरू शिखर पर प्रभु का अभिषेक कर रहे थे यह दृश्य ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों यह प्रांगण स्वयं मेरू पर्वत हो और हम यहाँ उपस्थित होकर कल्याणकारी प्रभु का अभिषेक देख रहे हो। लगातार तीन दिन तक अभिषेक की पावन धारा ऐसी बही कि सबके अन्तर्मन को पवित्र कर सबको निर्मल बना दिया । इसके साथ ही अभिषेक में 108 प्रकार की औषधियों एवं नाना प्रकार के द्रव्यों को उपयोग में लाया गया जिससे अभिषेक की पवित्रता बनी रहे उत्कृष्ट सामग्री एवं औषधियों के प्रयोग से वास्तविकता का आभास होता था अर्थात् अभिषेक पूर्णतः शुद्ध भाव से किया जाता।

आज मुनिराजश्री पवित्ररत्नविजयजी म.सा. के संयम जीवन को एक वर्ष पूर्ण होने पर उनके संयम जीवन की अनुमोदना की ।

मुनिराजश्री पवित्ररत्नविजयजी ने फरमाया कि भगवान का अभिषेक करते हुए हमारी आत्मा भी अभिषेक होकर वह निर्मल बन जाती है । प्रभु से कुछ ऐसा मांगों कि उसके बाद आपको कुछ मांगना ही न पड़े एवं बार-बार इस संसार चक्र में पड़ना ही न पड़े । जब ईश्वर स्वयं हमें देगा तो हमें मांगने की आवश्यकता ही नहीं । मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे भी अनन्त उपकारी गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में जीवन को मोक्ष मार्ग पर ले जाने वाले संयम जीवन को अंगीकार करने का अवसर मिला । यह सुअवसर मुझे ज्ञानायतन के माध्यम से ही प्राप्त हुआ जिससे प्रेरित होकर मेरी संयम भावना जागी एवं अनंत उपकारी जिनशासन की सेवा करने का मौका मिला। आप भी ज्ञानायतन से कुछ न कुछ सद् संकल्प लेकर ही जाएं तभी यहाँ आना सार्थक होगा । जय-जय ज्ञानायतन !

आज के अभिषेक के दौरान संगीतकार श्री त्रिलोकजी मोदी ने संगीत की सरिता से सभी को प्रभु भक्ति से तृप्त किया एवं भाई त्रिलोक भी पूजा के वस्त्र में ज्ञानायतन के छात्र की तरह लग रहे थे । सभी शिविरार्थियों के बीच घुलमिल कर भक्ति की धूम मचाई । 'हर जनम में दादा तेरा साथ चाहिए', 'सनेड़ो-सनेड़ो', 'संदेश आया है गुरुजी आएंगे', 'विरति धन नो वेश प्यारो-प्यारो लागे रे', एवं 'पंखिड़ा तू उड़िना जे पालीताणा रे आदिनाथ दादा ने म्हारो वंदन

करते' जैसे भक्ति गीतों पर झूमते हुए एवं गरबा नृत्य करते हुए सभी प्रभु भक्ति में लीन थे । कोई चंवर नृत्य कर रहा था तो कोई मुनिगणों के इर्द-गिर्द घूमकर रजोहरण गृहण करने की भावना व्यक्त कर रहा था ।

दोपहर की नवकारसी के पश्चात् वाचना सत्र में मुनिराज श्री निपुण रत्नविजयजी म. ने सभी को गुरु भगवंतों द्वारा बताई जाने वाली ज्ञानवर्धक शिक्षा एवं उनकी अमृतमयी वाणी को ध्यानपूर्वक एवं एकाग्रता से सुनने एवं उसका चिंतन करने की प्रेरणा दी । आपने बताया कि हमारा परम सौभाग्य है कि हमें यह महान जिनशासन प्राप्त हुआ है जिसमें अनेक साधु भगवंत अपने जीवन के सम्पूर्ण सुख त्यागकर सबके कल्याण के लिए आराधना करते हैं एवं अपने उपदेशों से समस्त प्राणी जगत का उद्धार करते हैं । अतः हमें जब भी मौका मिले इनके अमृत वचनों का श्रवण कर उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करके सभी के प्रति पूर्ण निष्ठा भाव रखना चाहिए ।

मुनिराज श्री प्रसिद्धरत्नविजयजी ने मनुष्य की चार प्रकार की बुद्धियों का उल्लेख करते हुए 1. पाती की बुद्धि 2. विनयी की बुद्धि 3. अरमों की बुद्धि 4. परिणामी बुद्धि के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं कहा कि हम नित्य जीवन में कई बार ज्ञान की आशातना करते हैं उन क्रिया-कलापों को हमें ध्यान में रखते हुए उसकी आशातना से बचना चाहिए । देव, गुरु एवं धर्म के प्रति सदा विनय भावना रखना चाहिए ।

पूज्य गुरुदेव ने अपने आशीर्वचनों में फरमाया कि हमें परमात्मा का जो यह मोक्षदायी जिनशान प्राप्त हुआ है यह कल्याणकारी जिनशासन पूर्व भव में किए गए तप एवं त्याग के परिणाम स्वरूप ही प्राप्त होता है । आप सभी भविष्य में एक भावी समाज का निर्माण करेंगे । अतः सभी देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पण भाव रखें एवं सदैव अपने संघ एवं शासन के प्रति वफादार रहें एवं निरंतर प्रगति कर जिनशासन का एवं अपने माता-पिता का नाम रोशन करें आप ही के सहयोग एवं सद्कार्यों से शासन निरंतर प्रगति करेगा अतः आप जहाँ भी रहें पूर्ण नैतिकता से सभी प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखते हुए धर्ममयी जीवन व्यतीत करें ।

आज बड़नगर, पारा, राजगढ़, रिंगनोद, बरमंडल, झाबुआ (महिला मंडल), इंदौर आदि के श्रीसंघ पू. गुरुदेव के दर्शनाथ पधारे एवं वासक्षेप लेकर आशीर्वाद लिया ।

दिन में वाचना सत्र के पश्चात् शाम को श्री जयंतसेन म्युजियम के प्रवेश द्वार पर सभी शिविरार्थी एकत्र हुए एवं प्रभु श्री सीमंधर स्वामी की मूर्ति का भव्य प्रवेश कराया । धार के जाबांज ढोल की गूंज पर नाचते-झूमते हुए सभी ने अपार उत्साह से प्रभु का ऐसा प्रवेश कराया कि उपस्थित सभी दर्शक देखते ही रह गये । रंग-बिरंगे गुलाल से पूरा म्युजियम प्रांगण रंगीन हो गया । सभी एक-दूसरे को गुलाल लगाकर प्रभु के प्रवेश की खुशी का इजहार कर रहे थे ।

झूमते हुए सभी आगे बढ़ रहे थे गुरुदेव के कक्ष के समक्ष पहुँचकर सभी ने एक स्वर में भाव पूर्वक 'दर्शन आपो गुरुदेवा, जल्दी पधारो गुरुदेवा' की पुकार की, जिसे सुनकर पू. गुरुदेव ने आकर सभी को आशीर्वाद प्रदान किया । सभी गुरुदेव के दर्शन वंदन कर उसी मस्ती के साथ आगे बढ़े । पूरे म्युजियम प्रांगण में भक्ति

की धूम मचाते हुए सभी शिविरार्थी श्री जयंतसेन प्रवचन हॉल में पहुंचे जहाँ प्रभु श्री सीमंधर स्वामी को सभी ने अक्षत, पुष्प से बधाया । सभी भक्ति के सागर में आनन्द के गोते लगाते हुए सब कुछ भुलाकर प्रभु भक्ति में झूम रहे थे । कोई मुनिगणों के इर्द-गिर्द घूम रहे थे कोई चामर नृत्य कर रहे थे । मुनि भगवंत भी सभी का उत्साह बढ़ाने में कोई कमी नहीं छोड़ रहे थे। उत्साहित बच्चे कई बार मुनि भगवंतों को उठाकर उनके प्रति आभार प्रकट कर रहे थे ।

**प्रभावशाली है श्री सीमंधर स्वामीजी मुनि** करीब 7 फुट की सीमंधर स्वामी भगवान की प्रतिमा का ज्ञानायतन में विशेष आकर्षण रहा जो परमात्मा को प्रवेश करवाने के लिए समस्त म्युजियम प्रांगण में उत्साह के माहौल सा प्रतीत हो रहा था दूर से देखो तो मानो लग रहा था रजोहरण लेके परमात्मा साक्षात भरत क्षेत्र में पधार चुके हों।

इसी प्रभावशाली प्रतिमा की निश्रा में सर्वप्रथम बार छत्राल नवकार तीर्थ में ज्ञानायतन के सदस्यों का संयम संवेदन हुआ उस संयम संवेदन के माध्यम से कई सदस्यों के उत्कृष्ट भाव जागृत हुए ऐसा लग रहा था मानो जिन शासन का अभ्युदय काल आ गया हो क्योंकि इस संयम संवेदन में संयम प्राप्ति के लिये सभी बच्चों की आखों से घंटों तक अश्रु धाराऐं बही तो कई सदस्यों ने तो अपना पूरा जीवन गुरुदेव के चरणों एवं जिनशासन को समर्पित करने का संकल्प लिया । इस प्रतिमा की विशेषता देखकर थराद से शंखेश्वर छः रिपालित संघ में भी इस प्रतिमा की निश्रा में संयम संवेदना का आयोजन हुआ । लगभग दो हजार व्यक्तियों ने संयम न मिले तब तक भीष्म संकल्प लिये । इसी प्रतिमा की निश्रा में भीनमाल ज्ञानायतन-4 का भी संयम संवेदन हुआ । वहाँ भी देवलोक के समान माहौल हो गया था ।

भीनमाल संयम संवेदना में भी इस प्रतिमाजी की निश्रा में हजारों सदस्यों ने नियम गृहण किए तो कई सदस्यों ने अपना जीवन गुरुचरणों को समर्पित किया । आज श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के जयन्तसेन म्युजियम में भी संयम संवेदन के हेतु इस प्रतिमाजी का आगमन हुआ यहाँ भी प्रतिमाजी के प्रवेश से बड़ा ही खुशनुमा माहौल बना । कई सदस्यों ने संयम प्राप्ति हेतु बैले, तेले व उपवास आदि की तपस्याएँ की, तो इन्हीं भगवान के समक्ष सूरत निवासी जैनिश विपिन भाई वोहेरा को उनकी माता श्रीमती भावना बहन एवं पिताश्री विपिन भाई ने उनको गुरु देव के चरणों एवं जिनशासन को समर्पित किया । यह प्रतिमा मानों संयम के लिये, भाववर्द्धक है तो मुमुक्षु के लिये चमत्कारिक भी है । जो भी इस प्रतिमाजी के दर्शन करते हैं उनके हृदय में एक बार संयम के भाव प्रवृत्त हो ही जाते हैं।

रात्रि में नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया जिसमें सभी प्रतिभागियों द्वारा भक्ति स्तवनों पर एक से बढ़कर एक प्रदर्शन किया गया । 'मिले है हमें जयन्त गुरु', 'ऐरी सखी मंगल गांवो री', 'मेरे घर के आगे दादा तेरा मंदिर बन जाए' जैसे प्रभु भक्ति के गीतों पर आकर्षक प्रस्तुतियाँ दी गई । इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अभिनंदन दसेड़ा, द्वितीय स्थान सिद्ध कोरडिया व विराज कोरडिया एवं तृतीय स्थान गौतम बम व भव्य शाह ने प्राप्त किया।

# संयम संवेदना में संयममयी हुआ माहौल

प्रातः 250 से अधिक शिविरार्थियों के सामूहिक प्रतिक्रमण के बाद सभी शिविरार्थी सुबह की वाचना में आए जिसमें पूज्य मुनिराज श्री निपुणरत्नविजय ने फरमाया कि हमारे हाथों की लकीरों में ही सिद्धशिला विराजमान है । यहीं 24 तीर्थंकरों का वास है । अतः हमें प्रतिदिन उठकर दोनों हाथों के दर्शन करना चाहिए एवं प्रभु वंदना के भाव से प्रार्थना करना चाहिए कि हे प्रभु ! मेरे द्वारा किसी का अहित न हो, मैं सब पर करुणा भाव रखूं । प्रतिदिन नवकार मंत्र के जाप से हमारे पापों का क्षय होता है एवं हमें कभी नरक गति प्राप्त नहीं होती । नवकार महामंत्र सभी मंत्रों में मंत्राधिराज है जिसका जाप करने से बड़ी से बड़ी पीड़ा से छुटकारा प्राप्त हो जाता है । पू. मुनिराज ने हस्तरेखाओं के माध्यम से आयुष्य देखने की कला सिखाई।

पूज्य गुरुदेव का समस्त साधु भगवंतों के साथ प्रवेश होते ही सभी एक स्वर में 'जल्दी पधारो गुरुदेवा, दर्शन आपो गुरुदेवा' पक्तियों के माध्यम से गुरुदेव के प्रति अपने भाव प्रकट किये । रतलाम के आठ वर्ष के बालक सार्थक द्वारा सामुहिक गुरुवंदन कराया गया ।

पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि देखते ही देखते आज ज्ञानायतन का पांचवा दिन आ गया हैं । नित्य बात करते-करते दिन जा रहे है । दो दिन बाद सब वापस घर लौट जाएंगे। हमें यह चिंतन करना है कि हम यहाँ से क्या लेकर जाएंगे । हमें यह निश्चय करना है कि इन सात दिनों में यहाँ नित्य प्रभु भक्ति, धर्माराधना माता-पिता को प्रणाम करना आदि की शिक्षा दी गई उसे जीवन पर्यन्त याद रखें । यहाँ रहकर जिस किसी के भी दीक्षा भाव जागृत हुए हैं तो वे भी अपने जीवन में दीक्षा लेने का लक्ष्य बना लें एवं अधिक से अधिक ज्ञानार्जन की ओर अग्रसर हो जाएं क्योंकि यदि आप में दीक्षा का दृढ़ संकल्प है तो दीक्षा अवश्य मिलेगी । चाहे इस भव में न मिले तो दूसरे भव में तो अवश्य ही मिलेगी । अतः जीवन में दीक्षा के भाव जरूर रखें ।

पश्चात आज 45 से अधिक शिविरार्थियों ने उपवास, 25 से अधिक ने एकासणा एवं 50 से अधिक ने बियासणा करने का पच्चक्खाण गुरुदेव से लिया एवं पूज्य गुरुदेव की मांगलिक का श्रवण किया।

मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने सभी बच्चों को योग एवं प्राणायाम कराया एवं सभी ने एक साथ ॐ के स्वर का जाप किया । इसके पश्चात मुनिराजश्री ने 18 पाप स्थानकों के नाम याद कराए एवं नवकार महामंत्र के नौ पद एवं उनके 64 अक्षरों की महिमा के बारे में बताया व भगवान महावीर के साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं के

बारे में जानकारी दी । आचार्य परम्परा को बताते हुए फरमाया कि गुरुदेव राजेन्द्रसूरी का जन्म भरतपुर व दीक्षा उदयपुर में । गुरुदेव धनचन्द्रसूरी का जन्म कुशलगढ़ एवं दीक्षा धानेरा, गुरुदेव भूपेन्द्रसूरि का जन्म भोपाल में एवं दीक्षा अलीगढ़ में, यतीन्द्रसूरि का जन्म धवलपुर में तथा दीक्षा खाचरौद में, धनचंद्रसूरि का जन्म जोधपुर में एवं दीक्षा जावरा में व वर्तमानाचार्य श्री जयंतसेनसूरी का जन्म पेपराल एवं दीक्षा सियाणा नगर में हुई । आदि की जानकारी दी । पश्चात् सभी ने सामुहिक देववंदन किया ।

नवकारसी के पश्चात् आज के वाचना सत्र में विशेष रूप से संयम संवेदना पर आधारित था । प्रवचन हॉल के बाहर ही प्रभु दर्शन कर सभी शिविरार्थी तिलक लगाकर अन्दर प्रवेश कर रहे थे । पूरे प्रवचन हॉल को विशेष रूप से सज्जित किया गया । दर्पण, पूजा कलश एवं रजोहरण आदि के माध्यम से मनमोहक सज्जा की गई एवं भगवान श्री सीमंधर स्वामी की मूर्ति के सम्मुख पुष्पों द्वारा बनाई रजोहरण की कलाकृति बहुत ही आकर्षक लग रही थी । जहाँ नित्य प्रभु के अभिषेक की धारा बहती वहाँ प्रभु श्री सिमंधर स्वामी की हाथ में रजोहरण लिये प्रतिमा ऐसा आभास कर रही थी मानो प्रभु स्वयं रजोहरण प्रदान करने के लिए यहाँ उपस्थित हों । पूरा प्रांगण इत्र, धूप एवं पुष्पों की सुगंधित खुश्बू से संयम की सुवास दे रहा था सभी की भीनी-भीनी खुश्बु मन मस्तिष्क पर अलग ही प्रभाव डाल रही थी।

मुनिराज श्री जिनागमरत्न विजयजी ने फरमाया कि हमारा यह मानव शरीर तो नश्वर है इसका कोई भरोसा नहीं जिस प्रकार एक कांच का गिलास जमीन पर गिरते ही नष्ट हो जाता है उसका कोई मोल नहीं रह जाता उसी प्रकार हमारा जीवन भी कांच की भांति क्षणभंगुर है । जो न जाने कब, किस पल में नष्ट हो जाए तब ये संसार के रिश्ते-नाते, परिवार सब यहीं रह जाएंगे। हम इस नश्वर शरीर को मोहवश कितना भी सज-संवार लें परन्तु बिना संयम अंगीकार किये यह मानव जीवन एवं शरीर व्यर्थ है । 'थारी प्रीति केति असर मणती मुसेमं साची डगर' की ध्वनियों में मग्न हो सब एकांत से श्रद्धापूर्वक मुनिराज के शब्दों का श्रवण कर रहे थे । मुनिराज ने बताया कि संसार में हम जितना पाप-पुण्य आदि करते हैं उसका आठवां भाग माता-पिता के आयुष्य में जाता है । माता-पिता के संस्कारों की भी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है । सिद्धरत्न महाराजा अपनी बेटियों को प्रतिदिन दीक्षा लेने की प्रेरणा देते थे । आज भी हजारों श्रमण-श्रमणी भगवंत अपने परिवार एवं भौतिक सुखों का त्याग कर प्रभु के शासन को चलायमान किये हुए हैं । जब हजारों श्रमण-श्रमणी भगवंत दीक्षा मार्ग पर चल सकते हैं तो हम क्यों नहीं चल सकते हमारे अन्दर भी उन्हें याद कर दीक्षा भाव जागृत होना चाहिए। कल भगवान श्रीसीमंधर स्वामी के प्रवेश से हम सब के मन में अपार आनंद उद्घाटित हुआ । खुशी से साराबोर होकर जोरों शोरों से प्रभु का प्रवेश कराया । आज हम उन्हीं तारणहार प्रभु की निश्रा में बैठे हैं । प्रभु ने करोड़ों जीव आत्माओं को दीक्षा देकर उनका उद्धार

किया है, हम भी आज उनके समक्ष यही भावना रखें कि प्रभु हमारे अन्दर भी जल्द से जल्द दीक्षा भाव जागें और हम इस संसार चक्र से मुक्ति पाएँ । मुनिराज श्री ने बताया कि संयम जीवन मोक्ष में जाने का वीजा है । हम हर भव में जो चाहे वह प्राप्त कर सकते हैं परन्तु रजोहरण तो मात्र इसी भव में ही मिलेगा । दुःख सहन कर दूसरे के प्रति दया भाव रखना श्रमण धर्म का ही प्रभाव है । मुनि भगवंतों का जीवन क्षमा की मूर्ति होता है वे हमेशा नम्र रहते हैं । उनके प्रति कोई द्वेष भाव भी रखे तो भी वह सबसे अपनत्व का भाव बनाए रखते हैं ।' धन-धन ऐ मुनिवरा रे - जे जिन आण पावे' की सुरावलियों में मग्न होकर सभी ने भाव पूर्वक समस्त भरत क्षेत्र के सभी श्रमण-श्रमणी भगवंतों की अनुमोदना की ।

इसी बीच पूज्य गच्छाधिपति, संयम दानेश्वरी, युग प्रभावक श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का समस्त साधु भगवंतों के साथ प्रवेश होता है । सभी शिविरार्थी गुरुदेव की अगुवाई करते है एवं धर्म ध्वजा हाथ में लिये पूज्य गुरुदेव की जय-जयकार के नारे लगाते हैं । 'गुरु हमारों अन्तर्नाद हमने आपों आशीर्वाद की गूंज से पूरा प्रांगण गुंजित हो उठा ।

मुनिराजश्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव के संयम जीवन की अनुमोदना करते हुए फरमाया कि गुरुदेव ने अपने 80 वर्ष की उम्र में 62 वर्ष संयम जीवन को अर्पित कर आज पूरे जैन जगत में त्रिस्तुतिक परम्परा की विजय पताका को लहराया है । गुरुदेव का संयम जीवन अनुशासन की प्रतिमूर्ति है । स्वरूपचंदजी के 6 पुत्रों में से गुरुदेव श्री यतिन्द्रसूरीजी ने 63 वर्ष पूर्व पूनमचंद को दीक्षा दान देकर समाज को अमूल्य रत्न सौंपा था । आज गुरुदेव ने अपने गुरुश्री यतीन्द्रसूरीजी की आज्ञा का पालन कर निरन्तर धर्म आराधना एवं शासन प्रभावना के कार्यक्रम कर उनके सपनों को साकार रूप दे दिया है । गुरुदेव के त्याग व समर्पण की गाथा जितनी कही जाएं उतनी कम है ।

वाचना के दौरान 'विरती घर रो वेश प्यारो-प्यारो लागे रे', 'थारी प्रीति केति असर मणती मुझमे साची डगर', 'धन-धन ऐ मुनिवरा रे जे जिन आण पावे' जैसे संयमी गीतों की मधुर मन्द-मन्द ध्वनि भी विशेष प्रभाव कर रही थी । पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित गीत 'मारे बनवु अणगार माणे वणजो संसार' का सर्वप्रथम विमोचन कर आज की संयम संवेदना में चार चांद लगाएँ।

शिविरार्थियों में से हर्ष, शाश्वत, विश्व कोरड़िया, विराज कोरड़िया आदि दीक्षार्थियों ने गुरुदेव के सम्मुख दीक्षा के भाव प्रकट किए। 'रजोहरण आपो माने रजोहरण' की स्वर ध्वनियों से पूरा हॉल गूंज उठा । गुरु भक्ति के इस अनुपम दृश्य को देखकर लाभार्थी परिवार के श्री मुन्नाभाई अपने आप को रोक नहीं पाए एवं हाथ में रजोहरण लेकर एवं चामर नृत्य करते हुए खुशी से झूम उठे एवं गुरुदेव के सम्मुख अपने भक्ति भाव व्यक्त किए ।

पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि ज्ञान प्राप्ति का यह कार्यक्रम अपने आप में अनूठे तरीके से चल रहा है जिसे आप स्वयं अनुभव कर

रहे हैं। यहाँ स्वाध्याय के साथ-साथ अनेक प्रकार की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के आयोजन से जीवन के सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त हुआ। संयम भाव को प्रकट करने का, संयम भाव जागृत करने का आज यह अद्भुत आयोजन किया गया। कई बच्चों के भाव भी जागृत हुए इन भावों को दृढ़ बनाना। जो छोड़ता है वह कर्मों को तोड़ता है। संयम जीवन अंगीकार करने पर हमारी सभी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं अतः हमें जीवन में शासन प्रभावना के सुन्दर कार्य करते हुए शुभ आचरण से जीवन यापन करना है जिससे अन्य भी प्रेरणा लेकर मनुष्य जीवन को सफल करें। चाहे आप सांसारिक जीवन जीयें या संयमी बनकर जीयें आपका जीवन प्रभु के दिखाये गए मार्ग के अनुसार ही उत्कृष्ट बना रहे तभी इस मनुष्य भव में आना सार्थक होगा।

दोपहर की नवकारसी के पश्चात् मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने सभी को मंदिर में प्रभु दर्शन, वंदन आदि क्रियाओं की बिस्तृत जानकारी दी एवं प्रभु दर्शन, वंदन की विधि से अवगत कराया। जैन धर्म में तिलक लगाने की परम्परा को बताते हुए एक कहानी के माध्यम से इसके लिये दिये गए बलिदानों की जानकारी दी एवं शरीर के विभिन्न अंगों पर तिलक करने का महत्व बताते हुए कहा कि सिर पर तिलक करना अर्थात् परमात्मा की आज्ञा को सिर चढ़ाना, कान पर तिलक अर्थात् आज्ञा को स्वीकारना, गले पर तिलक अर्थात् आज्ञा को हृदय में उतारना एवं नाभि पर अर्थात उसे स्थापित करना आदि की जानकारी दी।

मुनिराज श्री ने फरमाया कि हम जीवन में अनेक उपकारों से दबे हुए हैं जिनमें माँ, गुरु एवं परमात्मा का उपकार सर्वश्रेष्ठ है। गुरु आज्ञा का पालन करने से मोक्ष मिल जाता है। अतः हमें बहुत सोच-विचार कर ही गुरु बनाना चाहिए। महाभारत के प्रसंग द्वारा गुरु भक्ति का महत्व समझाते हुए मुनिश्री ने कहा कि गुरु के प्रति सच्ची निष्ठा हो तो उनकी मूर्ति से भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। जिस प्रकार शिल्पकार पत्थर को मूर्ति बनाता है तभी उसकी पूजा होती है एवं माली निरंतर बीज एवं पौधे को सींचता तब वह विशाल वृक्ष बनता है, उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य में गुणों का सिंचन कर उसे नर से नारायण बना देता है।

शाम की नवकारसी के पश्चात् सभी ने सामुहिक प्रतिक्रमण में भाग लिया। प्रतिक्रमण के बाद सभी शिविरार्थियों को ज्ञानायतन की रंगीन छतरी की प्रभावना वितरित की गई।

रात्रि में झाबुआ के हर्ष मेहता ने भक्ति स्तवनों की सुन्दर प्रस्तुति दी जिनकी सबने अनुमोदना की। उसके पश्चात् सभी शिविरार्थियों को 'एक चीज मिलेगी वण्डरफुल' फिल्म दिखाई गई। इस फिल्म में चल चित्रों के माध्यम से बच्चों को विभिन्न प्रकार के खाद्य उत्पादों के बारे में जानकारी दी गई एवं उनमें पाए जाने वाले मांसाहारी एवं हानिकारक पदार्थों के बारे में बताते हुए उनसे हमारे स्वास्थ्य पर होने वाले बुरे प्रभाव के बारे में अवगत कराया।

### किये दादा-गुरूदेव के दर्शन मातृ-पितृ

# वंदनावली में नम हुई सबकी आंखें

प्रतिदिन अनुसार प्रतिक्रमण के पश्चात् समस्त शिविरार्थी प्रातः की वाचना सत्र में एकत्र हुए जहाँ सामुहिक प्रार्थना के पश्चात् वाचना सत्र प्रारंभ किया गया । सर्वप्रथम सभी ने योग एवं प्राणायाम कर अपने आपको चुस्त किया। मुनिगणों द्वारा क्रमशः ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय आयुष्य, नाम, गौत्र एवं अन्तराय आदि आठ कर्मों की विस्तृत जानकारी देते हुए इन कर्म बधनों से बचने की जानकारी दी एवं 18 पाप स्थानकों का ज्ञान कराया। सूरत के अ.भा. तरूण परिषद के सेवाभावी कार्यकर्ता भाई केपुर दोशी भी वाचना सत्र में आए । मुनिराजश्री ने उनके संघ एवं शासन के प्रति समर्पण भाव एवं सेवा कार्यों से सबको अवगत कराया । सभी शिविरार्थियों द्वारा उनकी अनुमोदना की गई । शाम को मिली रंग-विरंगी छतरियों से सभी शिविरार्थियों ने कलात्मक तरीके से मनमोहक दृश्य उपस्थित किया । पश्चात् सामुहिक देववंदन व गुरुवंदन किया गया ।

सुबह के नाश्ते के पश्चात् सभी शिविरार्थी श्रीजयन्तसेन म्युजियम के मुख्य द्वार पर एकत्रित हुए । सभी शिविरार्थी एक समान पूजा वेश में किसी राजा की चतुरंगीनी सेना के समान सुसज्जित हो ज्ञानायतन की शोभा एवं एक समानता का परिचय दे रहे थे । आगे-आगे बैण्ड बाजे 'जय-जय ज्ञानायतन' एवं भक्ति स्तवनों को गाते हुए चल रहे थे । हाथों में पचरंगी धर्म ध्वजा, ज्ञानायतन एवं पूज्य गुरुदेव के चित्र लिए सभी कतारबद्ध होकर पूर्ण अनुशासन में चलते हुए जिन शासन की गरिमा का परिचय दे रहे थे । 'राष्ट्रसंत की जय-जयकार', 'जय-जय ज्ञानायतन' एवं 'वंदे-वंदे-वंदे वीरम्-वीरम्-वीरम्' के नारों से पूरा गगन मण्डल गूंज उठा । पूज्य मुनिगण भी सभी शिविरार्थियों का उत्साह वर्द्धन करते चल रहे थे एवं विशाल शोभायात्रा को अपनी निश्रा से शोभायमान कर रहे थे । श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पहुंचने पर समस्त शिविरार्थियों ने एक साथ प्रवेश किया । 'दर्शन देव देवस्य' की गूंज से पूरा तीर्थ प्रांगण गूंज उठा । सभी ने एक कतारबद्ध होकर विधिपूर्वक प्रभु आदिनाथ एवं दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन वंदन किए एवं दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी की आरती का लाभ ज्ञानायतन परिवार द्वारा लिया गया एवं दीक्षार्थी भाइयों द्वारा आरती कर गुरुभक्ति का परिचय दिया गया । 'ॐ नमो राजेन्द्र', 'जय - जय श्री आदिनाथ' के नारों से पूरा मंदिर प्रांगण गूंज उठा । पश्चात् सभी शिविरार्थियों ने मुनि भगवंतों की निश्रा में प्रभु स्तवनों पर भक्ति नृत्य की धूम मचाई सभी गुरुभक्ति में लीन होकर झूम उठे । सभी ने गुरुभक्ति का ऐसा सुन्दर दृश्य उपस्थित किया कि वहाँ

उपस्थित सभी श्रद्धालु मंत्र-मुग्ध रह गए एवं उन्हें बच्चों के असीम श्रृद्धा भाव को देखकर अपने जीवन में भी प्रभु भक्ति एवं गुरुभक्ति करने की प्रेरणा ली। इस अवसर पर लाभार्थी श्री मुन्नाभाई भी प्रभु दर्शन करने आए, सबके साथ प्रभु भक्ति में भाग लिया।

राजगढ़ के निमेश भाई ने भी भक्ति स्तवनों के माध्यम से भक्ति का समा बांधा तो सूरत के श्री संजय भाई बाऊ ने सबको सम्बोधित करते हुए कहा कि पूजा करते समय हमारे मन में शीतलता व पवित्रता होना चाहिए एवं क्रमशः केशर, पुष्प, धूप, दीपक, अक्षत, नेवैद्य, फल आदि पूजाओं की जानकारी देकर उनका महत्व बताया।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में प्रभु आदिनाथ एवं दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. आदि के दर्शन-वंदन कर सभी शिविरार्थी कतारबद्ध होकर जय-जय ज्ञानायतन के नारे लगाते हुए पुनः श्री जयंतसेन म्युजियम प्रांगण में दोपहर की नवकारसी कर वाचना में एकत्र हुए। जहां श्री संजय भाई मारू ने गिरिराज श्री शत्रुंजय तीर्थ एवं माता-पिता की महिमा का गुणगान किया। 'ऊँचा-ऊँचा शत्रुंजय ना शिखरों सोहाय' की स्वर लहरियों के साथ शत्रुंजय तीर्थ की महत्ता बताते हुए कहा कि यह तीर्थ अपने आप में विशिष्ट है यहां प्रभु श्री आदिनाथ प्रत्येक बार फागुन सुद अष्टमी को 84 करोड़ से भी अधिक बार पधारे यहीं से कई अनंत पुण्यशाली आत्माओं को केवल ज्ञान एवं मोक्ष की प्राप्ति हुई। यह तीर्थ भूमि इतनी पावन है कि यहाँ किये गये उपवास व नियम आदि का लाभ अन्य स्थानों की तुलना में सौ गुना मिलता है।'सिद्ध गिरी ना देखवा नो भाव जाग्यो रे' की मधुर धुन पर सभी मस्त हो झूमने लगे। उसके पश्चात् भाई संजय मारू ने माता-पिता के महत्व को बताते हुए उनके द्वारा हमारे लिये जो त्याग किया गया उसको बड़े ही मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया। आपने बताया कि किस प्रकार माता-पिता अपनी स्वयं की चिंता किये बिना अपनी संतानों पर सब कुछ न्यौछावर कर देते हैं। जब हम छोटे एवं नासमझ थे तब हमारी कितनी ही गलतियों को आसानी से भुला देते हैं। प्रत्येक छोटी-बड़ी तकलीफ में हमें वे ही याद आते हैं। संजय भाई ने अपनी करुणामयी वाणी से ऐसा सजीव चित्रण किया कि सभी भाव-विभोर हो गए। सभी बच्चों की आँखों से अश्रु धारा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। सभी जीवन में की गई गलतियों को याद कर प्रभु से यही भावना कर रहे थे कि इन आंसुओं के साथ हमारे अंतर्मन के सभी दोष मिट जाएँ। नित्य प्रभु का नाना प्रकार की औषधियों एवं द्रव्यों से अभिषेक कर आत्मशुद्धि की भावना रखने वाले सभी शिविरार्थियों की निरंतर बहती अश्रु धारा से ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानों इन आंसुओं की धारा में उनके सभी दुर्गुण, बहकर अंतर्मन से निर्मल हो गए हो। चारों ओर नम माहौल, जिसे देखों उसकी आँखों में आंसुओं की धारा बह रही थी। उपस्थित महानुभव एवं साध्वी वृंदों की आँखें भी यह दृश्य देखकर नम हो गईं। 'मैय्या तेरे कर्ज को चुकाना है' जैसे माँ-पिता को समर्पित करुणामयी गीतों के साथ सभी ने माता-पिता की सेवा का संकल्प लेते हुए उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट न देने का निश्चय किया। साथ ही सभी

बच्चों ने भावपूर्वक अपने-अपने माता-पिता को पोस्टकार्ड द्वारा पत्र लिखकर अपने मन के उद्‌गारों को व्यक्त किया । इसी क्रम में कई बच्चों ने मंच पर आकर माता-पिता की महानता को अपने जीवन में किए गए अनुभवों के आधार पर बताया एवं जीवन में की गई गलतियों को स्वीकारते हुए भविष्य में, वो गलतियाँ न करने का संकल्प लिया ।

शाम की नवकारसी एवं सामूहिक प्रतिक्रमण के पश्चात् सभी शिविरार्थियों ने श्री जयंतसेन म्युजियम में दर्शन किये एवं एडवरटाइजमेंट प्रतियोगिता के माध्यम से अपनी विशिष्टता का प्रदर्शन करते हुए अलग-अलग उत्पादों आदि की जानकारी दी ।

आज दिन में लेटगांव, कड़ोद, कुक्षी, भीनमाल, अहमदाबाद आदि नगरों के श्रीसंघ पू. गुरुदेव के दर्शन वंदन हेतु पधारे एवं गुरुदेव से आशीर्वाद लिया ।

## सप्तम् दिवस - 16 जून 2016

# हुआ भव्य समापन समारोह

नित्य ज्ञान का अमृतपान करते हुए पूज्य गुरु भगवंतों की निश्रा में एक-एक कर दिन कटते गए और आखिरकार ज्ञानायतन-5 का सातवां दिवस सभी की विदाई का संदेश लेकर आया । प्रतिदिन आचार्य श्री एवं मुनि भगवंतों की वाणी का श्रवण कर, स्वयं के भीतर ज्ञान एवं संस्कारों के प्रकाश से आत्म साक्षात्कार कर सभी कंचन स्वरूप को प्राप्त कर निर्मल हो गए । प्रतिदिन अनुसार सभी प्रातः प्रतिक्रमण कर वाचना सत्र में एकत्र हुए जहाँ मुनि भगवंतों ने सभी को सामुहिक योग कराकर तंदरुस्ती का अनुभव कराया । 24 तीर्थंकरों के नामों को सस्वर क्रमवार याद कराया एवं प्रथम दिन से लगाकर अभी तक सिखाई गई सभी शिक्षाप्रद बातों को दोहराया । सभी शिविरार्थियों ने सिखाई गई सभी बातों को जीवन पर्यन्त याद रखने एवं नित्य जीवन में उनका आचरण करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर अनेक शिविरार्थियों को विशेष उपलब्धता के आधार पर पुरस्कार दिये गये । पश्चात् सभी ने सामुहिक देव वंदन एवं गुरुवंदन किया ।

प्रातः की नवकारसी के पश्चात् सभी शिविरार्थी धीरे-धीरे श्री जयंतसेन प्रवचन हॉल में एकत्र हो रहे थे । आज अंतिम वाचना सत्र में 'शासन स्पर्शना' का कार्यक्रम रखा गया । प्रवचन हॉल में म्युजियम के कार्यकर्ता एवं परिषद के सदस्यगण भी समापन समारोह के कार्यक्रम की रूपरेखा बनाते हुए व्यवस्थाओं में अपना योगदान दे रहे थे । सभी अभिभावकगण भी दूर-दराज से अपने बच्चों को लेने के लिए समापन समारोह में उपस्थित थे ।

पूज्य गच्छाधिपति, श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा., वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. एवं समस्त साधु भगवंतों के साथ पधारते हैं। गुरुदेव के पधारते ही चारों ओर 'राष्ट्रसंत की

जय-जयकार' एवं 'गुरुजी हमारो अन्तर्नाद हमने आपो आशीर्वाद के नारों से पूरा प्रांगण गूंज उठा । अ.भा. श्री त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल ने सविधि सभी को सामुहिक गुरुवंदन कराया। पूज्य गुरुदेव की मांगलिक श्रवण कर कार्यक्रम को गति प्रदान की गई । लाभार्थी परिवार के श्री मुन्नाभाई एवं समाज के वरिष्ठजनों एवं पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया ।

मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने फरमाया कि अब तक हुए पांचों ज्ञानायतन में यह ज्ञानायतन अपने आप में सर्वश्रेष्ठ रहा इसमें सर्वाधिक तपस्याएँ हुई एवं अधिक से अधिक बच्चों ने जीवन में अनेक नियम लिए । सभी शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए मुनिश्री ने फरमाया कि आपको यहाँ से दिए गए पुरस्कार एवं प्रत्येक वस्तु ज्ञानायतन की याद दिलाएगा । ज्ञानायतन में पूज्य गुरुदेव द्वारा दिए गए शिक्षाप्रद आशीर्वचनों, यहाँ हुए अनेक आयोजनों एवं धार्मिक अनुष्ठानों से आपको जीवन में सद्मार्ग पर अग्रसर होने की जो प्रेरणा मिली है उसे जीवनभर उनका आचरण करेंगे । पूज्य गुरु भगवंतों के प्रति सदैव समर्पण का भाव रखेंगे । जिन्होंने जीवन पर्यन्त कठिन साधना कर सबको जगाया एवं हमें इस संसार चक्र की मोहमाया से ऊपर उठाया । घर लौटकर आपके सामने कई प्रलोभन आएंगे तब साधु-साध्वी भगवंतों को याद करना जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन जिनशासन को समर्पित किया है । परमात्मा का यह शासन हमें प्राप्त न होता तो हम न जाने कहां भटक रहे होते न जाने हमारी क्या दुर्गुति हो रही होती ऐसे जिन शासन के प्रति हमेशा उदार भाव रखें ।

मुनिराजश्री जिनागमरत्नविजयजी ने परम गुरु भक्त श्री किशोरजी खिमावत द्वारा किये गये शासन प्रभावना के कार्यों का उल्लेख करते हुए गुरुदेव के प्रति उनके समर्पण भाव एवं अटूट श्रद्धा के बारे में बताया । 'केशरियों रंग जिन शासन नो आप जो' की मधुर सुरावलियों के साथ जिन शासन में हुए अनेक शूरवीरों का उल्लेख किया एवं उनके द्वारा किये गए त्याग एवं समर्पण के कार्यों से अवगत कराया । आपने फरमाया कि पूज्य गुरुदेव की निश्रा में हमें प्रभु की आराधना करने का जो परम सौभाग्य मिला है यह हमारे पुण्य कर्मों का ही उदय है अतः हमें निरंतर प्रभु भक्ति के किसी भी अवसर को नहीं छोड़ना चाहिए । जिससे प्रभु एवं गुरु कृपा से हम इस संसार से मुक्ति पा जाएं ।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सरदारपुर क्षेत्र के विधायक श्री वैलसिंह भूरिया एवं एस.डी.एम. श्री अभयसिंहजी ओहरिया पधारे एवं गुरुदेव से वासक्षेप लेकर आशीर्वाद लिया । म्युजियम ट्रस्ट मण्डल द्वारा अतिथियों का शाल,श्रीफल, तिलक व माला से सम्मान किया गया ।

श्री सुरेशजी तांतेड़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि सात दिवस तक पूज्य गुरुदेव की निश्रा में सभी ने जो ज्ञान अर्जन किया है उसे

जीवन में उतारकर सभी शिविरार्थी संघ, समाज व देश का नाम रोशन करेंगे । सभी शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यहाँ प्राप्त ज्ञान को अपने जीवन में सार्थक करें एवं इसे और आगे बढ़ाएँ एवं हमेशा ऐसे अवसरों के प्रति उत्साहित रहे । पूज्य गुरुदेव के वासक्षेप की महिमा बताते हुए उसके प्रभाव एवं महत्व को भी बताया।

विधायक श्री वैलसिंह ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि आज हमारे लिए बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि पू. गुरुदेव अनेक प्रांतों में विहार कर यहाँ पधारे एवं पावन निश्रा प्रदान की । मैं आज जो कुछ भी हूँ इन्हीं की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से हूँ । ऐसे महात्मा पुरुषों से ही यह धरती महान बनती है । इनका आशीर्वाद जिसे मिल जाए उनका उद्धार निश्चित है । गुरुदेव अपनी कृपा इस क्षेत्र की जनता पर सदैव बनाए रखें।

एस.डी.एम. श्री ओहरियाजी ने सभी शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए गुरुदेव द्वारा दिखाए गए मार्ग पर आगे बढ़ने एवं नैतिकता पूर्वक जीवन जीते हुए देश एवं समाज की प्रगति में सच्ची निष्ठा से कार्य करने की प्रेरणा दी ।

इस दौरान अनेक शिविरार्थियों ने ज्ञानायतन में हुए अनुभवों का स्मरण करते हुए पूज्य गुरुदेव एवं सभी मुनि भगवंतों के प्रति अपने श्रद्धाभाव प्रकट किए । इंदौर के गर्वित जैन ने कविता की पंक्तियों के माध्यम से भाव प्रकट करते हुए सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया जिसकी सबने बहुत अनुमोदना की।

पूज्य गुरुदेव ने अपने आशीर्वचन में फरमाया कि ज्ञानायतन में आकर सभी बच्चों ने ज्ञान, ध्यान एवं तप के माध्यम से अपने जीवन को सार्थक दिशा की ओर अग्रसर किया । ये अपने आप में परिपूर्ण है किन्तु इन्हें तैयार करने की आवश्यकता है। यही विद्यार्थी आगे चलकर भविष्य में एक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली संघ एवं समाज का निर्माण करेंगे । सभी अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए पू. गुरुदेव ने फरमाया कि यह आपको सोचना है कि आप अपने बच्चों में किस प्रकार के संस्कार डालना चाहते हैं जिससे वे अपने जीवन में धर्ममयी जीवन जीते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहें। मैं जब ज्ञानायतन के विद्यार्थियों को देखता हूँ तो मन में बड़ी प्रसन्नता होती है कि इन्हीं सब में से कोई आगे चलकर समाज में उत्कृष्ट कार्य कर संघ एवं शासन की शान बढ़ाऐंगे तो कोई दीक्षा अंगीकार कर गुरु गच्छ परम्परा को आगे बढ़ाकर धर्म की प्रभावना करेंगे । अतः सभी माता-पिता का यह दायित्व है कि वे अपने बच्चों को ज्ञान अर्जन के लिये ज्ञानायतन जैसे आयोजनों में भेजें एवं उनके सुदृढ़ भविष्य की नींव रखें । पूज्य आचार्यश्री ने ज्ञानायतन के शिविरार्थियों एवं कार्यकर्त्ताओं की अनुमोदना करते हुए उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया एवं ज्ञानायतन में सीखे गए ज्ञान को साकार रूप देकर सभी के कल्याण की भावना से जीवनयापन की प्रेरणा दी एवं इसी प्रकार प्रत्येक ज्ञानायतन में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया

लाभार्थी परिवार की अनुमोदना करते हुए संघ, शासन एवं गुरु के प्रति उनकी निष्ठा एवं त्याग भावना को बताया।

कार्यक्रम के दौरान म्युजियम ट्रस्ट मण्डल एवं अ.भा. श्री नवयुवक परिषद द्वारा अभिनंदन-पत्र भेंटकर लाभार्थी परिवार की अनुमोदना की एवं तिलक, माला, श्रीफल आदि से बहुमान किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में म्युजियम ट्रस्ट मण्डल अध्यक्ष श्री मिलापचन्दजी चौधरी, अ.भा. नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशजी धाडीवाल, अ.भा. नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, श्रीसंघ के म.प्र. के अध्यक्ष श्री सुरेशजी तांतेड़, तरुण परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मोहितजी तांतेड़, मुख्य अतिथि सरदारपुर विधायक श्री वैलसिंहजी भूरिया, सरदारपुर एस.डी.एम. श्री अभयसिंहजी ओहरिया, श्री मनोहरलालजी पुराणिक, श्री रमेशजी वोहरा, श्री सुरेन्द्रजी जैन, श्री राजेन्द्रजी दंगवाड़ा, श्री चिरागजी भंसाली, श्री दिनेशजी मामा, श्री मुकेशजी जैन, लाभार्थी परिवार एवं सभी बच्चों के माता-पिता व अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

आभार ट्रस्ट मण्डल ने माना एवं संचालन श्री प्रकाशजी तलेसरा (पारा) ने किया।

दोपहर की नवकारसी के पश्चात् सभी पुनः कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे। जहां सभी शिविरार्थियों को पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह में ज्ञानायतन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को उत्कृष्ट उपहार देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अभिभावकों ने भी अपने बच्चों में हुए सुधार एवं गुणों को देखकर अपने भाव व्यक्त किए।

सर्वाधिक उपस्थिति हेतु झाबुआ नगर को संयुक्त उपहार दिया गया एवं ज्ञानायतन के सबसे बुद्धिमान छात्र के रूप में रतलाम के सार्थक कास्तिया को पुरस्कार दिया गया। पांच उत्कृष्ट पुरस्कारों में मोमेंटो द्वारा प्रथम, धवल नाहटा (पारा), द्वितीय नमन वोरा (अहमदाबाद), तृतीय दिव्यांशु डांगी (निम्बाहेड़ा), चतुर्थ आदित्य धोका (धार) एवं पंचम मोहित झावर (जावरा) को सम्मानित किया गया एवं सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार में राजगढ़ के अक्षत जैन को केशियों भेंटकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन नियम लेने वाले, अनुशासन में रहने वाले एवं धार्मिक क्रियाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन वाले विद्यार्थियों को भी अनेक पुरस्कार दिए गए। ज्ञानायतन के सभी शिविरार्थियों को चांदी का सिक्का, एक कॉलेज बेग एवं 300 रु. के लिफाफे से सम्मानित किया गया एवं पूज्य गुरुदेव का वासक्षेप आशीर्वाद स्वरूप प्रदान किया गया। सात दिवस तक ज्ञान आराधना का ज्ञानायतन सभी के दिलों में एक अलग ही उत्कृष्ट छवि बना गया।

पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त कर सभी ने अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया।

# इस वर्ष सम्पन्न चार ज्ञानायतनों के विशेष विवरण

## ज्ञानायतन -1
## पूना

प्रथम सात दिवसीय ज्ञानायतन पूना (महाराष्ट्र) में प्रारंभ हुआ जिसमें 108 शिविरार्थियों ने भाग लिया । इस ज्ञानायतन में भाग लेने वाले शिविरार्थी उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त एवं विभिन्न विषयों पर उत्कृष्ठ योग्यता रखने वाले थे । जो नित्य पूज्य गुरुदेव एवं मुनिभगवंतों की निश्रा में 'वाद-विवाद' एवं तार्किक शोध के माध्यम से धर्म का वास्तविक अर्थ समझते थे । पूज्य गुरुदेव एवं साधु भगवंतों द्वारा सिखाए गए ज्ञान को गहन चिंतन के द्वारा जीवन में उतारते । इस ज्ञानायतन के प्रभाव से ठीक 23 दिनों के बाद करण वसंत भाई वोहरा वर्तमान में मुनिश्री पवित्ररत्नविजयजी म. ने संयम जीवन अंगीकार कर लिया । इस ज्ञानायतन में 56 बच्चों ने आजीवन रात्रि भोजन त्याग और समस्त 108 बच्चों ने जैन धर्म आचरण करते हुए जीवन जीने एवं अन्य कई नियम लिए । ज्ञानायतन के विशिष्ट आयोजन को देखने के लिये हैदराबाद, चैन्नई आदि स्थानों के विशेष अतिथि भी पधारे एवं ज्ञानायतन की अनुमोदना की । इसी ज्ञानायतन के माध्यम से हर्षित दिनेश भाई दोशी के भी दीक्षा भाव जागृत हुए जो जल्द ही गुरुदेव से संयम जीवन ग्रहण करेंगे ।

ज्ञानायतन-1 में प्रथम स्थान पर रहे बीजापुर निवासी रोहनकुमार रमेश भाई संघवी ने आजीवन रात्रि भोजन एवं प्रभु पूजा के नियम लिये । दूसरे स्थान पर रहे अहमदाबाद निवासी हर्षिल कुमार दिनेश भाई दोशी ने अपना सम्पूर्ण जीवन गुरुदेव को समर्पित किया । तृतीय स्थान पर रहे जावरा निवासी अभिनन्दन कुमार दसेड़ा ने अपने जीवन को परिवर्तित कर अनेक नियम लिये । ज्ञानायतन के अन्त में सभी शिविरार्थियों को अष्टप्रकारी पूजा की किट एवं 500 रु. की प्रभावना भेंट कर बहुमान किया गया ।

## ज्ञानायतन -2
## सूरत

प्रथम ज्ञानायतन की सफलता के पश्चात् दूसरा ज्ञानायतन सूरत में हुआ जिसमें 348 सदस्यों ने भाग लिया । इस ज्ञानायतन हेतु सूरत संघ ने विशेष रूप से 10 मंजिला इमारत किराए से ली थी एवं यह आयोजन कराया । इस ज्ञानायतन में

भोजन की जयणा एवं शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया गया । ज्ञानायतन के लाभार्थी परिवारों की ओर से सभी शिविरार्थियों के लिये सर्वप्रथम ज्ञानायतन मॉल (बाजार) प्रारंभ किया गया एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले शिविरार्थियों को ईनाम देकर प्रोत्साहन दिया गया । इस ज्ञानायतन के माध्यम से भाग लेने वाले सभी शिविरार्थियों ने अपने जीवन को परिवर्तित कर सही दिशा की ओर अग्रसर किया एवं कई शिविरार्थियों के दीक्षा भाव जाग्रत हुए । जिसमें संयम अरविंदभाई सेठ और वर्षिल प्रकाश भाई कोरड़िया के माता-पिता द्वारा उन्हें गुरु चरणों में समर्पित किया गया ।

इस ज्ञानायतन में प्रथम वर्षिल प्रकाश भाई कोरडिया सूरत, द्वितीय जय संजयजी डांगी, तृतीय कविश नवीन भाई बल्लू (मुंबई) चतुर्थ कल्पकथन आकाश कुमार दोषी (अहमदाबाद) एवं पंचम पुरस्कार जैनम जीगरभाई शाह (डीसा) को मिला एवं सभी शिविरार्थियों को श्रीसंघ व परिषद द्वारा सामायिक की जोड़, ट्राली बेग एवं 300 रु. की प्रभावना आदि भेंट कर बहुमान किया गया ।

इस ज्ञानायतन में सूरत श्रीसंघ अध्यक्ष श्री नितिन भाई अदानी, परिषद अध्यक्ष श्री अतुल भाई अदाणी, शिक्षामंत्री श्री रमेशभाई अनोखी, रितेषभाई पंडितजी एवं समस्त तरुण परिषद सूरत का विशेष सहयोग रहा ।

## ज्ञानायतन -3
## छत्राल

ज्ञानायतन-3 का आयोजन श्री नवकार तीर्थ छत्राल की पुण्य भूमि पर हुआ । पांच दिवसीय इस ज्ञानायतन में 169 बच्चों ने भाग लिया । स्कूल, कॉलेजों में पढ़ाई निरंतर होने के बावजूद भी पिछले ज्ञानायतन की सफलता एवं पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा से ज्ञानायतन परिवार की आशा से भी अधिक शिविरार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया ।

छत्राल की पावन भूमि पर आयोजित ज्ञानायतन -3 में संयम संवेदना का विशेष प्रभाव रहा । इस संयम संवेदना से ही प्रभावित होकर अनेक शिविरार्थियों के दीक्षा भाव जागृत हुए । शिविर के दौरान ऋषभ संजयभाई अदाणी, ऋत्विक संजय भाई अदाणी व जैनिश विपिन भाई वोहरा ने दीक्षा अंगीकार करने के भाव प्रकट किए । तो नमन वसंत भाई वोहरा ने संयम संवेदन के दिन ही पू. गुरुदेव के समक्ष संयम दान देने की विनंती की ।

इस ज्ञानायतन में अ.भा. त्रिस्तुतिक

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई सोहरा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ । तरुण परिषद मोटेरा शाखा एवं अहमदाबाद शाखा ने भी भाई पक्षाल कोरड़िया के साथ सराहनीय सहयोग प्रदान किया ।

इस ज्ञानायतन में प्रथम पुरस्कार यश नरेश भाई सेठ (डीसा), द्वितीय पुरस्कार देवांश अनिलभाई देसाई (अहमदाबाद) एवं तृतीय पुरस्कार प्रीत अल्पेश भाई सेठ (सूरत) ने प्राप्त किया । जिनका मोमेंटो द्वारा बहुमान किया गया । ज्ञानायतन-3 के आयोजन का लाभ नैनावा निवासी श्री नथमलजी दलीचंदजी कटारिया संघवी परिवार ने लिया ।

अन्त में सभी शिविरार्थियों को ज्ञानायतन की घड़ी, कॉलेज बेग, पानी की बॉटल एवं 200 रु. की प्रभावना भेंट स्वरूप प्रदान की गई ।

## ज्ञानायतन -4
## भीनमाल

भीनमाल में 400 शिविरार्थियों के साथ ज्ञानायतन-4 का आयोजन अपने आप में नई ऊँचाईयाँ छू रहा था । क्योंकि $48^0$ की भीषण गर्मी में भी देश के छोटे-बड़े शहरों से अनेक शिविरार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया इस ज्ञानायतन में शासन स्पर्शना, संयम संवेदना गुरुवंदना, मातृ-पितृ वंदनावली आदि विशेष आयोजन हुए। बच्चों ने आठ कर्मों के गहन स्वरूप को समझा ।

जिससे प्रभावित होकर संयम हंसमुखभाई मोरखिया, विश्व अश्विनभाई कोरड़िया आदि के दीक्षा भाव जागृत हुए । ज्ञानायतन के दौरान श्री केतनभाई देड़िया एवं श्री नरेन्द्र मोदी की धर्मपत्नि यशोदा देवी ने विशेष रूप से पधार कर पूज्य गुरुदेव के दर्शन-वंदन कर धर्म चर्चा की एवं ज्ञानायतन की सराहना की ।

इस ज्ञानायतन में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार के रूप में झाबुआ ग्रुप के चयन संघवी को साइकल भेंट कर सम्मान किया गया । प्रथम पुरस्कार प्रीत एवं पर्व डोसी (डीसा), द्वितीय पुरस्कार आदिश एवं हर्ष सुराणा (खाचरौद), तृतीय पुरस्कार अक्षय वागरेचा (बीजापुर) तथा चतुर्थ पुरस्कार सुमित जिगर भाई देसाई ने प्राप्त किया। पंचम -निम्बाहेड़ा ग्रुप सभी शिविरार्थियों को पूजा की जोड़, टिफिन बॉक्स एवं 500 रु. व अनेक ईनाम प्रभावना स्वरूप भेंट किये गये । इस ज्ञानायतन का सम्पूर्ण लाभ 72 जिनालय निर्माता श्री रमेशजी लुक्कड़ परिवार द्वारा लिया गया ।

# मधुकर संस्कार ज्ञानायतन की विशेषताएँ

1. ज्ञानायतन का संचालन ज्ञानायतन के सदस्य स्वयं करते हैं।
2. ज्ञानायतन के अन्दर आधुनिक युग में ज्ञान के साथ संस्कार कैसे दिये जाएँ उसका विशेष ध्यान रखा जाता है।
3. ज्ञानायतन में भोजन ज्ञानायतन के सदस्यों द्वारा ही जयणा, शुद्धि का विशेष ध्यान रखकर कार्यकर्त्ताओं की देखरेख में ही तैयार किया जाता है।
4. ज्ञानायतन के भोजन में बच्चों के लिये पौष्टिक एवं स्वास्थ्यप्रद मीनु पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
5. ज्ञानायतन के अन्दर M.S.G. मोबाइल बैंक, M.S.G. मनी बैंक, M.S.G. बाजार, M.S.G. सजेशन कार्यालय, M.S.G. पूछताछ कार्यालय, M.S.G. रजिस्ट्रेशन कार्यालय, M.S.G. ऑडिटोरियम, M.S.G. फोटोग्राफी, M.S.G. बुक स्टॉल, M.S.G. पब्लिसिटी की विशेष सुविधा रहती है एवं उसके लिए अलग-अलग कार्यालय बनाए जाते है। जिसमें सभी जगह ज्ञानायतन के सदस्य ही संचालन करते हैं।
6. ज्ञानायतन में प्रतिदिन बच्चों की स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिये परीक्षाएँ व उनमें छिपी कला को निखारने के लिये अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।
7. सुपात्र दानम् के माध्यम से साधु-साध्वी भगवंतों को किस प्रकार वोहराया जाता है उसकी क्रिया विधि सिखाई जाती है। जिससे वे निर्दोष गोचरी वोहरा सकें।
8. ज्ञानायतन में बच्चों को दिये जाने वाले पुरस्कारों में विशेष ध्यान रखा जाता है उन्हें ऐसे ही पुरस्कार दिए जाते हैं जिनसे उनका अधिक से अधिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास हो।
9. ज्ञानायतन बुक स्टॉल में बच्चों के लिये कई धार्मिक किताबें रखी जाती हैं जिसे बच्चों को निःशुल्क वितरित की जाती है।
10. ज्ञानायतन की पत्रिका, बेनर्स, आई कार्ड, नोटबुक आदि की प्रिंटिंग इस प्रकार से ही कि जाती है जिससे बच्चों को किसी न किसी प्रकार की प्रेरणा मिले।
11. ज्ञानायतन में सभी बच्चों के साथ समान व्यवहार किया जाता है। सभी बच्चों को एक जैसे वस्त्र ज्ञानायतन परिवार द्वारा भेंट किये जाते हैं। जिससे सभी बच्चे समान रूप से दिखते हैं।

12. ज्ञानायतन का एक भी सदस्य कभी स्वयं का बहुमान नहीं करवाता है अगर कोई अनुमोदना करते हैं तो वे संघ के प्रति समर्पणता के भाव रखकर उसे जिन शासन की सेवा में समर्पित कर देते हैं।
13. ज्ञानायतन के सभी सदस्यों को अगले ज्ञानायतन की पत्रिका वितरित की जाती है तो प्रत्येक दो या तीन महिने में उनको हित की शिक्षा का पत्र भी भेजा जाता है।
14. ज्ञानायतन में बच्चों को पत्र-लिखना एवं पत्र व्यवहार की कला सिखाई जाती है जिससे वे भविष्य में किसी के साथ कैसे पत्र व्यवहार किया जाए सीखते हैं।
15. ज्ञानायतन में बच्चों द्वारा नियमों के जो कार्ड भरे जाते हैं वे उनके माता-पिता को भेजे जाते हैं ताकि वे भी नियम पालन में उनका ध्यान रख सकें।
16. ज्ञानायतन में 40 कार्यकर्ताओं की एक टीम बनाई गई है जो अलग-अलग कार्य संभालती है जिसमें बच्चों को प्रातः जगाना, ऑफिस संभालना, भोजन व्यवस्था देखना, अनुशासन नियंत्रण करना, अभिषेक महोत्सव करवाना, व्याख्यान हाल सजाना एवं बच्चों की किसी भी प्रकार की समस्याओं का निदान करना आदि कार्य किये जाते हैं। ये 40 कार्यकर्ता प्रत्येक ज्ञानायतन में भाग लेते हैं।
17. ज्ञानायतन में नित्य पूज्य गुरुदेव एवं साधु भगवंतों की दिव्य वाणी का अमृतपान कराया जाता है तो नित्य वाचना के माध्यम से धार्मिक शिक्षा एवं धर्ममय जीवन जीने की कला सिखाई जाती है।
18. अभी तक ज्ञानायतन 1 से लेकर 5 तक में 1400 बच्चों ने भाग लिया है जिसमें से लगभग 50 बच्चे ऐसे भी हैं जिन्होंने ज्ञानायतन 1 से 5 तक सभी में भाग लिया।
19. ज्ञानायतन में विशिष्ट रूप से बच्चों के मानस पटल पर गहरा एवं पवित्र प्रभाव पड़े ऐसे स्तवनों का चयन किया जाता है इस हेतु ज्ञानायतन परिवार द्वारा नए भक्ति गीतों की रचना भी की गई।
20. ज्ञानायतन में ऐसी प्रतियोगिताएँ कराई जाती हैं जिससे बच्चों का साहस, आत्मविश्वास एवं समाज में बोलने एवं मंच पर प्रदर्शन करने की कला का विकास होता है।
21. ज्ञानायतन में आज की युवा पीढ़ी से संबंधित एवं मानसिकता के आधार पर धर्म क्रिया कराई जाती है। जिससे वे ज्ञान को सीखने में अधिक से अधिक रुचि लें।
22. ज्ञानायतन के सभी सदस्य बिना किसी पद के एवं बिना किसी नाम के निःस्वार्थ भावना से, समर्पण भाव से

कार्य करते हैं।

23. उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं सम्पूर्ण नियम का पालन करने वाले विद्यार्थियों को एम.एस.जी. क्वाईन प्रदान किया जाता था। जिससे वह अंतिम दो दिनों में एम.एस.जी बाजार से अपनी इच्छानुसार आवश्यक सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

## ज्ञानायतन के कार्यकर्ताओं की विशेषताएँ

ज्ञानायतन के कार्यकर्ताओं की विशेषताएँ

1. ज्ञानायतन के कई कार्यकर्ताओं ने अपने जीवन में कभी भी रात्रि भोजन नहीं किया एवं पूर्णतः श्रावक जीवन का पालन कर रहे हैं।
2. कई कार्यकर्ता हजारों कि.मी. दूर से आकर शासन प्रभावना के इस महायज्ञ में अपना सम्पूर्ण योगदान दे रहे हैं।
3. कई कार्यकर्ता अपना व्यवसाय, नौकरी एवं अध्ययन छोड़कर समर्पण भाव से ज्ञानायतन एवं पूरी निष्ठाभाव से एक सप्ताह पूर्व ही कार्यक्रम स्थल पर पहुंच कर तैयारियों में जुट जाते हैं।
4. 12 से 25 वर्ष के कई कार्यकर्ता ऐसे भी हैं जो किसी भी प्रकार की प्रभावना, ईनाम आदि के हकदार होते हुए भी कुछ भी ग्रहण नहीं करते हैं।
5. ज्ञानायतन के कार्यकर्ता कोई खास व्यवस्था मांगने के बजाय पर्याप्त सुविधाओं में ही अपनी सेवाएँ प्रदान करने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।
6. ज्ञानायतन के सभी कार्यकर्ता सभी बच्चों के भोजन के बाद ही भोजन करते हैं एवं स्वयं का कार्य स्वयं करते हैं।
7. ज्ञानायतन के कई कार्यकर्ता अभिषेक की तैयारी, पेपर मूल्यांकन आदि समय की सीमा में पूर्ण करते हैं। चाहे इसके लिए उन्हें अतिरिक्त परिश्रम क्यों नहीं करना पड़े।
8. ज्ञानायतन के कार्यकर्ता जिनकी उम्र 25 वर्ष से कम होने के बावजूद धन का व्यय भी करते हैं। यह व्यय वे अपनी पॉकेट मनी से ही करते है।
9. ज्ञानायतन के कई सदस्यों की यह भावना है कि स्वयं की पूंजी से ज्ञानायतन करवाएँ। इसका संकल्प लिया है। सभी कार्यकर्ता का नियम है कि किसी भी कार्यक्रम में किसी प्रकार का बहुमान न करवाना।
10. सभी कार्यकर्ता किसी भी प्रकार के छोटे से लगाकर बड़े कार्य को करने

# अभिवन्दना ! अभिवन्दना !!

आज प्रफुलित है देखो, जन-मन सारा ।
आज चमक उठी झाबुआ नगरी का सौभाग्य सितारा ।
आपके चरण-कमल से पावन धूलि भी बन गई चंदन ।
श्रृद्धा की पंखुड़ियों से गुरूवर स्वागत है आपका ।।
धर्मानुरागी माँ पार्वती के नन्दन, शत्-शत् स्वीकारो वन्दन ।
श्रेष्ठीवर पिता स्वरूपचन्द के लाल, चमके जिनशासन भाल ।
शशी से सौम्य प्रसन्नवदनी, बन सुधाकर उतरें पूनचन्द ।
धन्य थराद-वीरभूमि-रत्न ! स्वस्थ 'शतायुभव' जयन्तसेन ।

**हे विराट् व्यक्तित्व के धनी राष्ट्रसंत :-**

शांत, धीर, गंभीर, आत्मगवेषक, करूणासागर हो आप ।
सम्यक्त्व की मूरत, प्रेरणादीप, संयम सुमेरू हो आप ।
विश्व-वन्ध्य राजेन्द्र के प्राण, गुरू यतीन्द्र की पहचान है आप ।
रोम-रोम में समाया महामंत्र नवकार, कर्मठ साधक है आप ।
लेखक, वक्ता, कवि, ज्ञान-पिपासु, सही में ''मधुकर'' है आप ।।
अभिनन्दन है, सधन वट वृक्ष शरणदाता-गुणरत्नाकर ।
अभिनन्दन है, शस्य श्यामला मालव-धरा पर ।
अभिनन्दन है, रत्नराज की दिव्य, समाधि-सिंह द्वार पर ।
अभिनन्दन है, रत्नों की नगरी के पावन चार्तुमास पर ।
हे गुरूवर पुष्पित, पल्लवित, सुरभित मंगलमय हो मार्ग आपका ।
हे सिद्ध-पथ साधक । समर्पित है शुभेच्छाओं का मुक्ताहार ।
इन्दु, की कोटि-कोटि अभिवन्दना हो स्वीकार ।
सदैव वरद् हस्त हो आपका, हम सब पर ।।

इंदिरा घोड़ावत, झाबुआ

# ज्ञानायतन

## छात्रों ने क्या पाया ?

**नित्यं नमामि गुरु राजेन्द्रसूरि**

**'जिस गाँव में बारिश ना हो वहाँ की फसलें खराब हो जाती हैं,**
**और जिस घर में धर्म संस्कार ना हो वहाँ की नस्लें खराब होती हैं ।।**

शायद यही विचार समर्थ गच्छाधिपति युग प्रभावक प.पू. आ.भ. श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराजा के मानस पटल पर आया होगा और उनके सद्उपदेश को आज्ञा मानकर जोधपुर निवासी सूर्यप्रकाश मिश्रीमलजी भंडारी परिवार ने इस सुंदरतम ज्ञानायतन का लाभार्थी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया । गुरुदेव श्री की पावन निश्रा में 10 जून से 16 जून तक श्री जयंतसेन म्युजियम में ज्ञानायतन का आयोजन हुआ । गुरुदेवश्री के शिष्य रत्नों ने ज्ञान की त्रिवेणी बहाई। प.पू. जिनागम विजयजी, पू. निपूणरत्नविजयजी एवं पू. प्रसिद्धरत्नविजयजी की ज्ञान की क्लास में सम्यक् ज्ञान को मजबूत किया, तो अभिषेक के द्वारा सम्यक्दर्शन को और सामायिक प्रतिक्रमण आदि के द्वारा सम्यक्चारित्र को मजबूत किया । बहुत कुछ सुंदरतम बातें जानने और समझने को मिली । जीवन परिवर्तन की अनेक बातें गुरुदेवश्री ने समझाई । काफी अच्छा, सच्चा और सुंदर ज्ञानायतन का आयोजन हुआ । इस ज्ञानायतन में मुझे जीव-अजीव का ज्ञान, भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक, चार प्रकार की बुद्धि 5 इन्द्रिय, 4 गति, देववंदन, गुरुवंदन आदि का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त हुआ । प्रारंभिक तीन दिनों में परम कृपालु परमात्मा का भव्य अभिषेक, चौथे दिन संयम संवेदन, पाँचवे दिन प्रभु आदिनाथ एवं गुरुदेव की पूजा का लाभ, छठे दिन शासन वंदना आदि आयोजनों से मन का मयूर भक्तिमय नृत्य करने लगा । पू. गुरुदेवश्री को खूब-खूब वंदना एवं लाभार्थी परिवार को धन्यवाद ।

मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आगे के ज्ञानायतन आने पर मुझे सुंदर संयोग प्रदान करें ताकि मैं आगामी ज्ञानायतन का भी लाभ ऊँठा सकूँ ।

**– गौरव श्रीश्रीमाल**
गाँव- खट्टाली, जि. अलीराजपुर

### जानकारी प्राप्त करें

**पूज्य गुरूदेवश्री के विहार तथा कार्यक्रम की जानकारी प्रतिदिन वाट्सअप तथा फेसबुक पर प्राप्त करने हेतु ब्रजेश बोहरा, श्रीसंघ व परिषद के राष्ट्रीय प्रचारक से मो.: 98272-44175 वाट्सअप पर एसएमएस कर प्राप्त करें या भेजें ।**

श्री राजेन्द्रसूरीजी म.सा. के कृपापात्र श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा आयोजित ज्ञानायतन में मुझे बहुत ही अच्छा लगा । पूज्य म.सा. ने हम सब को बहुत सारी ज्ञान की बातें बताई । मुझे एक दिन भी घर की याद नहीं आई । सभी दोस्तों का पूरा सहयोग मिला । ज्ञानांयतन में आने के बाद मैंने कई नियम भी लिये । खासतौर पर अभिषेक का कार्यक्रम मुझे बहुत अच्छा लगा । संयम संवेदना एवं मातृ-पितृ वंदना के कार्यक्रमों ने दिल छू लिया । बस मैंने विचार कर लिया हैं कि जब भी शिविर लगेगा मैं जरूर आऊँगा ।

– अविश सिरोहिया

---

सुविशाल गच्छाधिपती आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीजी म.सा. के चरणों में कोटिश वंदन । मैं अपने आप को बड़ा सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे पूज्य आचार्यश्री जैसे गुरुदेव मिले ।

गुरुदेव के मन में 'ज्ञानायतन' का विचार आया । और उन्होंने 'ज्ञानायतन' आयोजित किया । इस ज्ञानायतन में मुझे बहुत अच्छा लगा । ढ़ेर सारी ज्ञान की बातें हमने सीखी और ढेर सारा पुण्यार्जन किया । मैं हमारे भंडारी परिवार का भी बहुत आभार मानता हूँ । और मैं चाहता हूँ कि ऐसे 100 नहीं 200 नहीं 300 से भी अधिक ज्ञानायतन गुरुदेव की निश्रा में आयोजित हों । यहाँ की सुविधा बहुत ही अच्छी है। मैं हमारे ज्ञानायतन के कार्यकर्ताओं का भी बहुत आभार मानता हूँ । जिन्होंने रात भर जाग-जाग कर काम किया है एवं व्यवस्थाओं को सुचारू किया ।

मैं सबको दिल से धन्यवाद कहना चाहता हूँ !

– अवि मोदी

---

गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के द्वारा आयोजित ज्ञानायतन-5 में आकर बहुत अच्छा लगा । यहाँ मुझे बहुत सारी ज्ञान की बातें सीखने को मिली । यहाँ पर सुबह प्रतिक्रमण होता है फिर हम वाचना में जाते हैं । वहाँ जिनागमरत्न विजयजी म.सा. एवं अन्य मुनि भगवंतों ने बहुत सारी अच्छी-अच्छी ज्ञान की बातें बताई । फिर हम अभिषेक के लिये जाते हैं।

शाम को हम प्रतिक्रमण करते हैं । वहाँ भी बहुत आनंद की अनुभूति होती है तो हमें अनेक तरह के ईनाम मिलते मुनिश्रीनिपुणरत्नविजयजी म.सा. एवं मुनिश्रीजिनागमरत्नविजयजी म.सा. और मुनिश्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा. हमें बहुत सारी ज्ञान की बातें बताते हैं । मैं अगले ज्ञानायतन में जरूर आऊँगा और आगे भी ढ़ेर सारी ज्ञानकी बातें सीखकर जाऊँगा एवं उन्हें जीवन में उतारूंगा ।

धन्यवाद ।

– साहिल जैन

सबसे पहले मेरे गुरुदेव श्री जयंतसेनसुरीश्वरजी म.सा. को वंदन करूँगा । क्योंकि उनकी ही प्रेरणा से ज्ञानायतन का आयोजन हुआ । मुझे ये ज्ञानायतन बहुत अच्छा लगा । मुझे बहुत सारी ज्ञान की बातें सीखने को मिली । प्रभु भक्ति गुरुवंदना, माता-पिता को नमन आदि विषयों पर प.पू. म.सा. ने बहुत अच्छे से समझाया , मैं उनको भी वंदन करता हूँ । साथ ही इस शिविर के लाभार्थी भंडारी परिवार को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ ।

**– भावेश सिंघवी**

---

सभी को सादर जय जिनेन्द्र ! यह मेरा पहला ज्ञानायतन शिविर है । यहाँ आकर मुझे पता चला कि मैं क्या हूँ और मुझे कैसा बनना है । यह मात्र गुरुओं ने मुझे बताया, आज तक मुझे मेरे दोस्तों ने मेरी एक भी कमी नहीं बताई पर गुरु भगवंतों ने कमी को बताया और उसे दूर करने की सीख दी । पू. गुरुओं ने मुझे कई संस्कार भी दिये, आज मेरा ज्ञानायतन में 7 वां दिन है पर ऐसा लगा की अभी तो मात्र 2 दिन ही हुए और जाने की ईच्छा ही नहीं हुई, हम सब दिनभर प्रभु भक्ति में लीन रहते थे, और यह सब हमें गुरु भगवंतों ने सिखाया है, इसलिए मैं अगले ज्ञानायतन में अवश्य आऊँगा और मेरे अन्य दोस्तों को लाऊँगा । गुरुओं ने हमारा अज्ञान दूर कर, ज्ञान दिया, गुरु भगवंतों की पावन निश्रा में ही रहकर हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, मैंने यहाँ आकर अपने माता-पिता के उपकारों को समझा और गुरु भगवंतों का आदर करना सीखा और परमात्मा के प्रति प्रेम हुआ और मैं जैन होकर अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे यह शासन मिला जिसकी स्थापना हमारे परमात्मा ने की है ।

**– नितिन प्रकाश जैन, दसई**

---

सादर जय जिनेन्द्र ।

मैंने पहली बार ज्ञानायतन में भाग लिया । यहां आकर मैंने पूज्य गुरु भगवंतों से अनेक संस्कार, माता-पिता की आज्ञा का पालन, नित्य प्रभु भक्ति करना, पूज्य साधु-साध्वी भगवंतों के साथ कैसा व्यवहार करना आदि अच्छी बातें सिखी । यदि में इस ज्ञानायतन में भाग नहीं लेता तो अपने जीवन में पिछड़ जाता एवं अनेक ज्ञानावर्धक बातों से जो जीवन के लिये बहुत महत्वपूर्ण उनसे वंछित रह जाता । यहाँ ज्ञानायतन में प्रतिदिन प्रभु भक्ति में दिन कैसे गुजर जाता पता ही नहीं चलता । यहाँ का वातावरण सभी मित्रों एवं गुरुजनों से इतना स्नेह और अपनापन मिला कि यहाँ से वापस जाने की इच्छा ही नहीं हो रही है । यहाँ हमें हमारे तीर्थों के बारे में भी जानकारी मिली विशेष श्री केशरियाजी तीर्थ की दुर्दशा के बारे में ज्ञात हुआ जिससे जैन तीर्थों को बचाने के लिए समर्पण भावना एवं उनकी रक्षा करने हेतु भाव जागृह हुए । ज्ञानायतन में मेरा सम्पूर्ण जीवन परिवर्तन हो गया । अगली बार मैं अपने मित्रों को भी ज्ञानायतन में लेकर अवश्य आऊंगा । जय-जय ज्ञानायतन । जय गुरुदेव ।

**– सिद्धार्थ जैन (कुक्षी)**

1800 वर्ष प्राचीन प्रगट प्रभावी तीर्थाधिपति

**श्री महावीर स्वामी भगवान**

भारत में अद्वितीय कमलाकर **श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर**

तीर्थ प्रभावक आचार्यदेव *श्रीमद् विजय जयतसेन सूरीश्वरजी* की पाटोत्सव भूमि

कृपासिन्धु योगिराज गुरु **श्री शान्ति विजयजी** समाधि मंदिर से सुशोभित

सुस्वागतम् सुस्वागतम्

# श्री भाण्डवपुर जैन तीर्थ

**आवागमन मार्ग**

- नाकोड़ाजी से 80 कि.मी. वाया सिणदरी जीवाणा ।
- भीनमाल से 50 कि.मी. वाया दासपा पाँथेडी सियावट ।
- जालोर से 65 कि.मी. वाया सायला सियावट–मेंगलवा ।

**यात्रार्थ** पधारिये...

- जैन जैनतरों का श्रद्धा केन्द्र, प्राकृतिक सौन्दर्य शान्ति सम्पन्न विशाल मरु भू भाग पर यह तीर्थ स्थित है ।
- श्री वर्धमान राजेन्द्रसूरि जैनागम मंदिर, ५२ जिनालय का नव निर्माण तथा तीर्थ विकास जिर्णोद्धार प्रगति पर ।

संचालक एवं निवेदक :

**श्री महावीरस्वामी जैन श्वे. पेढ़ी,** श्री भाण्डवपुर तीर्थ (मेंगलवा) जिला जालोर (राज.) फोन : 02977-270033

Powerlex Luxurious Lightings

With Best Compliments from : UTTAM DAMRANI JAIN-09393101000

**Powerlex Aishlite Impex India, Hyderabad.**

AishLite Advanced Lighting Technology

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
अगस्त-2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 64 अंक 8
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

| | | |
|---|---|---|
| इस अंक का मूल्य | - | 15 रु. |
| एक वर्ष का शुल्क | - | 150 रु. |
| पांच वर्ष का शुल्क | - | 600 रु. |
| दस वर्ष का शुल्क | - | 1100 रु. |

शाश्वत धर्म संचालन समिति

| | |
|---|---|
| श्री शांतिलाल रामानी | (संयोजक) |
| श्री रमेशभाई धरू | (परिषद अध्यक्ष) |
| श्री सुरेन्द्र लोढ़ा | (सम्पादक) |
| श्री अशोक श्रीश्रीमाल | (महामंत्री) |
| श्री. ओ.सी जैन | (न्यासी) |
| श्री विनोद संघवी | (न्यासी) |

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

## रागरंग को छोड़ त्यागतप की ओर प्रवृत्त

स्थूलिभद्र रागरंग में मस्त बने हुए थे। तभी राजकर्मी उन्हें ढूंढता हुआ पहुंचा।

स्थूलिभद्र ने उपेक्षा भाव से उसे देखते हुए कहा–

'तू फिर आ गया। मेरे पिताजी को और कोई काम है या मैं ही याद आता हूँ।

'नहीं ! भद्र ! मुझे तो महाराजाधिराज ने भेजा है। आपके पिता महामंत्री शकडाल ने आत्महत्या कर ली है, महाराज ने उनकी जिम्मेदारी आपको देने का मन बनाया है, चलिये।'

स्थूलिभद्र महाराजा का नाम सुनकर एकदम तैयार हो गया। राजदरबार में पहुंचा। महाराजा नंद ने उसे बिठाया तथा शकडाल की मौत पर संवेदना जताते हुए कहा कि 'स्थूलिभद्र आपको उनकी जिम्मेदारी संभालने के लिए याद किया गया है।'

'महाराज ! मैं कुछ देर एकान्त में विचार करना चाहता हूँ।' स्थूलिभद्र ने जवाब दिया। महाराजा नंद ने उसे कुछ समय दे दिया।

स्थूलिभद्र अशोक वाटिका में एक वृक्ष के नीचे बैठा विचारों के प्रवाह में डूब गया। बचपन के आध्यात्मिक संस्कार प्रकाशमान हो उठे। उसने सोचा –

'यह महामंत्री पद, यह समृद्धि, यह वैभव, यह शक्ति, यह चकाचौंध। सब नश्वर हैं। मैं कुए से निकलकर तालाब में डूबने के लिए बैठूं। नहीं। यह नहीं होगा, मेरा जीवन इनके लिये नहीं है, मुझे तो जीवन सार्थक करना है।'

तभी मार्ग से आचार्य श्री संभूतिसूरिजी विचरण करते दिखाई दिये। स्थूलिभद्र का वैराग्य आसमान छूने लगा। स्थूलिभद्र ने वहीं दीक्षा ले ली। आत्मा के कल्याण के मार्ग पर वे आरूढ़ हो गये।

असीम भोग के व्यूह से अलभ्य तपस्या के मार्ग पर विरले ही आरूढ़ हो पाते हैं।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | रतलाम में अद्‌भुत शानदार प्रवेश | 9 |
| 2. | मारे बनवुं अणगार (मुनिराज श्री जिनागमरत्नजी म.सा.) | 27 |
| 3. | गुरु स्तवन (प्रदीप ढ़ालावत, मुंबई) | 25 |
| 4. | पाँचवा ज्ञानायतन श्री मोहनखेड़ा तीर्थ (राहुल चौधरी) | 30 |
| 5. | दुःख का मूल : मोह (2) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.) | 73 |
| 6. | गणधरवाद (लेखांक–37) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.) | 76 |
| 7. | स्वर्णप्रभा (लेखांक–37) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.) | 78 |
| 8. | प्रश्नोत्तरी (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.) | 81 |
| 9. | श्री संघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा) | 82 |
| 10. | अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू) | 83 |
| 11. | सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा) | 84 |
| 12. | तीर्थंकर श्री अजिनाथजी (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.) | 86 |
| 13. | जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.) | 88 |
| 14. | गुजराती संभाग | 90–108 |
| 15. | कुमकुम सने पगलिये | 109–117 |
| 16. | श्री संघ सौरभ | 118–121 |
| 17. | परिषद् प्रांगण से | 122–123 |
| 18. | जैन विश्व | 124 |
| 19. | श्रमण–श्रमणीवृंद (चातुर्मास सूचि 2016) | 125–128 |
| 20. | शाश्वत धर्म के संरक्षक | 129–130 |

प्रवचन

# दुःख का मूल : मोह (2)

(गतांक से आगे)

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

मरणासन्न व्यक्ति को ममता का बन्धन ही रुलाता है । वह सोचता है कि परिश्रम करके (पसीना बहाकर) मैंने जिस धन का संग्रह किया है; जो सुन्दर विशाल भवन बनवाया है; फ्रिज, टी.वी., सोफासेट, स्कूटर, कार, एअरकंडीशनर, वॉशिंग मशीन, स्मार्ट फोन (मोबाइल) आदि जिन वस्तुओं को अपने आसपास जमा किया है, वे सबके सब यहीं छूट जाने वाले हैं; जो मेरे कुटुम्बी हैं, पड़ौसी हैं, मित्र हैं, वे सब यहीं रहने वाले हैं । कैसे मैं इनका वियोग सह सकूँगा ? यही सोचकर वह दुःखी हो जाता है, शोक में डूब जाता है, इससे ठीक विपरीत यदि वह उस समय यह सोचे कि मैं इस दुनिया में अकेला आया था और अकेला ही जा रहा हूँ, मैं किसी का नहीं हूँ और मेरा कोई नहीं है; जैसे बच्चे खिलौनों को इकट्ठा करते रहते हैं, परन्तु बड़े होने पर उनका त्याग कर देते हैं और त्याग करते समय उन्हें कोई दुःख नहीं होता, ठीक उसी प्रकार जीवन-भर मैं वस्तुएँ इकट्ठी करता रहा और मृत्यु के अवसर पर अब उनका त्याग करना पड़ रहा है, तो मुझे कोई दुःख क्यों होना चाहिए! इस प्रकार ममता से ऊपर उठकर अपने मन को समझाने वाले मनीषी मृत्यु के समय बिल्कुल दुःखी नहीं होंगे।

अर्जुन के मोह को मिटाने के लिए कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था । उपदेश का प्रभाव जानने के लिए उन्होंने (श्रीकृष्णने) अर्जुन से पूछ लिया :-

**''कच्चिदज्ञानसम्मोहः, प्रणष्टस्ते धनञ्जय ?''**

हे अर्जुन! क्या इस उपदेश से तुम्हारा अज्ञान और मोह नष्ट हो गया है ? इसके उत्तर में अर्जुन ने जो उत्तर दिया, वह भी सुनने योग्य है-

**नष्टो मोह : स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाडच्युत !**

हे अच्युत (श्रीकृष्ण) आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है, कर्तव्य की स्मृति प्राप्त

हो गई है।

शत्रु वही होता है, जो हमारे कर्तव्य में बाधा डाले, मोह कर्तव्य में बाधक होने से हमारा सबसे बड़ा शत्रु है –

**नास्ति मोहसमो रिपुः ।।**

मोह के समान कोई शत्रु नहीं है । मोह का क्षय करने वाला ही मोक्ष प्राप्त करता है ।

**रागस्य दोसस्य य संखएणं, एगंतसोक्खं समुवेइइ मोक्खं।।** उत्तराध्ययन

राग (मोह) और द्वेष का क्षय करने पर जीव उस मोक्ष को प्राप्त करता है, जो एकान्त सुख से परिपूर्ण है; परन्तु इस मोह–ममता–राग का त्याग बहुत कठिन है।

किसी नगर में भक्त जीवाभाई रहते थे । प्रतिदिन वे प्रातःकाल प्रभु–स्मरण किया करते थे । स त्क्रिया का लाभ कभी–न–कभी अवश्य मिलता है, ऐसा ज्ञानी कहते हैं । जीवाभाई के लिए भाग्य से वह लाभ का अवसर आ गया ।

हुआ यों कि प्रभु–स्मरण के बाद ज्यों ही उन्होंने आँखें खोलीं, अपने सामने महर्षि नारद को देखकर उन्हें प्रणाम किया । आशीर्वाद के बाद नारद ने पूछा–'इतनी तन्मयता के साथ प्रभु–स्मरण का प्रयोजन क्या है ?''

जीवाभाई ने उत्तर दिया–'मैं वैकुण्ठ जाना चाहता हूँ । आप तो प्रतिदिन वैकुण्ठ का चक्कर लगाते हैं । कभी मुझे भी ले चलिये अपने साथ, जिससे मैं भी अपने आराध्य विष्णु के अपनी आँखों से दर्शन करके अपने जीवन को सफल बना सकूँ ।''

इस पर नारदजी ऐसा आश्वासन देकर वहाँ से चले गये कि प्रभु से अनुमति लेकर अगले चक्कर में आपकों मैं अपने साथ वैकुण्ठ ले चलूँगा ।

उधर वैकुण्ठ में पहुँचकर भगवान विष्णु से नारद जी ने जीवाभाई की तल्लीनता, भक्ति, शुभ–भावना आदि की प्रशंसा करते हुए कहा कि यदि आप अनुमति दें तो मैं अगले चक्कर में उन्हें अपने साथ यहाँ ले आऊँ ।

भगवान विष्णु ने मुस्कुराते हुए कहा– जिस आदमी की आप प्रशंसा कर रहे हैं, उसके मन–वचन में एकरूपता नहीं है; इसलिए वह आने की इच्छा ही प्रकट करेगा, आयेगा नहीं। फिर भी यदि आप उसे यहाँ लाना ही चाहते हैं तो मैं आपको लाने का प्रयास करने की अनुमति दे देता हूँ ।''

अनुमति पाकर नारद जी पुनः पृथ्वी पर आये और जहाँ जीवाभाई रहते थे, उस नगर में आकर उनसे वैकुण्ठ चलने के लिए कहा ।

नारदजी की बात सुनकर जीभ से ''नारायण–नारायण'' का उच्चारण करते हुए

प्रसन्नतापूर्वक जीवाभाई ने कहा- ''मेरी लड़की बड़ी हो रही है, उसका विवाह किसी सुयोग्य वर को ढूँढकर उससे कर देना चाहता हूँ। एक -दो वर्ष में यह कार्य निपट जायेगा, फिर चलूँगा। अभी क्षमा करें।''

नारदजी चले गये। कन्या का विवाह हो जाने के बाद पुनः आये। इस बार जीवाभाई ने कहा- ''मेरी पत्नी का कहना है कि बेटे का विवाह करने की जिम्मेदारी आप पर है। उसका विवाह हो जाए और वह आपकी दुकान संभाल ले। फिर जाने में कोई ऐतराज नहीं। उसकी बात में दम है; कन्या तो दूसरे का घर सँभालती है, परन्तु अपना घर तो बहू ही सँभालती है; इसलिए बहु घर में आ जाय तो अच्छा है। दूसरी बात दुकान सँभालने की है। बेटा दुकान सँभालने के योग्य हो जाए और दुकान सँभाल ले तो मैं इस ओर से निश्चिन्त होकर आपके साथ चल सकता हूँ। कृपया कुछ वर्ष और रुक जाइए।

नारद जी चले गए। कु छ वर्ष बाद जब उन्होंने देखा कि बेटे का विवाह हो चुका है और उसने अच्छी तरह से दुकान संभाल ली है, तब वे पुनः लौट आए और जीवाभाई से अपने साथ वैकुण्ठ चलने का अनुरोध करने लगे।

जीवाभाई ने कहा- ''बस, कुछ वर्ष और रुक जाइए। मैं अपने पौत्र का मुँह देख लूँ, फिर चलेंगे।''

कुछ वर्ष बाद नारदजी आए तो पता चला कि जीवाभाई गुजर चुके हैं। बेचारे जीवाभाई! आज का काम कल पर टालने वालों की ऐसी ही दुर्दशा होती है। सफलता उनसे कोसों दूर रहती है, इसलिए सन्त कवि सलाह देते हैं -

**काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।**
**पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब ?**

जो कार्य कल करना है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और जो कार्य दोपहर के बाद करना हो, उसे दोपहर से पहले ही कर लेना चाहिए; क्योंकि मृत्यु इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती कि अमुक व्यक्ति ने अमुक कार्य किया भी है या नहीं।

नारदजी फिर भी निराश नहीं हुए। वे जानते थे कि हवा से भरी हुई गेंद जैसे इधर-उधर भटकती रहती है, वैसे ही कर्म से भरा हुआ जीव भी संसार में भटकता रहता है, जन्म-जरा-मरण के चक्कर में पड़ा रहता है, इसलिए जीवाभाई का जीव भी अपना शरीर छोड़कर कहीं-न कहीं उत्पन्न अवश्य हुआ होगा। मैं वहीं जाकर उनकी इच्छा पूरी कर देता हूँ।

# गणधरवाद

प्रवचनकार

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

**महावीर**–यही तुम्हारी भूल है; क्योंकि मनःप्रसाद भी एक क्रिया है । इसलिए सचेतन की दूसरी क्रियाओं की तरह इसका भी फल होना चाहिये और इसका जो फल है, वह कर्म है । इस प्रकार मेरे इस कथन में किसी भी प्रकार का दोष नहीं है । सचेतन द्वारा प्रारंभ की गयी क्रिया फलवती होती है ।

**अग्निभूति**– मनःप्रसाद का भी फल कर्म है; यह आप कैसे कहते है ?

**महावीर**– क्योंकि इस कर्म का कार्य सुख–दुःख फल अनुभव में आता है ।

**अग्निभूति**–आर्य! पूर्व में तो आपने दानादि क्रिया को कर्म का कारण कहा था और अब मनःप्रसाद को कर्म का कारण कहते हैं; जिससे आपके कथन में पूर्वापर विरोध है ।

**महावीर**– ठीक है । लेकिन इसमें पूर्वापर विरोध जैसा कुछ नहीं है । क्योंकि बात यह है कि कर्म का कारण तो मनःप्रसाद ही है । परन्तु इस मनःप्रसाद का भी कारण दानादि क्रिया होने से कर्म के कारण के कारण में, कारण का उपचार करके दानादि क्रिया को कर्म के कारण रूप में कहा है । जिससे पूर्वापर विरोध का परिहार हो जाता है ।

**अग्निभूति**– इन सब झंझटों में न पड़कर यदि सरलता से विचार किया जाये; तो यह स्पष्ट है कि मनुष्य को मानसिक प्रसन्नता होती है यानि उसका हृदय उल्लास से परिपूर्ण हो जब, तभी वह दानादि करता है और दानादि करने पर उसे पुनः प्रसाद मिलता है, जिससे पुनः वह दानादि करता है । इस प्रकार मनःप्रसाद का फल दानादि और उसका भी फल दान आदि है । अतः आप जो मनःप्रसाद का अदृष्ट फल कर्म बताते हैं, उसके बदले इष्ट फल दानादि ही मानना चाहिए ।

**महावीर**– यदि हम कार्य कारण की परंपरा के मूल में देखें तो स्पष्ट हो जायेगा कि मनःप्रसाद रूप क्रिया की दानादि क्रिया कारण है । इस कारण

दानादि क्रिया मनःप्रसाद का कार्यफल नहीं बन सकती । जैसे कि मृत्पिंड घड़े का कारण होने से वह घड़े का तो फल-कार्य नहीं बनता। अर्थात घड़े से पिंड उत्पन्न नहीं होता है, वैसे ही सुपात्र को दान देने से मनःप्रसाद तो उत्पन्न हुआ किन्तु उस मनःप्रसाद से दान उत्पन्न हुआ है, ऐसा नहीं कहा जा सकता । क्योंकि जो जिसका कारण हो, वही उसका फल-कार्य है, यह नहीं कहा जाता ।

## क्रिया का फल अदृष्ट है

**अग्निभूति-** आपने पूर्व में जो कृषि का दृष्टांत दिया है, उस दृष्टांत से सचेतन की समस्त क्रियाओं को आप फलवती सिद्ध करना चाहते हैं । किंन्तु कृषि का फल धान्यादि दृष्ट फल है । इसलिए सचेतन को समस्त क्रियाओं का फल कृषि के फल धान्यादि की तरह मानना चाहिए । अदृष्ट फल मानने की क्या जरूरत है ? हम देखते हैं कि संसार में जो लोग पशु का वध करते हैं तो वे कोई अधर्म रूप अदृष्ट कर्म के लिए नहीं करते हैं किन्तु खाने के लिए उन्हें मांस मिलता हैं इसलिए वे पशु हिंसा करते हैं । इसी प्रकार सभी क्रियाओं का कोई न कोई अदृष्ट फल ही मानना चाहिये । अदृष्ट फल मानना आवश्यक है ।

इसके सिवाय यह बात भी अनुभव सिद्ध है कि प्रायः लोग जो कुछ कृषि व्यापार आदि क्रिया करते हैं वह दृष्ट फल के लिए ही करते हैं। अदृष्ट फल के लिए दानादि क्रिया करने वाला तो कोई इक्का दुक्का ही होता है । दृष्ट यश मिले उसके लिए दानादि जैसी क्रियाएँ करने वाले ही अधिक हैं और कुछ थोड़े से व्यक्ति अदृष्ट कर्म के लिए करते होंगे । अतः चेतन की समस्त क्रियाओं का फल दृष्ट ही मानना चाहिए ।

**महावीर-** सौम्य । तुम कहते हो कि अदृष्ट फल के लिए दानादि शुभ क्रिया तो कुछ एक व्यक्ति करते हैं और अधिकतर तो दृष्ट फल के लिए ही कृषि, वाणिज्य, हिंसा आदि जैसी अशुभ क्रियाएँ करने वाले दिखते हैं । परन्तु इससे तो फिर यही सिद्ध होता है कि कृषि आदि क्रियाओं का दृष्ट फल के लिए होना चाहिए । संभवतः वे अशुभ क्रिया अदृष्टफल के लिए न करते हों तो भी उनको अधर्म लक्षण पाप रूप फल प्राप्त हुए बिना नहीं रहता । वे हिंसादि क्रिया जन्य अनभिलषित अदृष्ट पाप रूप फल का बन्ध करके अनन्त संसार में परिभ्रमण करते हुए विद्यमान रहते हैं । अन्यथा इस संसार में अनन्त जीवों का सद्भाव घटित ही नहीं हो सकता, क्योंकि तुम्हारे अभिप्रायानुसार पाप कर्म करने वाले भी नवीन कर्मों का ग्रहण करते नहीं है, तो फिर मृत्यु के अनन्तर उनको मोक्ष ही जाना चाहिए और मात्र कुछ एक धर्मात्मा ही जो अदृष्ट के लिए ही दानादि क्रिया करने वाले हैं-संसार में रह जाते हैं । परन्तु संसार में अनन्त जीव हैं और उनमें भी अधर्मात्मा ही अधिक दिखते हैं । इसलिए मानना चाहिए कि सभी क्रियाओं का दृष्ट के उपरान्त अदृष्ट कर्म रूप फल भी होता है ।

(क्रमशः)

लेखांक 37

# स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

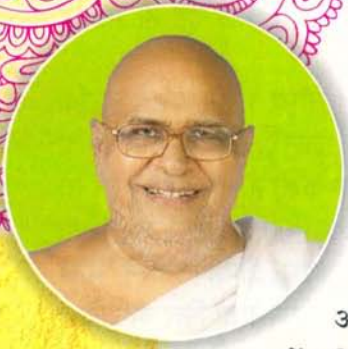

जैसा कहा जाता है, सांप के पाँव, सांप को नहीं दिखाई देते। उसी प्रकार फूलकुंवर को भी उसके अवगुण दिखाई नहीं दे रहे थे । वह हो ठाकुरजी की भक्ति में रमी हुई थी और किसी को भी कुछ नहीं समझ रही थी ।

जब उसकी वय विवाह के अनुरूप हुई तो उसके लिये योग्य वर की खोज आरंभ हुई । कुछ अच्छे परिवारों में योग्य लड़के थे । वहाँ संदेश भेजकर बात चलाई गयी । जो फूलकुंवर के व्यवहार के विषय में सुन चुके थे, उन्होंने तो बात को टाल दिया । एक स्थान से समाचार आए कि बातचीत करने के लिये वे स्वयं वहां आ रहे हैं । इस समाचार से अमरचंद और परिवार को विश्वास हुआ कि यहाँ बात बन जावेगी। कुछ दिनों के बाद समाचार मिले कि वह परिवार अमुक दिन आसपुर आ रहा है । अमरचंद का परिवार अतिथियों के स्वागत के लिये तैयार हो गया । मां ने अपनी पुत्री को अतिथियों के सम्मुख ठीक से व्यवहार करने और कम से कम बोलने के लिये समझाया । फूलकुंवर ने अपनी मां के सम्मुख सिर हिलाकर स्वीकृति प्रदान कर दी। माता ने समझ लिया कि अब यह सम्बन्ध हो ही जावेगा । निश्चित दिन अतिथियों का आगमन हुआ । पूरे परिवार ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया । फूलकुंवर उस दिन अपने कक्ष में ही रही। उसकी ओर से कोई भी ऐसा कार्य नहीं हुआ, जिससे कि उसके प्रति किसी प्रकार का संदेह उत्पन्न हो । जब अतिथियों को जलपान कराने का समय हुआ तो बड़ी भौजाई ने जलपान सामग्री फूलकुंवर के हाथ में देते हुए कहा – ''चलो, ननदजी! अतिथियों को जलपान करवा दिया जावे।''

फूलकुंवर सजी-संवरी थी । हाथ में जलपान की थाली लिए जब वह अतिथियों के सम्मुख उपस्थित हुई तो उसका रूप-यौवन देखकर सभी अतिथि मन ही मन प्रसन्न हो गए । जिस युवक के साथ फूलकुंवर का सम्बन्ध होने वाला था, वह भी वहां बैठा हुआ था । उसने भी कनखियों से फूलकुंवर को देखा तो मन ही मन कल्पना लोक में खो गया । एक ही नजर में उसे फूलकुंवर पसंद आ गई थी । फूलकुंवर ने बड़ी सावधानी से जलपान की थाली रखी और सबको विनयपूर्वक सादर अभिवादन भी किया । युवक की माता ऐसी विनम्र बहू पाने की आकांक्षा से फूली नहीं समाई । उसने फूलकुंवर की बांह थामकर अपने पास बैठाना चाहा, तो वह एकदम उछल पड़ी । क्रोधित होते हुए बोली- ''तुमने.. तुमने मुझे छूने का साहस कैसे किया? तुम सब भुक्खड़ हो । क्या तुम्हारे यहां खाने को कुछ नहीं मिलता, जो यहां टुकड़े तोड़ने चले आए । चलो भागो यहां से नहीं तो एक-एक को देख लूंगी।''

फूलकुंवर के इन शब्दों को सुनकर अतिथि तो आग बबूला हो गए और पांव पटकते हुए तथा कुछ बड़बड़ाते हुए बिना जलपान किये ही चले गए । परिवार के सभी सदस्य ऐसे चुप बैठ गए, मानों सबको सांप सूंघ गया हो । अतिथियों के जाने के पश्चात् फूलकुंवर उछल-उछलकर नाचने लगी और बड़बड़ाने लगी- 'सब ठाकुरजी की कृपा है। बड़े आए थे । उनके बाप का यहां रखा है जो खाने आए थे, टुकड़खोर कहीं के ।' इस घटना के पश्चात् इस परिवार में कई दिनों तक असामान्य स्थिति बनी रही । अमरचंद और उसकी पत्नी का बुरा हाल था । भाई जैसे-तैसे अपने कर्तव्य का पालन करते रहे । नगर के लोग जानबूझकर इस घटना के बारे में पूछते रहते थे । आसपास के नगर-ग्रामों में भी इस घटना की चर्चा होने से अमरचंद को काफी बदनामी का सामना करना पड़ा । अमरचंद दूसरों को क्या दोष देता । वह जानता है कि जब उसका ही सिक्का खोटा है तो सामने वाले को

क्यों दोष दिया जावे । अब तो स्थिति यहां तक आ गई कि बात-बात में अमरचंद अपनी पत्नी को कहता-''सारा दोष तुम्हारा ही है। तुमने ही बेटी को अत्यधिक लाड़ में बिगाड़ दिया है ।''

इस पर उसकी पत्नी कहती - ''इसमें मेरा क्या दोष है । आपने भी तो बेटी को बहुत लाड़-लड़ाये हैं । उसकी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति आप करते रहे। आपने उचित अनुचित का कुछ भी ध्यान नहीं रखा । मैं जब भी कुछ कहती आप कह देते - 'तुम चुप रहो । मेरी बेटी है, मैं जैसा चाहूँगा, वैसा करूंगा ।' अब तुम ही भुगतो । मुझे दोष देने की जरूरत नहीं है ।''

ऐसी बात होते-होते दोनों में झगड़ा होने लगता । कुछ देर बाद जब झगड़ा समाप्त होता और दोनों गंभीरता से इस विषय पर विचार करते तो दोनों ही मौन हो जाया करते । अब उनके सम्मुख सबसे बड़ी समस्या फूलकुंवर के विवाह की थी । आसपास तो अब उसका विवाह हो नहीं सकता था । चारों ओर उसके स्वभाव की चर्चा हो चुकी थी । कुछ लोग तो, फूलकुंवर को पागल लड़की तक कह चुके थे । अमरचंद ने योग्य वर की खोज के लिये अपने निकटतम सम्बन्धियों को भी सूचित कर दिया । अभी तक उनकी ओर से कोई संतोषप्रद उत्तर नहीं मिला था । एक स्थान से अवश्य सूचना मिली, किन्तु जो परिवार बताया गया वह अमरचंद को स्वीकार नहीं था ।

क्रमशः

## गुदगदी

एक डाक्टर का टी.वी. सेट खराब हो गया । वे उसे लेकर मैकेनिक के पास गये ।
मैकेनिक ने उसकी मरम्मत मजदूरी 400 रू बताई और साथ यह भी कहा कि अगर टी.वी. का पुरजा खराब हुआ, तो वह बाजार से खरीदना पड़ेगा और उसके पैसे अलग होंगे ।
डाक्टर साहब मुस्कराते हुए बोले-'भई, तुम तो हम से भी आगे बढ़ गए हो । हम मरीज से 200 रू. फीस लेते है और तुम 400 के अलावा भी मांग रहे हो ?'
'वह तो ठीक है डाक्टर साहब । पर हम गारंटी भी तो देते हैं ।' मैकेनिक ने जवाब दिया ।

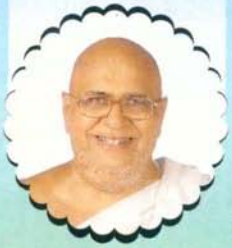

उत्तरदाता

# प्रश्नोत्तरी

## गति नाम कर्म किसे कहते हैं?

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. स्त्रीवेद किसे कहते हैं ?

उ. जिसके उदय से दूसरे पुरुष के साथ रमण करने की इच्छा हो उसे स्त्रीवेद कहते हैं।

प्र. पुरुषवेद किसे कहते हैं ?

उ. जिसके उदय से स्त्री के साथ रमण करने की इच्छा हो उसे पुरुषवेद कहते हैं।

प्र. नपुंसक वेद किसे कहते हैं ?

उ. जिसके उदय से दूसरी स्त्री और पुरुष दोनों के साथ रमण करने की इच्छा हो उसे नपुंसक वेद कहते हैं।

प्र. द्रव्यवेद किसे कहते हैं ?

उ. नाम कर्म के उदय से प्रगट हुए बाह्य चिह्न विशेष को द्रव्यवेद कहते हैं।

प्र. भाववेद किसे कहते है ?

उ. मैथुन सेवन करने की अभिलाषा को भाववेद कहते हैं।

प्र. आयुकर्म के कितने भेद हैं ?

उ. आयुकर्म के चार भेद हैं नरकायु, तिर्यञ्चायु, मनुष्यायु और देवायु।

प्र. नाम कर्म की कितनी प्रकृतियाँ हैं ?

उ. तिरानवे। 4 गति (देव मनुष्य तिर्यञ्च और नरक), 5 जाति (एकेन्द्रिय जाति, द्विन्द्रिय जाति, त्रीन्द्रीय जाति, चतुरिन्द्रिय जाति, पंचेन्द्रिय जाति), 5 शरीर (औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण), 3 अंगोपांग (औदारिक, वैक्रिय, और आहारक), 5 बन्धन (औदारिक शरीर बन्धन, वैक्रिय शरीर बन्धन, आहारक शरीर बन्धन, तैजस शरीर बन्धन, कार्मण शरीर बन्धन), 5 संघात (औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण संघात) 6 संहनन (वज्रऋषभनाराच, ऋषभ नाराच, अर्धनाराच, कीलिक और सेवार्त) 6 संस्थान (समचतुरस्र, न्यग्रोध, परिमंडल, सादि, कुब्ज, वामन, हुंडक संस्थान) 5 वर्ण (काला, नीला, लाल, पीला और श्वेत) 2 गन्ध (सुरभि गन्ध, दुरभिगन्ध) 5 रस (तिक्त, कटु, कषाय, अम्ल, मधुर), 8 स्पर्श (गुरु, लघु, मृदु, खर, शीत, उष्ण, स्निग्ध और रुक्ष) 4 आनुपूर्वी (देवगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, तिर्यञ्चगत्यानुपूर्वी और नरकगत्यानुपूर्वी), 2 विहायोगति (शुभ और अशुभ विहायोगति), 1 पराघात, 1 श्वासोच्छवास, 1 आतप, 1 उद्योत, 1 अगुरुलघु, 1 तीर्थङ्कर नाम, 1 निर्माण, 1 उपघात, 10 त्रसदशक (त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुल्वर, आदेय, यशः कीर्ति), 10 स्थावरदशक (स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, अयशः कीर्ति)

# ज्ञानायतनः ज्ञान व आचरण का आलोक

वाघजीभाई वोरा
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ)

भावी पीढी समाज का भविष्य है । समाज के भविष्य को उज्ज्वल, स्थिर तथा दृढ बनाने के लिये उसको संवारना जरूरी है । उसका यह संवरण ज्ञान तथा संस्कार से ही संभव है । छोटे बालकों को उनकी प्रारंभिक आयु में ही जैसा वातावरण, आचरण, ज्ञान तथा वायुमान प्राप्त होता है, वैसे ही उन्हें संस्कार प्राप्त हो जाते हैं । इन संस्कारों से उनके अवचेतन मन की स्थिति भी तैयार होती है । संस्कार उनके जीवन में छाया की भांति बने रहते हैं । अतएव परिवार, समाज तथा संबंधियों का यह महत्वपूर्ण कर्तव्य बनता है कि वे संस्कारों की ओर ध्यान दें विकृत संस्कार जीवन को व्यर्थ बना देते हैं । जबकि सद्संस्कार जीवन को सार्थकता की ओर अग्रसर करते हैं ।

राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने सदैव बालकों को सुसंस्कारों एवं सद्आचरणों में ढालने का उपदेश दिया है । वे चाहते हैं कि हमारे समाज का भविष्य उस पीढी के हाथों में जाये जिसके संस्कारों तथा सद्व्यवहारों से अहिंसा-तप तथा संयम के प्रतीक जैन धर्म एवं तीर्थंकर प्रभु महावीर स्वामी स्वयं के आदेशों का परिचय प्राप्त हो । ऐसी पीढ़ी ही समाज को समुन्नत एवं सुरक्षित कर सकती है । पूज्य गच्छाधिपति सा. ने लगभग पचास वर्षों से अपने इस अभियान को गति दे रखी है । अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के चार दिव्य उद्देश्यों में तीसरे बिन्दु धार्मिक शिक्षण प्रचार की प्राप्ति के लिये उनने हर नगर में धार्मिक पाठशाला प्रारंभ करने पर बल दिया । साथ ही धार्मिक शिविरों की परम्परा का भी त्रिस्तुतिक समाज में श्री गणेश किया। ये शिविर छात्र तथा छात्राओं के लिये पृथक से लगाये जाते हैं। इन शिविरों की श्रृंखला में यह परिप्राप्ति हुई कि अवकाश के दिनों में या अवकाश के मौसम में; साथ ही अपने चातुर्मास काल में पूज्य साधुगण अथवा साध्वी महाराज स्थानीय स्तर पर शिविर आयोजित कर ज्ञान, शिक्षा तथा आचरण के प्रसार में अपना योगदान प्रदान कर रहे हैं । खुशी है कि पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के परम सान्निध्य में ज्ञानायतनों (शिविरों) का आयोजन हो रहा है । ऐसे पांच ज्ञानायतन इस वर्ष में सम्पन्न हो चुके हैं । हमारी ओर से बधाई ।

# ज्ञानायतनों से युवा क्रांति

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थापना जिन चतुःदिव्य उद्देश्यों को लेकर हुई है, उनमें तीसरा उद्देश्य धार्मिक शिक्षा प्रचार से संबंधित है । नई पीढी के बालकों में धार्मिक शिक्षा की पैठ इस प्रकार तैयार की जाए कि वह उनके जीवन को भी सुदिशा में प्रभावित कर सके । धार्मिक ज्ञान के लिये प्रारंभ से ही जैन समाज में मंदिरों तथा धर्मस्थलों पर धार्मिक पाठशालाओं की परम्परा है । इन पाठशालाओं ने जैन समाज को कई विद्वान दिये हैं । परिषद ने इन पाठशालाओं को सुदृढ बनाने तथा जहां पाठशालाएं नहीं हैं वहां प्रारंभ करने का अभियान जारी रखा है । पाठशालाओं के संचालन हेतु आर्थिक सहायता भी उपलब्ध की गई । परमपूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के उपदेशों से धार्मिक शिक्षा का व्यापक प्रचार समाज में मजबूत होता गया । उन्हीं के निर्देशन में श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ द्वारा सप्त वर्षीय धार्मिक पाठ्यक्रम की रचना तथा प्रकाशन किया गया । इसके द्वारा परीक्षा बोर्ड का भी संचालन होता है । धार्मिक शिक्षा पाठशालाओं के साथ अवकाश काल में छात्र-छात्राओं के समय का सदुपयोग करने एवं उनके जीवन को विनय-विवेक-अनुशासन से सुसंस्कृत बनाने के उद्देश्य से पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत युग प्रभावक सा. द्वारा धार्मिक शिविरों (ज्ञानायातन) का आयोजन किया जाता रहा है । ये छात्रों के जीवन को संस्कारों से परिष्कृत किये जाने के माध्यम हैं । इनमें छात्र अनुशासित तथा नियमित दिनचर्या, आध्यात्मिक एवं धार्मिक जीवन पद्धति और धार्मिक अनुष्ठानिक क्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करता है । छात्र संयम जीवन से भी रुझान प्राप्त करता है । छात्रों का आपस में परिचय होता है । उनके परिवार भी परिषद तथा समाज से जुड़ते हैं । छात्रों के जीवन में विकास के नये द्वार खुलते हैं । उनमें अवशिष्ट प्रतिभा उभर कर प्रकट होती है । देव, गुरु, धर्म के प्रति उनकी श्रद्धा परिपक्व होती है । यही नहीं मंदिर की क्रियाओं की भक्तिपूर्ण विधियों एवं उनके रहस्यों से उनका जीवन जुड़ता है । छात्रों ने शिक्षायतन के काल में अपने परिवारजनों को शिक्षायतन के प्रभाव को लेकर जो पत्र भेजे, उनसे शिक्षायतन की उपादेयता सिद्ध होती है । आशा है कि शिक्षायत की परम्परा निरंतर गतिशील रहेगी ।

# ज्ञानायतन : आध्यात्मिक साधना का सूत्र

ज्ञानायतन याने ज्ञान की साधना तथा प्राप्ति का अवसर। जैन परम्परा का के अनुसार ज्ञानायतन ऐसे शिक्षण का अवसर है जो छात्र के जीवन में आचरण व क्रिया का भी परिमार्जन करता है। ऐसी साधना का मूल आध्यात्म है। ज्ञानायतन का अर्थ है ऐसे आध्यात्मिक अभ्यास का शुभारंभ।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

आध्यात्मिक अभ्यास साधना है। साधना के बिना आत्म साक्षात्कार अथवा ब्रह्मदर्शन संभव नहीं है। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का उपदेश था कि आत्म शक्ति का इतना विकास करो, आत्मध्यान में इतने लीन हो जाओ कि शरीर को परिषह सहन करने का अभ्यास हो जाए। शरीर का परिषह सहन करना तप है तथा तप को जैन धर्म ने निर्जरा का सर्वोत्तम प्रयत्न मान्य किया है। दूसरे शब्दों में तप स्वयं में साधना है। तप की उत्कृष्टता, साधना के मार्ग को प्रशस्त करती है। अतएव साधना व्यक्ति का वह तप रूप धर्म है जो उसे आध्यात्मिक अभ्यास में निरंतर संलग्न रखता है। उसकी अक्षुण्य संलग्नता उसे सिद्धि तथा अभिष्ट फल तक पहुंचा देती है। अपने छद्मस्थकाल में तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी ने साढे बारह वर्ष तक साधना की। यह साधना तपस्या रूप ही थी। उनने इतने दीर्घकाल में शास्त्रों के अनुसार केवल 349 दिन ही आहार ग्रहण किया, शेष सभी दिन निर्जल व्यतीत किये। इन दिनों में उनने आहार का ही त्याग नहीं किया अपितु काम, क्रोध, मोह, माया, लोभ, अहंकार जिन्हें जीवन का प्रबल शत्रु माना जाता है, इन विकारों को भी जीवन से दूर रखा तथा वह जीवन जिया जो समभाव की साधना की ओर अग्रसर करता है।

समभाव याने रागद्वेष से रहित समबुद्धि में रहने का भाव, विषमता के निमित्त तथा कारणों की स्थिति में समबुद्धि रखना। लाभ-हानि, सुख-दुःख, मान-अपमान, निन्दा 5, स्तुति, जय-पराजय आदि प्रसंगों का जीवन में आत्म पुरुषार्थ के समर्थन से अलगाव स्थापित करना। ममता, आसक्ति और कामना से बिलकुल रहित बनना। गीता में भी श्रीकृष्ण ने कहा है कि तू आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान

बुद्धिवाला होकर कर्मों को कर ! समत्व ही योग कहलाता है । सम से तात्पर्य है मन की स्थिरता, राग द्वेष की अपरिणति, समभाव, एकाकीपन, सुख-दुख में निश्चलता आदि । समता का सीधा मतलब यह है कि राग-द्वेष आदि विषम भावों की ओर से आत्मा को हटाकर स्व-स्वभाव में ज्ञाता दृष्टाभाव से रमण करना । समता शब्द के लिये समभाव, समत्व-आदि शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है । ये समता शब्द के पर्यायवाची कहे जा सकते हैं। इस शब्द को आत्मज्ञान के विषय में रेखांकित किया गया है क्योंकि, आध्यात्म-सार के अनुसार समभाव मुक्ति का एकमात्र उपाय है। आचार सार में उल्लेख है कि विसंगतियों में समानबुद्धि रूप समता रखना आवश्यक है। ज्ञानीजन अपने अंतःकरण से समभाव को धारण करते हैं। जो स्वयं अपने आपको सभी जीवों में देखता है, वह समता पाकर परमपद ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। अर्थात समभाव साधना को ईश्वर प्राप्ति की स्थिति तक ले जाने में सफल रहता है ।

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी की सम्पूर्ण अवधारणा आत्मा के विशोधीकरण पर आधारित है। आत्मा में उत्पन्न विकारों को मिटाकर आत्मा को उसका स्वरूप प्राप्त करवाने का मार्ग उनने प्रतिपादित किया। यह मार्ग एक दुर्धर्ष प्रयोग है तथा उसी प्रयोग को समभाव नामांकित किया जाता है। अपने साधनाकाल के साढे बारह वर्षों में उन पर उपसर्गों की स्थिति विकट रही। अनार्य देश में विचरण के समय अज्ञानी लोगों ने उनकी पिटाई तक की, उन्हें कुएं में फैंका, यहां तक की उनको कुत्तों से कटवाया गया। फिर भी उनको किसी पर क्रोध नहीं आया। चण्डाकौशिये सर्प को उनके 'बुज्झ-शांत' होने का प्रतिबोध दिया। संगम ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर उनको विचलित करना चाहा। लेकिन तीर्थंकर महावीर स्वामी दृढ रहे। जब संगम लौटने लगा तो भगवान के नैत्रों से अश्रुकण छलक गये। ये अश्रुकण किसी उपसर्ग के दर्द के परिणाम नहीं थे बल्कि तीर्थंकर महावीर स्वामी के हृदय में प्रवाहित दया के फल थे। उनके भाव संगम के प्रति दयार्द्र हो उठे, उनके चिन्तन ने अंगडाई ली कि-'इसने उपसर्ग कर इतने अशुभ कर्मों का बंध कर लिया है कि इसे भयंकर पीड़ा का सामना करना पड़ेगा।' इसी करुणामयी चिंतन का प्रगटन अश्रुकणों के रूप में हुआ। यह तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी की समभाव की उन्नत साधना थी। तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भी समभाव में बारह मास तक निराहार रहे। तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ कमठ के उपसर्गों के समय समभाव को ही अंगीकार किये रहे। तीर्थंकर महावीर के पश्चात् कई विभूतियों द्वारा समभाव अपना कर आत्म कल्याण किये जाने के उदाहरण जाज्वल्य हैं। इनमें अरणिक, मैतार्य, खंदक सूरि गजसुकुमार आदि की गणना की जानी प्रासंगिक है।

ज्ञानायतन जीवन में समभाव की साधना का संस्कार देता है। छोटे छात्रों के जीवन में ये संस्कार, ज्ञान तथा अभ्यास गगनचुम्बी अट्टालिका की ऊंचाई को प्रस्तुत करने तक विकसित नहीं हो पाएंगे लेकिन उनके जीवन धरातल पर नींव के पाषण अवश्य बन जाएंगे। इसी नींव पर भविष्य में जीवन की सुन्दर ईमारत का निर्माण संभव है।

# तीर्थंकर श्री अजितनाथजी

(मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)

महाराज श्री जितशत्रु एवं उनके भाई श्री सुमित्र ने भगवान श्री अजितकुमार को अपने संकल्प से अवगत कराकर राज्यभार सम्भालने की आग्रह किया । प्रभु अजितनाथ का राज्याभिषेक सम्पन्न कर महाराज श्रीजितशत्रु एवं उनके भाई श्री सुमित्र ने दीक्षा ग्रहण की । बाह्य और अंतरंग के शत्रुओं को जीतने वाले उन राजर्षि ने अखंड व्रत पाला, केवल ज्ञान प्राप्त कर अंत में शेष चार अघाति कर्मों को विनष्ट कर मोक्ष प्राप्त किया ।

राजसिंहासन पर आरूढ़ होने के पश्चात श्री अजीतनाथ स्वामी समस्त ऋद्धि-सिद्धि एवं सम्पन्नता सहित राज करने लगे । उनके पुण्य प्रताप से अन्य राजागण स्वतः श्रद्धा-भक्ति से विनयपूर्वक उनके अधिन हो गए । प्रजा भी नीर्ति मार्ग पर चलने लगी । प्रजा हर प्रकार से सुखी थी । उनमें प्रभु के प्रभाव से अनिती का लेश भी नहीं रह गया था । इस प्रकार सबको सुखी एवं समृद्ध रखते हुए श्री अजितनाथजी ने तिरपन लाख पूर्व तक न्याय व नीतिपूर्वक प्रजा का पालन किया । भोगावली कर्मों के क्षीण हो जाने के बाद प्रभु के अभिनिष्क्रमण का समय निकट आ रहा था । एक दिन प्रभु अकेले बैठे हुए थे । अनेक प्रकार के विचार उनके अंतःकरण में उठ रहे थे । अन्त में उनके मन में वैराग्य भावना की लहर उठी जिसने उनके अन्यान्य समस्त विचारों को बहा दिया । संसार से उनका चित्त उदास हो गया । जिस समय महाराज अजित स्वामी के मन में इस प्रकार का चिन्तन चल रहा था, उसी समय लोकांतिक देवताओं ने आकार प्रभु से आग्रह किया कि 'हे प्रभु आप स्वयंबुद्ध है आपको किसी प्रकार का उपदेश देने की क्षमता तो हममें नहीं है । अतः हम परम्परागत कर्तव्य का पालन करते हुए आपसे निवेदन करते है कि आप अब धर्मतीर्थ का प्रवर्तन कर सभी प्राणियों का उद्धार कीजिए ।

देवता प्रभु को वंदन कर लौट गये । प्रभु श्री अजित स्वामी ने मनोनुकूल अवसर देख तत्काल ही सागर को बुलाकर स्वयं संसार का परित्याग कर साधना पथ पर अग्रसर होने एवं उन्हें राज्यभार संभालने की आज्ञा दी । प्रभु के वचन सुन सगरकुमार के हृदय पर

मानों वज्र गिर गया । उन्होंने करबद्ध हो अन्तःकरण से प्रभु से प्रार्थना की – 'आप अपने इस अनन्य अनुगामी को अपने से अलग न करें मुझे भी आपके साथ लीजिए।'

तीन ज्ञान के धनी प्रभु श्री अजितस्वामी को यह विदित था कि कुमार सगर इस अवसर्पिणी काल का द्वितीय चक्रवर्ती होगा । अतः उन्होंने सगर से अमृतसम वाणी में कहा– 'तुम्हारी दीक्षा लेने की भावना श्रेष्ठ है, संसार सागर से पार उतरने का यही एक साधन है । परन्तु अभी तुम्हारे भोगावली कर्म अवशिष्ट है । अतः तुम राज्यभार ग्रहण कर न्यायपूर्वक शासन करो एवं मुझे भी संयम लेने की अनुमति दो।'

सगर कुमार के समक्ष प्रभु की आज्ञा शिरोधार्य करने के अलावा कोई मार्ग शेष नहीं रह गया था । प्रभु श्री अजितस्वामी ने भव्य समारोह के साथ सगर कुमार का राज्याभिषेक किया एवं प्रभु स्वयं वर्षीदान देने में प्रवृत्त हुए। प्रभु सूर्योदय से भोजन के समय तक दान देते थे । प्रभु रोज एक करोड़ आठ लाख स्वर्ण मुद्राएँ दान में देते थे । एक वर्ष में प्रभु ने तीन सौ उठ्ठासी करोड़ अस्सी लाख स्वर्ण मुद्राएँ दान में दी । वर्षीदान के सम्पन्न होते ही सौधर्म आदि चौसठ इन्द्रों के आसन चलायमान हुए । वे सब अपने सामानिक देवादि को साथ प्रभु की सेवा में उपस्थित हुए । देवताओं और मनुष्यों ने मिलकर प्रभु का दीक्षा महोत्सव मनाया । प्रभु को सुप्रभा नाम की पालकी में सवार किया गया एवं भव्य अभिनिष्क्रमण महोत्सव मनाते हुए विशाल समूह के साथ विनिता नगरी के बहिर्भागस्थ 'सहसाम्रवन' नामक उद्यान में पहुंचे । माघ शुक्ला नवमी के दिन चन्द्र के रोहिणी नक्षत्र के योग होने पर प्रभु ने स्वयं अपने शरीर से सारे वस्त्राभूषण उतार कर इन्द्र द्वारा दिया हुआ अदूषित देवदूष्य वस्त्र धारण किया । पश्चात– प्रभु ने पंचमुष्टिक लोच कर 'नमो सिद्धाणं' के उच्चारण के साथ सर्वसिद्धों को नमस्कार तथा सामायिक का उच्चारण कर षष्ठभक्त की तपश्चर्या सहित एक हजार राजाओं के साथ चारित्र धर्मग्रहण किया ।

---

एक संत कह रहे थे–मनुष्यों में कुछ देवता पाए जाते है, शेष तो नर–पिशाच ही होते है। जिज्ञासु ने पूछा–भला इन नर–पिशाचों, मनुष्यों तथा देवताओं की पहचान क्या है ? संत ने कहा–देवता वे है, जो दूसरे को लाभ पहुँचाने के लिए स्वयं हानि उठाने को तैयार रहते हैं। मनुष्य वे हैं जो अपना भी भला करते हैं और दूसरों का भी । नर–पिशाच वे हैं, जो दूसरों की हानि ही सोचते है और करते है, भले ही इस प्रयास में उन्हें स्वयं भी हानि ही सहनी पड़े ।

# आचार्य श्री भद्रबाहु

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

महाराजा द्वारा पुनः आग्रहपूर्ण प्रार्थना करने पर आचार्यश्री भद्रबाहु ने कहा 'राजन्' । वास्तविकता कुछ और ही है, जिसे मुझे प्रकट नहीं करना चाहिए उस बात को प्रकट करने से अभी कोई लाभ नहीं है । फिर भी आपके अत्यन्त आग्रह को देखकर मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि कर्म विपाक का फल अनिवार्य और अचिन्त्य है । जो होने वाला है, वह सातवें ही दिन सबको मालूम हो जाएगा ।'

आचार्य भद्रभाहु की इस बात को सुनकर वराहमिहिर के अन्तर्मन में जो द्वेष की अग्नि वर्षों से प्रच्छन्न रूप से जल रही थी जिसे उसने अब तक सबसे छुपाएँ रखा था वह भड़क उठी वह आक्रोश में आकर बोला - 'राजन् ! इन जैन श्रमणों को ज्योतिष शास्त्र के नाम पर कोई जानकारी नहीं है । यदि इन्हें थोड़ा भी ज्ञान हो तो स्पष्ट रूप से बताए कि सातवें दिन क्या होने वाला है । मैंने समस्त ज्योतिष शास्त्रों का गहन अध्ययन किया है मेरी भविष्यवाणी कभी गलत नहीं जाती यह बात आपको भी भले प्रकार से विदित है । केवल मेरी बात का विरोध करने के लिए इन्होंने यह अस्पष्ट बात कही जिसका कोई अर्थ नहीं निकलता । यदि इनमें ज्योतिष संबंधी थोड़ा भी ज्ञान हो तो साहस पूर्वक बताएँ कि मेरी भविष्यवाणी के विपरित क्या-क्या घटित होने वाला है ।'

इस पर महाराजा ने पुनः आचार्य भद्रबाहु से विनम्र भाव से विनती की-''भगवन आपके वचनों की प्रामाणिकता पर हमें कोई संदेह नहीं परन्तु ज्योतिष शास्त्र की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए आज यह प्रसंग कसौटी की तरह हमारे सम्मुख आ गया है।''

अतः आप अपने कथन को स्पष्ट कर सातवें दिन क्या होने वाला यह बताएँ ।

आचार्य भद्रबाहु ने शान्त स्वर में उत्तर दिया कि आज मेरा मौनस्थ रहना ही उचित था किन्तु आपके बार-बार आग्रह पर मैं यही कहूंगा कि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सातवें दिन के अन्त में इस बालक की विडाल से मृत्यु हो जाएगी । यह बात सुनकर सभी एकदम स्तब्ध रह गये । परन्तु वराहमिहिर का क्रोध और भी बढ़ गया । उसने कहा- 'भद्रबाहु का कथन असत्य सिद्ध होगा और आठवें दिन इसको कठोर दण्ड दिया जाए ।'

परन्तु राजा का मन शंकित हो उठा । उसने अपने घर के चारों और सैनिकों

का कड़ा पहरा लगा दिया एवं सात दिन तक प्रतिक्षण सतर्कता बरतने एवं बालक को सात दिवस तक सूतिका गृह में ही रखने का आदेश दिया । एक-एक कर सातवां दिन आया सबको और अधिक सजग रहने का आदेश दिया गया । वराहमिहिर स्वयं अत्यंत सतर्कतापूर्वक प्रसूतिगृह के द्वार पर पहरा देने लगा । सातवें दिन की समाप्ति के अंतिम क्षणों में सूतिकाग्रह के कपाटों की विडालमुखी भारी भरकम लोहमयी अर्गला उस नन्हें से बालक पर गिरी और उसकी मृत्यु हो गई ।

वराहमिहिर को अपनी यह पराजय मृत्यु से भी अधिक भयंकर अनुभव हुई । अपकीर्ति के संताप से संतप्त हो वह अपने घर द्वार को छोड़कर परिव्राजक बन गया । उसे लग रहा था कि भद्रबाहु के कारण ही उसकी समग्र प्रतिष्ठा क्षण भर में ही नष्ट हो गई । वह भद्रबाहु को सबसे बड़ा शत्रु समझकर येन-केन प्रकारेण प्रतिशोध लेने के उपाय सोचने लगा एवं अज्ञान के वशीभूत हो अपने मिथ्या अहं का प्रायश्चित किये बिना ही मरकर हीन ऋद्धि वाला वाणव्यन्तर देव हुआ । उस व्यन्तर ने विभंग ज्ञान से अपने पूर्वजन्म की दुश्मनी के बारे में जान लिया एवं दुश्मनी निकालने के लिये आचार्य भद्रबाहु का अनिष्ठ करने का सोचा । परन्तु अपने आपको असमर्थ पाकर उसने जैन संघ के श्रमणों एवं गृहस्थ समूह को अनेक कष्ट देना प्रारंभ किया। तब श्रावक संघ ने आचार्य भद्रबाहु से इस विकट समस्या के समाधान हेतु याचना की । इस पर आचार्य भद्रबाहु ने एक चमत्कारी स्तोत्र की रचना कर जैनसंघ को सुनाया । स्तोत्र के प्रभाव से व्यन्तर द्वारा दी जाने वाली पीड़ा हमेशा के लिए शान्त हो गई । वह चमत्कारिक स्तोत्र आज भी 'उवसग्गहर स्तोत्र' के नाम से जाना जाता है । इसके अलावा आचार्य भद्रबाहु ने 'भद्रबाहु संहिता', 'अर्हत् चूणामणि' आदि ज्योतिष एवं अन्य ग्रंथों की रचना की।

**प्रश्न : भगवान श्री महावीर देव के कितने नाम है ? ये नाम किस प्रकार पड़े ?**

**उत्तर : भगवान श्री महावीर देव के तीन नाम है-(1) वर्धमान (2) महावीर (3) श्रमण**

1) **वर्धमान :** भगवान त्रिशला माता के गर्भ में आये तब सिद्धार्थ राजा के धन, धान्य, राज्य, सुख, वैभव आदि बढते ही चले, इसलिए माता-पिता ने वर्धमान नाम रखा ।
2) **महावीर :** बालपन में व दीक्षा लेने के बाद भगवान को उपसर्ग व परिषह आये, इन में भगवान थोड़ा भी डरे नहीं, जिस से देवों और इन्द्र ने इनका नाम महावीर रखा ।
3) **श्रमण :** घोर तप के साथ साधना की, इसलिए नाम पड़ा श्रमण ।

# ગુર્જર જૈન જ્યોત


સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

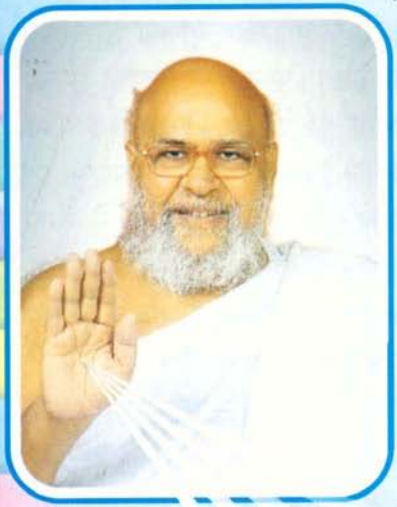

## રતલામ નગરે....

ચાતુર્માસ આયોજક સમાજભૂષણ, ધર્મશ્રેષ્ઠીવર્ય અને વિધાયક શ્રી ચૈતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા... સમર્થ, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. સપરિવારનો જગબત્રીસીએ ગવાતો ઈતિહાસ સર્જક રજવાડી ચાતુર્માસ પ્રવેશોત્સવ સંપન્ન.

# રતલામ નગરે આ વર્ષનું પૂજ્યશ્રીનું ચાતુર્માસ નિર્ધારિત થતાં સમગ્ર માળવામાં હેતનો હિમાલય ડોલી ઉઠ્યો અને લાગણીનો મહાસાગર છલકાઈ ઉઠ્યો

આધ્યાત્મિક અંતરિક્ષના ધ્રુવ તારા સમાન ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના હૃદય સમ્રાટ, લાખો લોકોના ઓલિયા મહાનાયક, સમર્થ, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના ચાતુર્માસ માટે શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ તેમના દાદી ઝમકુબા અને દાદા કનૈયાલાલજીના સપનાને સાકાર કરવા વારંવાર રતલામ નગરે ચાતુર્માસ કરવા પૂજ્યશ્રીને વિનંતી કરતા હતા પણ સંયોગ બનતો ન હતો. પ્રબળ ભાવના સાથે પૂજ્ય માતૃશ્રી તેજકુંવરબાઈની ઉપસ્થિતિમાં સન-૨૦૧૬ ના વર્ષનું પૂજ્યશ્રીનું ચાતુર્માસ રતલામનગરે થાય તે અંગે સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ રતલામની આજ્ઞા લઈ શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ રૂડી પળે શ્રધ્ધાળુ ભક્તોની મોટી ફોજ લઈ ભીનમાલ નગરે પહોંચી ગયા હતા. સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૨૨-૪-૨૦૧૬ ના રોજ પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ ઘોષણા સમારોહમાં ભારતભરના સંઘોએ વિનંતી કરી હતી ત્યારબાદ શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપના નેતૃત્વ હેઠળ મોટી સંખ્યામાં આવેલ રતલામના શ્રધ્ધાળુ ભક્તોએ ઉભા થઈ જય જય કારના ગગનચુંબી નારાઓ સાથે પૂજ્યશ્રીને રતલામ નગરે ચાતુર્માસ કરવા વિનંતી કરી હતી. અંતમાં પૂજ્યશ્રીએ એમના સ્વાસ્થ્ય માટે દાદા ગુરૂદેવના દરબારમાં જઈ પ્રતિજ્ઞા પૂર્ણ કરવાની હોઈ રતલામ નગરે ચાતુર્માસ સંપન્ન કરવા સંમતિ આપી હતી.

ચાતુર્માસ આયોજક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર તેમજ સાથે આવેલ શ્રધ્ધાળુ ભક્તોના મનમાં પ્રસન્નતાનો સાગર લહેરાઈ ઉઠ્યો હતો. પૂજ્યશ્રી સપરિવારનું ચાતુર્માસ રતલામ નગરે નિર્ધારિત થતાં તેની જાણ પુરા માળવામાં થઈ જતાં સમગ્ર માળવાના ભક્ત સમુદાયમાં હેતનો હિમાલય ડોલી ઉઠ્યો હતો અને લાગણીનો મહાસાગર છલકાઈ ઉઠ્યો હતો. માળવાના દરેક સંઘોમાં અભૂતપૂર્વ ભાવોલ્લાસનું વાતાવરણ છવાઈ ગયું હતું. ત્યારબાદ માળવાના દરેક સંઘોએ મીટીંગ બોલાવી માળવાની સીમા પર ભવ્યાતિભવ્ય સ્વાગત કરવાનું આયોજન કરાયું હતું અને ૮૪ સંઘોએ માનવ મહેરામણ વચ્ચે વાજતે-ગાજતે ભવ્યાતિભવ્ય પૂજ્યશ્રીનો માળવામાં પ્રવેશ કરાવ્યો હતો.

# રતલામ નગરે
# ચેતન્યજીએ જગાવી ગુરૂશ્રધ્ધાની મશાલ.
# સમગ્ર સમાજમાં શ્રધ્ધાભરી ઉત્સાહી ચેતના..!!

ચાતુર્માસ આયોજક સમાજભૂષણ, ધર્મશ્રેષ્ઠીવર્ય અને વિધાયક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર ધ્વારા એકવીસમી સદીનો સર્વોત્તમ ઈતિહાસ સર્જક સમર્થ, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંત સેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદવિજયજી મ.સા. સપરિવાર નો રજવાડી ચાતુર્માસ પ્રવેશ...!

**જિન શાસનના શૌર્યમાં શાશ્વત અભિવૃદ્ધિ કરવાવાળો પ્રવેશોત્સવ...! ગુરૂ ગચ્છની ગરિમાનું ગૌરવ વધારવા વાળો પ્રવેશોત્સવ...! ભાવુકોને ભવ્ય સંદેશ દેવાવાળો ભક્તોત્સવ...!**

**તા. ૧૦ જુલાઈ ૧૬ ના રોજ**

**રતલામનગરે**

યોજાયેલ ચાતુર્માસ પ્રવેશની યશોગાથા જૈન સમાજના ઘેર ઘેર ગવાઈ રહી છે અને સહુના મોઢે એક જ વાત છે ચેતન્યજી કાશ્યપ એ ગુરૂભક્તિ કરી વગાડ્યો શ્રધ્ધાનો ડંકો..!

**આ ચાતુર્માસ પ્રવેશોત્સવમાં શું હતું ? તો તેના જવાબમાં કહી શકાય કે શું ન હતું...!**

ચાતુર્માસના પ્રથમ ચરણમાં જ પૂજ્યશ્રીનો રજવાડી ચાતુર્માસ પ્રવેશોત્સવ અત્યંત પ્રભાવક બની ગયો હતો. ઉચ્ચ કોટીની ઉદારતા સાથે કાશ્યપ પરિવારે કરેલી ગુરૂભક્તિ શાસન ભક્તિ અને સંઘ ભક્તિ જોઈને આખો સમાજ અભિભૂત થઈ ગયો હતો.

# પૂજ્યશ્રીના મંગલમય ચાતુર્માસ અંગે આગામી ભવ્ય તૈયારીઓ

શ્રી સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ રતલામના તત્વાવધાનમાં આચાર્યશ્રીના રૂપમાં રતલામનગરમાં પહેલું ચાતુર્માસ કરવા સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ સાધુ સાધ્વીજી ભગવંતો તા. ૧૦-૭-૨૦૧૬ ના રોજ પધરામણી કરવાના હોઈ તે અંગેની તમામ તૈયારીઓ આદરી દેવાઈ હતી. ચાતુર્માસ આયોજક અને વિધાયક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર સાથે સાથે શ્રી રતલામ ત્રિસ્તુતિક સંઘના અધ્યક્ષ શ્રી ઓસી જૈન ના નેતૃત્વ હેઠળ સંઘના કર્તવ્યનિષ્ઠ સભ્યો તેમજ યુવક-તરૂણ પરિષદના કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરોએ તમામ જવાબદારીઓ ઉપાડી લીધી હતી. આ ચાતુર્માસને અત્યંત સફળતા અપાવવા નેત્રદિપક કામગીરી માટે ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી.

- સાગોદ રોડ સ્થિત નિરવશાંતિ વચ્ચે નવોદિત તીર્થ જયંતસેન ધામનું ભવ્ય નિર્માણ.... દિવસની જેમ રાત્રે પણ ઝગમગી રહ્યું છે તીર્થધામ.
- પાંચ હજારથી વધુ વ્યક્તિ બેસી શકે તેવા વિરાટ પ્રવચન મંડપની રચના બંગાળી કારીગરો ધ્વારા તૈયાર કરાયેલ વોટરપ્રુફ ડોમની છત પર વિશેષ પ્રકારની સીટ લગાવાઈ છે જેથી વરસાદનું પાણી આવવાની કોઈ જ સમસ્યા રહેશે નહીં અને પાણીના નિકાલ માટે પણ ડોમની ચારેબાજુ સ્થાયી ડ્રેનેજ સીસ્ટમ કરાઈ છે.
- ભોજન ખંડ ને પણ બંગાળી કારીગરો ધ્વારા નિર્માણ કરાયેલ છે જેમાં હજારોની સંખ્યામાં શ્રધ્ધાળુજનો સુવિધાપૂર્વક ભોજન કરી શકે તેવી ઉત્તમ વ્યવસ્થા કરાઈ છે. આ ખંડની કલાકૃતિ અન પ્રવેશ ધ્વારની આકૃતિ દેખવા લાયક છે. તેમજ અતિથિ ગૃહ અને ઉપાશ્રયનું નિર્માણ કરાયેલ છે.
- શહેરી કોલાહલ થી દુર નિરવ શાંતિ વચ્ચે નિર્માણ પામેલ જયંતસેન ધામમાં પુના થી મંગાવાયેલ મખમલી ઘાસ કારપેટ લગાવાઈ છે. ઈન્દોરથી આવી ભેરૂમલ કુમાવતે આ કારપેટને ઉધાનમાં લગાવી દીધી છે. આ કારપેટ વરસો વરસ ઉપયોગમાં આવી શકે તેવી છે. અહીં સંગીત માટે વિશેષ મ્યુઝીક સીસ્ટમથી સવાર-સાંજ નવકાર મંત્ર અને ભક્તિરસ સંભળાવી શકશે.
- પૂજ્યશ્રીના પ્રવેશમાં ઉપસ્થિત રહેવા બહાર ગામથી પધારેલા મહેમાનો માટે રતલામ નગરની તમામ હોટલો બુક કરાઈ હતી અને રેલ્વે સ્ટેશન પર કાર્યાલય પરથી મહેમાનોને હોટલની રૂમ આપી દેવાઈ હતી. કોઈપણ મહેમાનને અગવડ વેઠવી પડી ન હતી.
- નવોદિત જયંતસેન ધામનું કલેકટર શ્રી ચંદ્રશેખર અને એસ.પી. અવિનાશ શર્માએ નિરિક્ષણ કર્યું હતું. તમામ તૈયારીઓની જાણકારી સિધ્ધાર્થ કાશ્યપજીએ આપી હતી.

# નવોદિત તીર્થ જયંતસેન ધામની તસ્વીરી ઝલક

# રતલામ નગરે...
# જય જયકારના ઉન્માદ સાથે સંપન્ન થયો પૂજ્યશ્રી સપરિવારનો ઈતિહાસ સર્જક રજવાડી ચાતુર્માસ પ્રવેશ..

શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવારના મનોરથ ફળતાં સમાજજનો હરખાઈ ઉઠ્યા

પૂજ્યશ્રીના આગમનને આવકારવા ૩૫ થી ૪૦ હજાર ભકતો ઉમટી પડ્યા

ઠેર ઠેર ગહુલીઓ ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે પૂજ્યશ્રીનો નગર પ્રવેશ

પૂજ્યશ્રીને આવકારવા રાજકીય નેતાઓ આવી પહોંચ્યા

પૂજ્યશ્રીના પ્રવેશ પ્રસંગે ગુરૂભકતો રતલામ નગરના મુખ્ય માર્ગો પર મન મુકીને નાચ્યા..!!

નગરજનોએ નવલેરૂપે અમીભરી નજરે નિહાળ્યા ઓલિયા મહાનાયકને

જૈન સમુદાય સાથે સાથે હિન્દુ-મુસ્લીમ સમુદાય ઓતપ્રોત બન્યા

હૈયે હૈયું દળાય તેટલો માનવમહોરામણ ઉમટી પડ્યો..સિંહસ્થ મેળા જેવું વાતાવરણ

**ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા) માં દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. પર કેન્દ્રીત રચના આકર્ષણનું કેન્દ્ર બની. લક્કડપીઠ ક્ષેત્રથી આ રચના નીકળી ત્યારે મુસ્લીમ બોહરા સમાજજનો ઘણા સમય સુધી આ રચનાને નિહાળતા રહ્યા.**

## આકર્ષણ

પૂજ્યશ્રી સપરિવારના મંગલ પ્રવેશ ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા) લગભગ દોઢ કિ.મી. થી વધુ ચાલવાનો હતો જેમાં આગળ દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની રચના અને રાષ્ટ્રસંતશ્રીની રચના હતી તેની પાછળ ધર્મનો સંદેશ આપતી અન્ય રચનાઓ હતી. હાથી, ઘોડા, બેન્ડ, મનમધુકર ઓરકેસ્ટ્રા, ઢોલના થાપ પર નૃત્ય મંડળી, અમદાવાદ અને મુંબઈથી વિભ્ભીન નૃત્ય મંડળી બેંડ, ઢોલ, તાશ, લેઝીમ, કરતાલ વિગેરે આકર્ષણનું કેન્દ્ર બન્યા હતા. બોહરા-મુસ્લીમ સહિત અન્ય સમાજો દ્વારા સ્વાગત કરાયું ત્યારે હજારો આંખો અભિભૂત બની ગઈ હતી.

ચાતુર્માસ આયોજક અને વિધાયક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવારના શ્રી સિધ્ધાર્થ કાશ્યપે બેંગલુરેની વીપીન પોરવાલ એન્ડ પાર્ટી બોલાવી હતી. પૂજ્યશ્રીના મંગલ પ્રવેશના ચલ સમારોહમાં પ્રભુસ્તવનો ધ્વારા ભક્તજનોને ભાવ વિભોર બનાવી દીધા હતા.

પ્રભુ મહાવીરના ૭૨મા પટ્ટધર, દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ના છઠ્ઠા પટ્ટધર, શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી, લાખો ભક્તોના હૃદય સમ્રાટ, સમસ્ત જીવ પ્રત્યે મૈત્રી રાખવાવાળા, વચનસિધ્ધ, મોક્ષમાર્ગના મુસાફર, દિવ્યસિધ્ધિઓના સ્વામી સમર્થ, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયતંસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તેમજ સપરિવારે તા. ૧૦-૭-૨૦૧૬ ના રોજ રતલામ નગરે પધરામણી કરી હતી. પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં ખાચરોદ ખાતે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન પૌષધશાળાનો ઉદ્ઘાટન કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. ત્યારબાદ તા. ૭ જુલાઈના રોજ સાંજે વિહાર કરી ભુઆશા ગામમાં રાત્રિ વિશ્રામ કરી તા. ૮ જુલાઈના રોજ મલવાસા, જડવાસા ખુર્દ થઈ સાઈનાથ નગર રતલામમાં રાત્રિ વિશ્રામ કર્યો હતો. તા. ૯ જુલાઈના રોજ વિશાજી મિશન રતલામમાં રાત્રિ વિશ્રામ કર્યો હતો. તા. ૧૦-૭-૨૦૧૬ આજે રતલામ નગર અને સમગ્ર મોળવાવાસી જૈન જૈનેતર લોકોના હૈયાં હેલે ચડ્યા હતાં. ૩૯ વર્ષ પૂર્વ મુનિરૂપમાં ચાતુર્માસ સંપન્ન થયું હતું. આચાર્ય રૂપમાં પ્રથમ ચાતુર્માસ માટે પધરામણી થતાં હૈયે હયું દળાય તેવો માનવ મહેરામણ ઉમટી પડ્યો હતો. રતલામ નગરમાં આનંદની અમીવર્ષા થઈ હતી અને હરખની હેલી વરસી ગઈ હતી.

સંવત ૨૦૭૨ ના અષાઢ સુદ-૬ ને રવિવાર તા.૧૦-૭-૨૦૧૬ ની વહેલી સવારે ખેરાદીવાસ સ્થિત નીમવાળા ઉપાશ્રય ખાતેથી પૂજ્યશ્રી સપરિવારના ચાતુર્માસ નગરપ્રવેશ નિમિત્તે ભવ્યાતિભવ્ય ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા) નું આયોજન કરાયું હતું. શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર આતુરતા પૂર્વક રાહ જોઈ રહ્યો હતો તે ઘડી પળ આવી પહોંચી હતી. કાશ્યપ પરિવારના મનોરથ ફળતાં સમાજજનો હરખાઈ ઉઠ્યા હતા.

ચાતુર્માસ પ્રવેશ પ્રસંગે પૂજ્યશ્રીને આવકારવા રાજકીય નેતાઓ અને અન્ય કોમના આગેવાનો સહિત ૩૫ થી ૪૦ હજાર ભક્તો ઉમટી પડ્યા હતા. જૈન સમુદાય સાથે સાથે હિન્દુ-મુસ્લીમ સમુદાય પણ ઓતપ્રોત બન્યો હતો. ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા) માં દાદા-ગુરૂદેવ, વર્તમાન ગુરૂદેવ પર કેન્દ્રીત રચનાઓ આકર્ષણનું કેન્દ્ર બની હતી. આ પ્રસંગ નિમિતે રતલામ નગરના દરેક વિસ્તારોને અદભૂત રીતે શણગારવામાં આવ્યા હતા. ધજા-પતાકા, તોરણો તેમજ કમાનો અને વિવિધ સ્થળે પૂજ્યશ્રીને આવકારતા વિશાળ દરવાજા ઉભા કરાયા હતા. બહારથી ખાસ બોલાવાયેલા રંગોળીકારો રંગોળીઓની રચના કરતા હતા. આ ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા) માં હાથી, ઘોડા, બેન્ડ, મનમધુકર ઓરકેસ્ટ્રા પાર્ટી નાગદા, ઢોલના થાપ પર નૃત્ય કરતી મંડળી, આદિવાસી વિભ્ભીન નૃત્ય મંડળી અત્યંત આકર્ષણનું કેન્દ્ર બની હતી. ઠેર-ઠેર ગહુલીઓ, ગુલાબી સાફામાં સજ્જ પરિષદ સભ્યો અને રંગબેરંગી સાડીઓમાં સજ્જ સન્નારીઓએ પણ અદકેરૂં આકર્ષણ જમાવ્યું હતું.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારના ચાતુર્માસ પ્રવેશ પ્રસંગે કળશધારી બાલિકાઓએ સામૈયું કરી ચોખાથી વધામણી કરી મંગલમય પ્રવેશ કરવા લીલી ઝંડી રૂપે સંકેતો દર્શાવ્યા હતા. ત્યારબાદ પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશને દીપાવવા પધારેલ શ્રધ્ધાવાન ગુરૂભક્તો સાથે નાચ-ગાન અને આનંદની છોળો ઉડાડી વાજતે-ગાજતે રતલામ નગરના ખેરાદીવાસના નીમવાલા ઉપાશ્રયથી મંગલમય ચાતુર્માસ અર્થે નગરપ્રવેશ માટે પ્રસ્થાન કર્યું હતું. દરમ્યાન દરેક વિસ્તારોમાં અન્ય સમાજો દ્વારા ભવ્યાતિભવ્ય સ્વાગત કરાયું હતું. સામૈયામાં ૩૦ થી ૪૦ હજાર થી વધુ સંખ્યામાં જૈન-જૈનેતર પ્રજા જોડાઈ હતી. આ અવસરે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સહિત ચારેય ફિરકાઓના સંઘોના અગ્રણીઓ, મોટી સંખ્યામાં રાજકીય નેતાઓ અને ગુજરાત, રાજસ્થાન, દક્ષિણ ભારત વિગેરે સ્થળોથી ગુરૂભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

સંઘ અને પરિષદના સભ્યો સહિત સમાજજનો રતલામનગરના મુખ્ય માર્ગો પર મન મુકીને નાચ્યા હતા. આ સમયે વાતાવરણ એક તરફી ગુરૂમય બની ગયું હતું.

સમાજની મહાન હસ્તીઓને મુક્તપણે નાચતી નિહાળી ઉપસ્થિત હજારો જૈન-અજૈન લોકો આનંદિત બની ગયા હતા.

આ ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા) ખેરાદીવાસથી ઘાસ બજાર, ચૌમુખી પુલ, ગણેશ દેવરી, બજાજખાના, તોપખાના, ચાંદની ચોક, લક્કડ પીઠ, બાજના બસ સ્ટેન્ડ થઈ સાગોદ રોડ સ્થિત નવોદિત તીર્થ જયંતસેન ધામ ખાતે પહોંચી હતી.

જયંતસેન ધામમાં રચાયેલ વિરાટ મંડપમાં પૂજ્યશ્રી સપરિવારે પ્રવેશ કર્યો હતો અને આ વિરાટ ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા) ધર્મસભા રૂપમાં પરિવર્તિત થયો હતો. હજ્જારો ગુરૂભક્તો જ્યાં જગ્યા મળે ત્યાં ગોઠવાઈ ગયા હતા. મંડપ ખીચોખીચ ભરાઈ ગયો હતો. પૂજ્યશ્રીએ માંગલિક સંભળાવી શ્રધ્ધાળુ ભક્તજનોને સંબોધી ફરમાવ્યું હતું કે રતલામ નગરના ચાતુર્માસ માટે દેશભરમાં કેટલાય વર્ષોથી ઘોષણા માટે આયોજન થતાં હતાં તે દરેક સ્થળે શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ વિનંતી કરતા હતા. બિમારીના કારણે અમદાવાદની હોસ્પીટલમાં દાખલ થવું પડ્યું મેં દાદાગુરૂદેવને પ્રાર્થના કરી કે હું સ્વસ્થ થઈશ તો મોહનખેડા તીર્થે પહોંચીશ પછી રતલામ નગરમાં ચાતુર્માસ કરીશ અને આ અવસર આવી પહોંચ્યો દરેક સમાજ ધ્વારા સ્વાગત થતાં પૂજ્યશ્રીએ કહ્યું હતું કે હું જૈન સમાજનો જ નહીં પણ માનવ સમાજનો સાધુ બની આવ્યો છું.

પૂજ્યશ્રીના પ્રવચન નું શ્રવણ કરી શ્રધ્ધાળુ ભક્તોએ હાથ ઉંચા કરી જય જય કારના નારા થી જયંતસેન ધામને ગજવી મુક્યું હતું.

યુવા મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. એ શુકનવંતા નવના આંક પર ચોટાર પ્રવચન આપ્યું હતું.

પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના સ્વાગતમાં જેવી રીતે દરેક સમાજજનો જોડાયા એનાથી ઉજૈન સિંહસ્થની યાદ અપાવી છે. એ રીતે રાષ્ટ્રસંત ના મંગલ પ્રવેશ સાથે રતલામ નો સિંહસ્થ શરૂ થઈ ગયો છે. આ વાત સાગોદરોડ સ્થિત જયંતસેન ધામ ખાતેની ધર્મસભામાં અતિથીઓ એ કહી હતી. મુખ્ય અતિથી કેન્દ્રીય મંત્રી થાવરચંદ ગેહલોતે કહ્યું હતું કે પૂજ્યશ્રીના સાનિધ્યનો મોકો મળ્યો છે. ચાતુર્માસની સાર્થકતા ત્યારે કહેવાશે જ્યારે રાષ્ટ્રસંતના સંદેશોને આચરણમાં ઉતારવામાં આવે.

પ્રભારી મંત્રી પારસજી જૈને કહ્યું કે સિંહસ્થ ને સફળ બનાવવા જેવી રીતે દરેક સમાજ જોડાયો હતો તેવી રીતે આજ રતલામ નગરમાં રાષ્ટ્રસંતના સ્વાગતમાં દરેક સમાજ નજરમાં આવ્યો. રતલામ સાંસદ કાંતિલાલ ભૂરિયાએ કહ્યું કે મોહનખેડા તીર્થ પાવર હાઉસ છે. ત્યાંથી અને પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંતના આશિર્વાદથી સાંસદના રૂપમાં આપની સામે ઉભો છું. અભા. સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ વાઘજીભાઈ વોરાએ કહ્યું કે પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત ના ચાતુર્માસથી આયોજક ચેતન્યજી કાશ્યપની દાદીમાં ઝમકુબાઈનું સ્વપ્ન આજે સાકાર થયું છે.

ત્યારબાદ ચાતુર્માસ આયોજક ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા માતૃશ્રી તેજકુંવરબાઈ કાશ્યપ, નીતા કાશ્યપ, સિધ્ધાર્થ-પૂર્વી કાશ્યપ, શ્રવણ-અમિ કાશ્યપ, બેબીસમીક્ષા અને સારાંશે પૂજ્યશ્રીનું ગુરૂપૂજન કર્યું હતું. અને ચેતન્યજીએ પૂજ્યશ્રીને કાંબળી વહોરાવી હતી.

ચાતુર્માસ આયોજક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપે તેમના ઉદ્‌બોધનમાં જણાવ્યું હતું કે રતલામ સંઘ તેમજ યુવક પરિષદ અને તરૂણ પરિષદ ચાતુર્માસની તૈયારીઓમાં જે સાથ સહકાર આપ્યો છે તેનું હું સન્માન કરૂં છુ શ્રી સંઘે ચાતુર્માસનો મોકો આપી માન વધાર્યુ છે.

સ્ટેજ સંચાલન અબ્દુલ સલામ ખોકરે કર્યું હતું. આભાર વિધિ શ્રી સંઘ અધ્યક્ષ ડૉ. ઓસી જૈને કરી હતી.

આ ચલ સમારોહમાં નગરજનોએ નવલેરૂપે અમીભરી નજરે ઓલિયા મહાનાયક રાષ્ટ્રસંતને નિહાળ્યા હતા.

## ચાતુર્માસ પ્રવેશની તસ્વીરી ઝલક

# અન્ય સમાજો દ્વારા પૂજ્યશ્રીનું ભવ્ય સ્વાગત

શ્રી સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોના તા. ૧૦ જુલાઈ-૧૬ ના રોજ રતલામ નગરના ચાતુર્માસ પ્રવેશ પ્રસંગે અન્ય સમાજોએ પૂજ્યશ્રી સપરિવારનું ભવ્ય સ્વાગત કર્યું હતું.

શ્રી ચૌબીસા બ્રાહ્મણ સમાજ વિકાસ સમિતિ દ્વારા બાજના બસ સ્ટેન્ડ ચોક ખાતે ભવ્યાતિભવ્ય સ્વાગત કરાયું હતું. આ પ્રસંગમાં સમિતી અધ્યક્ષ નરેન્દ્ર જોશી, સચિવ મહેશ શર્મા, રાધા વલ્લભ વ્યાસ, દેવેન્દ્ર જોશી, પાંડી જોશી, કૈલાશ વ્યાસ, રાજેશ પુરોહિત, જીતેન્દ્ર હાડા, પ્રકાશ શર્મા, પંકજ દુબે, લોકેશ જોશી, ચેતન શર્મા, મનોહર પાંડે, મહેશ વ્યાસ, નિખિલેશ શર્મા વિગેરે ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

ચાંદની ચોક માં મહેશ્વરી સમાજ દ્વારા ભવ્યાતિભવ્ય સ્વાગત કરાયું હતું. સમાજના અધ્યક્ષ માધવ કાકાની સાથે સમાજજનો મોટી સંખ્યામાં જોડાયા હતા.

લક્કડ પીઠમાં બોહરા સમાજે સૈફી સ્કાઉટ બેંડ થી પૂજ્ય શ્રી સપરિવારનું સ્વાગત કરાયું હતું. અખિલ મુલ્લા હુસેનભાઈ સમીવાલા, સમાજ સચિવ મુલ્લા જુજરભાઈ માસ્ટર, અંજુમન ઈસ્બાહુલ, મુસ્લેમીન કમેટી સદર યાહયાખાન, શહકાજી સૈયદ, અહમદ અલી, નેતા પ્રતિપક્ષ યાસ્મીન શેરાની, ખુર્શીદ અનવર, મંજુરઅલી પટોળી વિગેરે ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

શ્રી ગુરૂસિંધ સભાના જ્ઞાની માનસિંહે... ગુર્જર સમાજના મોહનભાઈ ધમાઈએ... તોપખાનામાં શ્રી પદમવંશી મેવાડાએ... તેલી રાઠોડ સમાજ સમિતિના રતનલાલ ખન્નીવાલે સ્વાગત કર્યું હતું...

## પૂજ્યશ્રીના સ્વાગત માટે વી.આઈ.પી. અતિથિઓ રહ્યા ઉપસ્થિત

મંદસૌર સાંસદ સુધિર ગુપ્તા, ધાર સાંસદ સાવિત્રી ઠાકુર, વિધાયક જગદીશ દેવડા, પેટલાવદ વિધાયક નિર્મલા ભૂરિયા, નિમચ વિધાયક દિલીપસિંહ પરિહાર, જાવદ વિધાયક ઓમ પ્રકાશ સખલેચા, રતલામ ગ્રામિણ વિધાયક મથુરાલાલ ડામર, સૈલાના વિધાયક સંગીતા ચારલે, થાંદલા વિધાયક કલસિંગ ભાભર, મહાપૌર ડૉ. સુનિતા યાદે, જીલ્લા પંચાયત અધ્યક્ષ પ્રમેશ મઈડા, રતલામ ભાજપા જિલ્લાધ્યક્ષ બજરંગ પુરોહિત, મંદસૌર જિલ્લાધ્યક્ષ દેવીલાલ ધાકડ, સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ વાઘજીભાઈ વોરા, શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ રમેશભાઈ ધરૂ, રતલામ શ્રી સંઘ અધ્યક્ષ ઓસીજૈન.

## તન થી ભોપાલ મન થી રતલામ મુખ્યમંત્રી મધ્યપ્રદેશ

મધ્યપ્રદેશ મુખ્યમંત્રી શ્રી શિવરાજજી ચૌહાણ રતલામની સીમા પર પહોંચી ને પણ રતલામ પહોંચી ન શક્યા કારણ કે ખરાબ મોસમના કારણે પ્લેન અહીં લેંડ કરી શક્યું નહીં જેથી તેમને ભોપાલ પરત જવું પડ્યું. મોબાઈલ પર સભાને સંબોધિત કરતાં જણાવ્યું કે હું રતલામ સુધી આવ્યો પરંતુ મોસમ ખરાબ હતી. રતલામની હવાઈ પટ્ટી નાની હતી પાયલોટ ને હવાઈ પટ્ટી સાફ દેખાતી ન હતી એટલા માટે પરત ભોપાલ જવાનો નિર્ણય લેવો પડ્યો. હું તન થી જરૂર ભોપાલમાં છું પરંતુ મનથી અત્યારે જયંતસેન ધામ સમારોહમાં જ છું પૂજ્યશ્રીના દર્શન કરવા જરૂર આવીશ.

# નવોદિત તીર્થ જયંતસેન ધામમાં જાવરાશ્રી સંઘનું દર્શન-વંદન માટે આગમન

રતલામ સાગોદ રોડ સ્થિત નવોદિત તીર્થ જયંતસેન ધામમાં ચાતુર્માસ હેતુ બિરાજિત રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવ શ્રી જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના દર્શન-વંદન માટે જાવરા શ્રી સંઘના ૪૫ સદસ્યોનું રતલામમાં આગમન થયું હતું. સંઘ અધ્યક્ષ શ્રી બાબુલાલ તાંતેડ પટવારી, ઈન્દરમલ દસેડા, પ્રકાશ કાઠેડ, સુરેશ પગારીયા, દિલીપ સિસોદીયા, તેજમલ બોદિનાવાલા અને મહિલા મંડળ સહિત અન્ય ગુરૂભક્તોને પૂજ્યશ્રીએ માંગલિક શ્રવણ કરાવ્યું. આ અવસરે ચાતુર્માસ આયોજક અને વિધાયક ચૈતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા શ્રી સંઘ પ્રતિનિધિઓનું સ્વાગત કરવામાં આવ્યું પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન હેતુ જયંતસેન ધામમાં ગુરૂભક્તોનું નિરંતર આવા-ગમન ચાલી રહ્યું છે. અજજા મોર્ચાના જિલ્લાધ્યક્ષ મોતીલાલ નિનામાં એ પણ પૂજ્યશ્રીના આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા. આ સમયે કાશ્યપે શ્રી નિનામાં દ્વારા આદિવાસી વિસ્તારમં વ્યસન મુક્તિ માટે ચલાવતા અભિયાન માટેની જાણકારી આપી. સાંજે ભાષાવિદ ડૉ. જયકુમાર જલજ, સુરેન્દ્ર છાજેડ ભાજપા ચિકિત્સા પ્રકોષ્ઠના પ્રદેશ સહ સંયોજક ડૉ. રાજેશ શર્માએ પણ જયંતસેન ધામ પહોંચી પૂજ્યશ્રીના દર્શનનો લાભ લીધો.

## રાષ્ટ્રીય પદાધિકારીઓનું બહુમાન

પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન માટે પ્રતિદિન કેટલાય શ્રધ્ધાવુભક્તો જયંતસેન ધામ ખાતે પહોંચી રહ્યા છે. ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા અને અ.ભા. રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય ઉપાધ્યક્ષ વીરેન્દ્ર ભંડારીએ પૂજ્યશ્રીથી આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા આ પ્રસંગે રતલામ શ્રી સંઘ તરફથી રાજેન્દ્ર સુરાણા, અભય બરવેટા, મુકેશ ઓરા, રાજકમલ જૈન વિગેરેએ એમનું બહુમાન કર્યું હતું.

## રક્ષાબંધનના દિવસે સંપન્ન થશે

પ્રાણ-પ્રતિષ્ઠા રતલામ સાગોદ રોડ સ્થિત નવોદિત તીર્થ જયંતસેન ધામમાં નવનિર્મિત જિન મંદિર અને ગુરૂ મંદિરમાં ૧૮ ઓગષ્ટ-૧૬ શ્રાવણ સુદ પૂર્ણિમા તથા રક્ષાબંધન ના પાવન પર્વના દિવસે પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવનું આયોજન કરવામાં આવેલ છે. આ ઘોષણા પૂજ્યશ્રીએ ગુરૂ પૂર્ણિમા પર્વના દિવસે કરી હતી. આના પહેલા ચાતુર્માસ આયોજક અને વિદ્યાક ચૈતન્ય કાશ્યપ પરિવાર તરફથી માતૃશ્રી તેજકુંવરબાઈ કાશ્યપ, શ્રાવણ કાશ્યપ, ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના પારસ જૈન ખેડાવાલા, રાજેન્દ્ર લુણાવત, સુરેશ બોરાણા, નવયુવક પરિષદના પંકજ રાઠોડ અને અન્ય તથા તરૂણ પરિષદના અર્પિત આંમલીયા અને અન્ય સદસ્યોએ પૂજ્યશ્રીને પ્રાણ-પ્રતિષ્ઠા માટે વિનંતી કરી હતી. પૂજ્યશ્રીએ જેનો સહસ્વીકાર કરી આઠમથી સવારે નવકાર મંત્ર આરાધના અને બપોરે અંજન શલાકાની વિધિનો પ્રારંભ કરી અને શ્રાવણી પૂર્ણિમાના પર્વ દિવસે પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ કરવાની ઘોષણા કરી હતી. પૂજ્યશ્રીએ જણાવ્યું હતું કે પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ દરમ્યાન પંચ કલ્યાણક સહિત વિવિધ કાર્યક્રમો સંપન્ન થશે.

## ચાતુર્માસ આયોજકનું ઉષ્માભર્યું સન્માન

ગુરૂ પૂર્ણિમાના દિવસે જંતસેન ધામમાં પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન માટે ગુરૂભક્તોનો મેળો જામી ગયો હતો. પ્રદેશ ઉર્જામંત્રી પારસચંદ્ર જૈન, નગર નિગમ આયુક્ત સોમનાથ ઝારિયા, સ્વતંત્રતા સંગ્રામ સેનાની સુજાનમલ જૈન (રાણાપુર) વિગેરેએ બપોરે પૂજ્યશ્રીના આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા તેના પહેલા પૂર્વ પાર્ષદ પ્રહલાદ પટેલે આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કરી પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં ચાતુર્માસ આયોજક અને વિધાયક ચેતન્યજી કાશ્યપનું શાલ, શ્રીફળ થી ઉષ્માભર્યું સન્માન કર્યું હતું. માણક ચોક સ્થિત સાહુ બાવડી હનુમાન મંદિરના મહંત મહેન્દ્ર મુનીએ પૂજ્યશ્રીના દર્શન કર્યા હતા. ચાતુર્માસ આયોજક કાશ્યપજીને શેખર કાંસવા, અનિલ ચૌરાણા અને બજરંગજી એ અભિનંદન પાઠવ્યા હતા, મહેન્દ્ર મુનિજીનું આયોજક પરિવાર તરફથી કાશ્યપજી અને મનોહર પોરવાલ દ્વારા બહુમાન કરવામાં આવ્યું હતું.

## જયંતસેન ધામમાં ઐતિહાસિક ચાતુર્માસનો પ્રારંભ

રતલામ સાગોદ રોડ સ્થિત જયંતસેન ધામમાં ૧૮ જુલાઈના રોજથી સમર્થ, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિઠાણાના સાનિધ્યમાં ઐતિહાસિક ચાતુર્માસનો પ્રારંભ થઈ ચુકેલ છે. ચાતુર્માસ દરમ્યાન પ્રતિદિન શ્રી ભક્તામર સ્ત્રોત, પ્રવચન અને પ્રતિક્રમણનું આયોજન કરાયેલ છે.

દરમ્યાન કેટલીય તપ-આરાધના પણ કરાવવામાં આવશે. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના આચાર્યશ્રીનું રતલામમાં ૯૩ વર્ષ પછી ચાતુર્માસ થઈ રહ્યું છે અને લઈને શ્રધ્ધાળુઓમાં વ્યાપક પ્રમાણમાં ઉત્સાહ જોવાઈ રહ્યો છે.

ચાતુર્માસ આયોજક અને વિધાયક ચેતન્યજી કાશ્યપે જણાવ્યું કે ચાતુર્માસ દરમ્યાન ૧૮ જુલાઈના રોજથી પૂજ્યશ્રીના સાનિધ્યમાં જયંતસેનધામ ખાતે પ્રતિદિન સવારે ૬ કલાકે શ્રી ભક્તામર સ્ત્રોત પાઠ, ૯ થી ૧૦ વાગ્યા સુધી પ્રવચન સાંજે ૭ કલાકે પ્રતિક્રમણ થશે. પ્રત્યેક રવિવારે સવારે ૯ થી ૧૧ કલાક દરમ્યાન વિશેષ પ્રવચન થશે. પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસમાં તપ-આરાધનાની બધી જ તૈયારીઓ પૂર્ણ થઈ ગઈ છે. જયંતસેન ધામમાં ભવ્યવોટર પ્રુફ પ્રવચન મંડપ, ભોજન મંડપ, ધર્મશાળા, અતિથી ગૃહ અને ઉપાશ્રયનું નિર્માણ થઈ રહ્યું છે. ધર્મ, આધ્યત્મ અને પ્રાકૃતિક, દૃષ્ટિથી પણ પુરા પરિસરને સજાવી દેવાયું છે.

### દર્શનાર્થીઓના આગમનનો ક્રમ ચાલુ

પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન માટે અનુયાયીયો તથા જૈન શ્રી સંઘોનું જયંતસેન ધામમાં નિરંતર આવા-ગમન ક્રમાનુસર ચાલુ થઈ ગયેલ છે. તાજેતરમાં જાવરાથી પ્રદેશ કોંગ્રેસ સચિવ અને પૂર્વ ન.પા. અધ્યક્ષ યુસુફ કડપા, સાંસદ પ્રતિનિધિ અને જિલ્લા ભાજપા કોષાધ્યક્ષ પ્રદીપ ચૌધરી, પ્રકાશ કાઠેડ, શ્રેણીત ધારીવાલ, સુરેશ પગારીયા વિગેરેએ પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન કરી આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા. પૂજ્યશ્રીને જણાવ્યું કે કડવાના કાર્યકાલમાં જાવરાના રતલામી ગેટ થી દાદાવાડી રોડ સુધીના માર્ગના નામને રાજેન્દ્રસૂરી માર્ગ રાખવામાં આવેલ છે. પૂજ્યશ્રીની પ્રેરણાથી શ્રી કડવા ધ્વારા મનમોહન પાર્શ્વનાથ મંદિર રોડ પણ બનવાયો હતો.

## જગતમાં દીપકની જેમ હોય છે ગુરૂ
## નવોદિત તીર્થ જયંતસેન ધામ રતલામ ખાતે
## મનાવી શ્રધ્ધાપૂર્વક ગુરૂપૂર્ણિમા

ગુરૂ જગતના દીપક છે. માર્ગદર્શક છે. અંધારામાં જેવી રીતે દીપકની રોશની રસ્તો બતાવે છે એવી જ રીતે ગુરૂ સંસારનો રસ્તો બતાવે છે. ગુરૂ કુંભારના જેવા હોય છે જે ભલે ઉપરથી પીટતા હોય પરંતુ અંદરથી મજબુત કરે છે. એના મનમાં સદાય કલ્યાણનો જ ભાવ રહે છે. ગુરૂ બનવા પહેલાં શિષ્ય બનવું પડે છે. સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના આ ઉદ્‌ગારો વચ્ચે સાગોદ રોડ સ્થિત નવોદિત તીર્થ જયંતસેન ધામમાં મંગળવારના રોજ ગુરૂપૂર્ણિમાના પર્વને શ્રધ્ધા અને ભક્તિ ભાવથી મનનાવવામાં આવ્યું હતું. ગુરૂના દર્શન-વંદન માટે દિવસભર શ્રધ્ધાળુઓનો મેળો જામ્યો હતો.

સભા મંડપમાં સવારે જીવનમાં એક ગુરૂ હોવા જોઈએ તે વિષય પર પ્રવચન કરાયું. પૂજ્યશ્રીએ જણાવ્યું કે ઘણા લોકો ગુરૂ બનવાની કોશિશ કરે છે. પરંતુ ગુરૂ બનવા પહેલાં શિષ્ય બનવું પડે છે. સારા શિષ્ય બનવા સદાય આજ્ઞાકારી બનવું પડે. ગુરૂ પ્રત્યે સન્માનની ભાવના જીવનમાં આગળ લઈ જવાનું કામ કરે છે. ગુરૂ કંઈ પણ કહે તો પણ તેમના પ્રત્યેની શ્રધ્ધા અને આસ્થા ખતમ થવી જોઈએ નહીં. શ્રધ્ધા અને આસ્થા રહે તો સમજી લોકે બધું જ પામી લે છે. જીવનમાં ક્યારેય એવો ભાવ ન લાવવો જોઈએ કે હું ઈચ્છું તે ગુરૂ કરી દે. ગુરૂ જે ઈચ્છે તે કરીશ તેવો ભાવ રાખવાથી ગુરૂકૃપા ની પાત્રતા થાય છે.

પ્રવચનકાર યુવા મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. એ કહ્યું કે જીવનમાં ગુરૂનું અતિ મહત્વ હોય છે. એના માટે કોઈને ગુરૂ બનાવતા પહેલાં ગંભીરતાથી વિચારવુ જોઈએ બાદમાં બદલાવી શકાય નહીં. ગુરૂ ત્રણ પ્રકારના હોય છે. લોઢાની નાવ, કાગળની નાવ અને લાકડાની નાવ, લોઢાની નાવ એ છે કે પોતે ડુબે છે અને બીજાને ડુબાડે છે. કાગળની નાવ પોતે ડુબતી નથી પણ બીજાને ડુબાડે છે. અને લાકડાની નાવ પોતે ડુબતી નથી અને બીજાને પણ તારી દે છે. નદી પાર કરવા જેવી રીતે લાકડાની નાવની જરૂર છે એવી જ રીતે ભવસાગરને પાર કરવા ગુરૂની જરૂર છે. જ્ઞાનિઓએ કહ્યું છે કે અહંકાર અને સ્વયંને આ બન્ને ગુરૂને અર્પણ કરી દેવું જોઈએ. વ્યક્તિ પોતે તો સમર્પિત થઈ જાય છે. પરંતુ અહંકાર સમર્પિત થવા દેતો નથી. એના માટે ચાતુર્માસ જીવન પરિવર્તન કરી બધું જ સમર્પિત કરવાનો સંદેશ આપે છે. ચાતુર્માસ સમર્પિત શિષ્ય બનાવાનો સુઅવસર છે. જો ક્યારે શિષ્ય શિષ્ય નથી બનતા એ ક્યારેય ગુરૂ નથી બની શકતા. ચાતુર્માસ દરમ્યાન સહુ શ્રેષ્ઠથી સર્વોત્તમ શિષ્ય બનવાનો પ્રયાસ કરે. આ અવસરે રાણાપુરથી પધારેલ સુરેશ સમીર પ્રતાપગઢના રાજેન્દ્ર કરણપૂરિયા એ ગુરૂ વંદના પ્રસ્તુત કરી હતી. જૈન પબ્લીક સ્કુલના ૧૫ વિદ્યાર્થીઓએ સંગીત શિક્ષક દીપક હાડાના નેતૃત્વમાં ગીત પ્રસ્તુત કરેલ. દાદા ગુરૂદેવની આરતી અને ગુરૂ પુજાનો લાભ લાલ ચંદજી રતનલાલજી સુરાણા પરિવારે લીધો હતો. સંચાલન નવયુવક પરિષદના રાજકમલ જૈને કર્યું હતું.

## રાત્રે અદકેરા આકર્ષણથી રોશની રેલાવી રહ્યું છે જયંતસેન ધામ

સમર્થ, યુગપ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના ચાતુર્માસ સ્થળ જયંતસેનધામ સાગોદ રોડનું આકર્ષણ બની રાત્રે ઝગમગાટ રોશની રેલાવી રહ્યું છે. ચાતુર્માસ આયોજક અને વિધાયક ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવારે એને દર્શનીય બનાવવામાં કોઈ જ કસર છોડી નથી. રાત્રે આ નવોદિત તીર્થ જયંતસેન ધામની છટા જ નીરાલી બની જાય છે.

પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશ બાદ આ ધામમાં ભક્તોનો મેળો જામવા માંડ્યો છે. પ્રતિરોજ સેંકડો ભક્તોના સ્વાગત માટે આ નવોદિત તીર્થ ને ચાર વિદ્યાક્ષેત્ર માં માત્ર બે મહિનામાં વિકસિત કરવામાં આવેલ છે. જેમાં જિન મંદિર, ગુરૂ મંદિર, ઉપાશ્રય, ધર્મશાળા, અસ્થાયી આવાસ વ્યવસ્થા અને બે ભવ્ય મંડપની રચના કરાયેલ છે. રાત્રે પુરા તીર્થ પરિસરમાં આકર્ષક લાઈટ રોશનીની સજાવટ સહુનું મન મોહી લે છે. તીર્થના ખુલ્લા પરિસરમાં મખમલી ઘાસ પર ઝાંખીની સજાવટ કરાય છે. અહીંની મનોરમ ચિત્રકારી પણ સહુને લોભાવી રહી છે.

## પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં શરૂ થશે તપસ્યા

પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં આરાધકોએ જપ-તપનો ક્રમ શરૂ કરી દીધો છે. આરાધકો પ્રવચન દરમ્યાન પ્રતિદિન તપસ્યાના પચ્ચખાણ લઈ રહ્યા છે. પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન માટે પણ આરાધકોની હોડ લાગી છે. બુધવારના રોજ પણ કેટલાય સ્થળોએથી આવી જયંતસેન ધામ પહોંચી પૂજ્યશ્રી પાસેથી આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા.

રતલામમાં ૯૩ વર્ષ પછી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના આચાર્યનું ચાતુર્માસ હોવાથી આરાધકોમાં ધર્મ-આરાધના પ્રત્યે અપાર ઉત્સાહ છવાઈ ગયો છે. પૂજ્યશ્રીના સાનિધ્યનું સૌભાગ્ય માની કેટલાય આરાધકો તપ-આરાધનામાં જોડાઈ ગયા છે. માક્ષમણની આરાધના ૨૪ જુલાઈથી, ૨૧ ઉપવાસ, ૨ ઓગષ્ટથી ૧૬ ઉપવાસ, ૭ ઓગષ્ટ અને ૧૧ અને ૮ ઉપવાસની તપસ્યા, ૧૨ ઓગષ્ટથી પ્રારંભાશે. સમસ્ત તપસ્વીઓના સામૂહિક પારણા ૨૩ ઓગષ્ટના રોજ કરાવવામાં આવશે.

## અ.સૌ. વર્ષાબેન વેદલીયાનો સ્વર્ગવાસ-ડીસા

જીવદયાપ્રેમી હસમુખભાઈ વેદલીયા-ડીસાવાળાના સુશ્રાવિકા અ.સૌ. વર્ષાબેન વેદલીયાનો ૪૯ વર્ષની ઉંમરે આકસ્મિક સ્વર્ગવાસ થયેલ છે. હસમુખભાઈ સાથેના ૩૧ વર્ષના સહવાસમાં તેઓ સતત આરાધનારત હતા. વર્ધમાન તપના પાયાથી ૧૨ ઓળી, નવપદની ઓળી, પ્રથમ-દ્વિતીય ઉપધાન તપ, નવ્વાણુ યાત્રા (આ.ભ.શ્રી.વિ. જયંતસેન સૂરીશ્વરજી મ.સા. ની નિશ્રામાં), ભારતભરના ૧૦૮ પાર્શ્વનાથ તીર્થોમાંથી મોટા ભાગના તીર્થોની વિધિસર યાત્રા, શિખરજી આદિ કલ્યાણક ભુમિઓની સતત સ્પર્શનાથી તેમનું જીવન ધર્મમય બનેલુ હતું. સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની સેવા, સાધર્મિકની સેવા અને હસમુખભાઈના કલ્યાણમિત્રોની તેઓ ખુબ જ ભક્તિ કરતા હતા. સ્વર્ગવાસના આગળના દિવસે પણ શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથદાદાની ભાવપુર્વક સેવા-પુજા-યાત્રા કરી હતી. સ્વર્ગવાસ દિન તા. ૩-૭-૨૦૧૬ ના દિવસે હસમુખભાઈ જીરાવાલા તીર્થની મીટીંગમાં હતા અને ત્યારે જ બપોરે ૧૧-૩૦ વાગે અચાનક તેમને હૃદયરોગનો ભારે હુમલો આવ્યો. દિકરો સુદર્શન ડૉક્ટરને બોલાવે તે પહેલા જ પુ. મુનિરાજ શ્રી હીતયશ વિ.મ.સા. ઘરે ગોચરી માટે પધાર્યા. તેમને ખ્યાલ આવી જતા માંગલિક શ્રવણ આદિ દ્વારા વર્ષાબેનને અંતિમ નિર્યામણા કરાવી.

મહાત્માએ છેલ્લે કહ્યું કે આત્મા અને દેહ અલગ છે. દેહની માયા છોડી આત્મભાવમાં લીન થાઓ. તેમના આ શબ્દોનો સ્વીકાર કરીને થોડીક જ ક્ષણોમાં અંદાજે ૧૨:૦૫ મિનીટે દેહ છોડી પરલોક ગમન કર્યું.

---

## આકાશની ઓળખ

આ અવસર્પિણી કાળના પ્રથમ તીર્થંકર શ્રી ઋષભદેવે અહિંસા પ્રધાન દયામય તપ ધર્મની પરૂપણા બતાવેલ જે જૈન ધર્મના નામથી વિખ્યાત છે.

શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણ પછી ભરત ક્ષેત્રમાં સાધનાની સર્વોચ્ચ પરંપરા ઓછી થઈ. અપસર્પિણી કાળનો પાંચમો આરો શરૂ થયો શ્રી ગૌતમસ્વામીજી સુધર્માસ્વાજી, જંબૂસ્વામીના નિર્વાણની સાથે જ કેવલજ્ઞાન ધારીઓનો ક્રમ સમાપ્ત થઈ ગયો. સાથે સાથે બીજી અનેક સિધ્ધીઓ લૂપ્ત થતી ગઈ.

સમર્થ મુનિપુંગવોએ જૈન શાસનની દેખરેખ રાખી જૈન શાસન સાચવવાના અનેક અથાગ પ્રયત્નો કર્યા આચાર-વિચાર, તપ-ત્યાગ, જ્ઞાન-ધ્યાનમાં સર્વશ્રેષ્ઠ શ્રમણ સંઘ પર સમયના પ્રભાવથી આચાર શિથીલાચારની કાળી છાયા ઉભરાવવા લાગી. આ સમયે સમર્થ શાસન-પ્રભાવક અને યુગ પ્રભાવક યુગ સંત પુરૂષોએ ક્રિયોધ્ધાર કરી તેનું નિવારણ લાવવાના ઘનિષ્ઠ પ્રયત્નો કર્યા. આ પ્રકારની પરંપરામાં ધર્મ શાસનને વ્યવસ્થિત રાખવા ક્રિયોધ્ધારક આચાર્ય વર્યોમાં તપોગચ્છીય શ્રી જગતચંદ્ર સૂરિ, ચૈત્રવાલ ગચ્છીય શ્રી દેવભદ્ર ઉપાધ્યાય, શ્રી આનંદવિમલ સુરિજી, પન્યાલશ્રી સત્યવિજયજી વિગેરે અનેક ધુરંધર આચાર્યોએ અનેક ઉપસર્ગ સહન કરીને ત્યાગ વિરાગ અને આત્મશુધ્ધિની પરંપરાને સજીવ રાખી પ્રભુ મહાવીરના સિધ્ધાંતોને વેગ આપ્યો. આ પરંપરામાં વિશ્વપૂજ્ય વિશ્વ વિખ્યાત શ્રી અભિધાન રાજેન્દ્ર બૃહદ વિશ્વકોશ નિર્માતા આચાર્ય શ્રીમદવિજય શ્રી રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મહારાજા થયા.

જેઓશ્રીનો જન્મ સંવત ૧૮૮૩ ને પોષ સુદી-૭ તેમજ સ્વર્ગવાસ દિવસ સંવત ૧૯૬૩ ને પોષ સુદી-૭ હતો. ૮૦ વર્ષ નું સફળ ઉત્કૃષ્ટ તપમય, સાહિત્યમય, ધર્મમય જૈન આચાર્ય તરીકે જીવન વિતાવ્યું.

નવિનભાઈ એમ. સંઘવી
પ્રમુખ : શ્રી રાજ રાજેન્દ્ર પ્રકાશન ટ્રસ્ટ-અમદાવાદ

# ચાતુર્માસ નિમિતે નવનિર્મિત ગીત સાંભળો...

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ઠાણાનું શ્રી સંઘ રતલામની આજ્ઞાથી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા આયોજિત ભવ્ય ચાતુર્માસ થવા જઈ રહ્યું છે. આ ચાતુર્માસ નિમિતે નવનિર્મિત ગીત સાંભળો

પ્રેરણા દાતા – પૂજ્યશ્રીના યુવા સુશિષ્યરત્ન ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા.

ગીતકાર – પ્રદીપ મોહનલાલજી ઢાલાવત

(ચાણોદ / જોગેશ્વરી)

મ્યુઝીક કંપની – નાકોડા દરબાર મ્યુઝીક

---

## નવકાર મહામંત્ર આરાધના
## તા. ૧૦-૮-૨૦૧૬ થી ૧૮-૮-૨૦૧૬ સુધી
## જયંતસેન ધામ – રતલામ

–: આયોજક :–

ચેતન્યકુમાર કાશ્યપ અને વિધાયક – રતલામ

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ – રતલામ

આરાધનામાં ભાગ લેવા આરાધકોને વિનંતી

નામ – મોબાઈલ નંબર સરનામું ઉમ્રની વિગત

તા. ૧-૮-૨૦૧૬ સુધી જાણકારી આપવા વિનંતી

–: સંપર્ક :–

જયંતસેન ધામ – ૦૮૯૮૯૯૬૦૬૦૬, ૦૯૧૧૧૩૯૯૧૧૧

મણી જૈન – ૦૯૩૨૯૩૧૧૬૧૧

વિનોદ સંઘવી – ૦૯૪૨૫૦૪૫૯૫૩

---

## –: વિશેષ સુચના :–

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના આજ્ઞાનુવર્તી સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોના પુરા સરનામા સાથેની ચાતુર્માસ યાદી આવતા માસના ગુર્જર જૈન જ્યોત વિભાગમાં પ્રસિધ્ધ કરવામાં આવશે.

# પૂ. આ રવિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ના દેવલોક ગમન પર પૂજ્યશ્રીએ પાઠવ્યો સાંત્વના સંદેશો

પૂ. મુનીરાજશ્રી ૠષભચંદ્રવિજયજી મ.સા. મુનિ. શ્રી હિતેશચંદ્ર વિજયજી મ.સા., મુની શ્રી ચંદ્રયશ વિજયજી મ.સા., આદી શ્રમણ શ્રમણી વૃંદ સુખશાતા માં હશો.

અત્યારે સમાચાર મળ્યાં કે પૂ. આચાર્ય શ્રી રવિન્દ્ર સૂરીશ્વરજી મ.સા. દેવલોક પામ્યા છે. સાંભળીને વિશ્વાસ જ ના થયો, પણ વાસ્તવિકતા તો સ્વીકારવી જ રહી.

ખુબ જ નાની ઉંમરમાં ચાલ્યા જવાની આ દુઃખદ ઘટના છે. હમણાં થોડા સમય પૂર્વે જ મોહનખેડામાં મિલન થયું હતું. તેઓની આંતરિક ભાવના જાણીને પ્રસન્નતા થઈ હતી.

તેઓની સરળ સ્વભાવ તથા સહજતા પણ સુંદર હતી. તેઓનો સ્વર્ગગમન થી આપસૌએ દુઃખ થવું સ્વાભાવિક છે.

આપ સૌ ખુબ હિંમત રાખો તથા બીજાઓને પણ સાંત્વનના આપો.

મોહનખેડા ટ્રસ્ટ મંડળને આ પ્રસંગથી અંતરમાં દુઃખ થયું જ હશે. તેઓના માર્ગદર્શન થી તીર્થના વિકાસના કાર્ય ખુબ સારા ચાલી રહ્યા હતા.

હું તેઓની આત્મશાંતિની હૃદયથી કામના કરૂ છું. આપ સૌ પણ તેઓના આત્મશ્રેયાર્થે આરાધના જાપ વગેરે અનુષ્ઠાન કરાવો.

ખુબ શાતા માં રહેજો. કોઈ કાર્ય હોય તો જરૂર કહેજો. સર્વ શ્રમણ શ્રમણીવૃંદ ને શાતા પૂછજો. ટ્રસ્ટ મંડળને ધર્મલાભ કહેજો.

બડનગર
૦૨/૦૭/૨૦૧૬

જયંતસેન સૂરી

---

## -: ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલિ :-

સમાજ પ્રેમી, સંઘ પ્રેમી, ગચ્છ પ્રેમી તેમજ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવ શ્રીમદ વિજયજયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના પ્રખર ગુરૂભક્ત થરાદ નિવાસી અમાદાવાદ સ્થિત...

**હિંમતલાલ ખુબચંદભાઈ દેસાઈ**

નું તાજેતરમાં અમદાવાદ ખાતે દુઃખદ અવસાન થયેલ છે. જે સદ્‌ગત આત્માને પરમકૃપાળુ પરમાત્મા ચિર શાંતિ અર્પે એજ અભ્યર્થના સહ...
ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલિ અર્પે છે.

# સુધારો

જુલાઈ-૨૦૧૬ ના શાશ્વત ધર્મ હિન્દ માસિકના ગુર્જર જૈન જ્યોત વિભાગમાં શ્રી રાજ રાજેન્દ્ર પ્રકાશન ટ્રસ્ટના ઉ.પ્રમુખશ્રી વાઘજીભાઈ ગગલદાસ વોરા (વિશ્વાસ) દ્વારા શ્રી અભિધાન રાજેન્દ્રકોષની જાહેર ખબર આપી હતી જેમાં શરત ચૂકથી પ્રાપ્ત સ્થાન લખવાનું રહી ગયેલ તેમજ શ્રી અભિધાન રાજેન્દ્ર શુભેચ્છા મુલ્ય ૫૦૦૦/- અંકે પાંચ હજાર છપાઈ તે સુધારી રૂા. ૬૦૦૦/- અંકે છ હજાર સમજવી તેમજ પ્રાપ્ત સ્થાન શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન તીર્થ દર્શન મ્યુઝીયમ મોહનખેડા રોડ મ.પ્ર.

શરતચુક બદલ ક્ષમા

---

# જિંદગી બદલી નાખે તેવું કડવું સત્ય

જ્યારે ચકલી જીવિત રહે છે ત્યારે તે કીડીઓને ખાય છે, ચકલી જ્યારે મરે છે ત્યારે કીડીઓ એને ખાઈ જાય છે...

એટલા માટે એ વાતનું ધ્યાન રાખો કે

**"સમય અને સ્થિતિ"**

ક્યારે પણ બદલાઈ શકે છે...

માટે

- ક્યારે કોઈનું અપમાન ન કરવું.
- ક્યારેય કોઈને નીચા ન ગણવા.
- તમે શક્તિશાળી છો પણ સમય તમારાથી પણ વધારે શક્તિશાળી છે.
- કંઠ આપ્યો કોયલને તો, રૂપ લઈ લીધું.
- રૂપ આપ્યું મોરનું તો, ઈચ્છા લઈ લીધી.
- આપી ઈચ્છા ઈન્સાનને તો, સંતોષ લઈ લીધો.
- આપ્યો સંતોષ સંતને તો, સંસાર લઈ લીધો.

**ન કરશો ક્યારે અભિમાન, ભગવાને મારી-તમારી જેવા કેટલાને માટીથી બનાવ્યા છે, અને માટીમાં મેળવી નાખ્યા છે.**

ક્વોલીટી સક્સેસ

---

બ્રજેશ બોહરા નાગદા શ્રી સંઘ અને પરિષદના રાષ્ટ્રીય પ્રચારક દ્વારા સમાચાર પ્રાપ્ત

સંકલન : સુરેશ સંઘવી

# कुमकुम सने पगलिये

## आचार्य श्री का संकल्प हुआ पूर्ण किये
## गुरुदेवश्री के दर्शन

**राजगढ़** । प.पू. राष्ट्रसंत सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का भव्यातिभव्य प्रवेश श्री मोहनखेड़ा तीर्थ एवं श्री जयंतसेन म्युजियम पर हुआ । इस अवसर पर प्रातः की शुभ बेला में श्री जय तलहटी से संकल्प पूर्णता यात्रा प्रारंभ हुई । जहाँ पर राजगढ़ नगर की ओर से नगर परिषद अध्यक्षा श्रीमती मधुलिका सुरेश तांतेड़ ने एवं श्री जय तलहटी पर निर्माता श्री सराफ परिवार ने गहुंली कर आचार्यश्री को वधाया । संकल्प यात्रा के प्रारंभ में श्री राजेन्द्र महिला मण्डल एवं श्री जयंतसेन बहुं मण्डल की महिलाएँ कलश लेकर चल रही थीं । पश्चात् आज से आयोजित होने वाले मधुकर संस्कार ज्ञानायतन शिविर के 400 बच्चों ने कतारबद्ध होकर अक्षत से आचार्यश्री की अगुवानी कर वधाया। वहीं उत्साही युवक जय-जयकार राष्ट्रसंत की जय-जयकार के जयघोष के साथ नृत्य करते हुए चल रहे थे । शोभायात्रा जयंतसेन म्यूजियम के समीप पहुँची जहाँ पर ट्रस्ट मण्डल ने गहुंली कर आचार्यश्री को वधाया। पश्चात् श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पहुंचने पर श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट

मण्डल की ओर से अगुवानी कर आचार्यश्री को गहुली कर वधाया गया ।

**गुरु का दादा गुरु से हुआ मिलन –** राष्ट्रसंतश्री के साथ हजारों गुरुभक्तों ने मूलनायक दादाश्री आदिनाथ भगवान के दर्शन वंदन करने के पश्चात् दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के समाधि मंदिर पर आचार्यश्री ने पहुँचकर आत्मियता से दर्शन वंदन कर अपने संकल्प की पूर्णता की । पश्चात् आचार्यश्री ने अपने गुरु आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के समाधि मंदिर पर दर्शन वंदन कर उपस्थित जनमैदनी को मांगलिक श्रवण करवाई ।

**शिविर का उद्घाटन –** राष्ट्रसंतश्री मोहनखेड़ा तीर्थ से दर्शन वंदन के पश्चात् श्री जयंतसेन म्युजियम में पधारे । जहाँ पर मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान व दादा

गुरुदेवश्री के दर्शन वंदन के पश्चात् मधुकर संस्कार ज्ञानायतन शिविर का उद्घाटन समारोह में निश्रा प्रदान की । समारोह का शुभारंभ आचार्यश्री के मंगलाचरण व अतिथि श्रीसंघ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांतिलाल दसेड़ा, मध्यप्रदेश श्रीसंघ अध्यक्ष श्री सुरेश तातेड़, म्यूजियम ट्रस्ट मण्डल श्री मिलापचंद चौधरी एवं शिविर लाभार्थी श्री सूर्यप्रकाश भण्डारी एवं ट्रस्टीगण ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया । इसके पश्चात् गुरुवंदन क्रिया विश्व कोरडिया डीसा ने व स्वागत गीत श्री सिद्धार्थ तलेसरा पारा एवं स्वागत् उद्बोधन ट्रस्ट मण्डल की ओर से श्री चौधरी ने किया।

इस अवसर पर आचार्यश्री ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों में धार्मिक शिक्षा एवं अच्छे संस्कार से सृजित करने का एकमात्र सर्वश्रेष्ठ साधन है शिविर । इस हेतु मेरे में भाव जागृत हुआ कि समाज की नई पीढ़ी को धार्मिकता की ओर जोड़ने हेतु शिविर का आयोजन किया जाना चाहिये।

मेरी इस भावना को मुनिश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा., मुनिश्री प्रसिद्धरत्नविजयजी म.सा. व मुनिश्री जिनागमरत्नविजयजी म.सा. ने शिरोधार्य कर अभी तक चार शिविरों का सफलतम आयोजन कर आज पाँचवे शिविर का आयोजन हो रहा है । शिविर बच्चों को अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने का माध्यम है ।

आचार्यश्री द्वारा आगामी ज्ञानायतन शिविर रतलाम चातुर्मास के दौरान करने की घोषणा की । इस अवसर पर मुनिश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा., मुनिश्री प्रसिद्धरत्नविजयजी म.सा. व मुनिश्री जिनागमरत्नविजयजी म.सा., श्री तांतेड़, ट्रस्ट मण्डल संरक्षक श्री सेवंतीभाई मोरखिया, श्री चिराग भंसाली, श्री मोहित तांतेड़, शिविर प्रभारी श्री पक्षाल कोरडिया ने संबोधित कर ज्ञानायतन शिविर संबंधित जानकारी दी । इसके पश्चात् आचार्यश्री को वासक्षेप पूजन व कांबली लाभार्थी श्री मिलापचंद जेठमल चौधरी परिवार बैंगलोर ने अर्पण की । कार्यक्रम का संचालन ट्रस्टी श्री प्रकाश तलेसरा व अंत में आभार ट्रस्ट मण्डल सचिव श्री मुकेश जैन ने व्यक्त किया। इस संकल्प यात्रा महोत्सव पर पधारे गुरुभक्तों को प्रभावना एवं सकल श्रीसंघ को नवकारसी एवं स्वामीवात्सल्य ट्रस्ट मण्डल की ओर से रखा गया ।

**श्रद्धांजली–** राष्ट्रसंतश्री द्वारा गुरुवार को टाण्डा के तरुण परिषद के सदस्य श्री मुकेश डुंगरवाल एवं श्री शशांक लोढ़ा की अकस्मात दुर्घटना में निधन होने पर श्रद्धांजली देते हुए मौन रखकर 13 नवकार का जाप कर श्रद्धांजली अर्पित की गई ।

**राजगढ़।** राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. व वरिष्ठ मुनिराजश्री नित्यानंदविजयजी म.सा. व साधु साध्वी मण्डल जैन तीर्थ श्री भोपावर तीर्थ से विहारकर राजगढ़ नगर की सीमा में पहुंचे तब प्रथम गहुंली श्रीसंघ प्रदेश अध्यक्ष श्री सुरेश तातेड़, राजगढ़ श्रीसंघ अध्यक्ष श्री मणिलाल खजांची, परिषद राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री दिनेश मामा, परिषद शाखा अध्यक्ष श्री विनोद डांगी एवं गणमान्यजन ने की । पश्चात् आचार्यश्री परिषद भवन पहुंचे । जहाँ अक्षत गहुंली से नवकारसी लाभार्थी मोदी परिवार ने वधाया। इस अवसर पर भव्य मंगल प्रवेश शोभायात्रा का आयोजन किया गया । इसमें आगे धर्मध्वजा, अश्व, डी.जे. गाड़ी व मंगल कलश लेकर विभिन्न मंडलों की महिलाएँ चल रहीं थीं । गुरु भक्ति की संगीतमय लहरियों से दि जनता बैंड सभी को आकर्षित कर रहे थे । एक ओर तरुण परिषद के उत्साही युवक एवं राजेन्द्र जैन पाठशाला के बच्चे नासिक ढोल-नगाड़े की थाप पर नाचते हुए राष्ट्रसंतश्री के जय जयकार का जयघोष कर रहे थे । वहीं दूसरी ओर बालिका परिषद् की बालिकाएँ कश्मीरी ढोल की थाप पर नृत्य करते हुए चल रहीं थीं । आचार्यश्री को जगह-जगह जैन जैनेत्तरजनों ने अक्षत गहुंली से वधाया।

परिषद् भवन पर बालिका परिषद एवं महावीरजी मंदिर पर पाठशाला के विद्यार्थीयों ने एवं नगर के प्रमुख मार्गों में आचार्यश्री के स्वागत हेतु आकर्षक रंगोली बनाई गई थी । शोभायात्रा राजेन्द्र भवन पहुंची जहाँ पर राष्ट्रसंत आचार्यश्री की हुबहु चित्र रांगोली बनाई गई जो आकर्षण का केन्द्र रही जिसकी आचार्यश्री एवं समाजजनों ने खूब सराहना की । धर्मसभा का शुभारंभ आचार्यश्री के मंगलाचरण से हुआ । गुरुवंदन किया श्री दिलीप पुराणी ने, स्वागत गीत कु. नेहा डांगी व श्रीमती सोनू लोढ़ा ने, स्वागत उद्बोधन श्री सुरेश तांतेड़ ने व्यक्त किया । श्री आजाद भण्डारी ने आगामी गुरु सप्तमी आचार्यश्री की निश्रा में हो इसकी विनंती की । आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा कि चौरासी लाख जीवों में हमें यह मानव जीवन पुण्य से मिला है , इसे धर्म आराधना एवं पुण्य उपार्जन के कार्यों में लगाना चाहिए । धर्म आराधना करते हुए अपने विचारों को भी श्रेष्ठतम रखें।

आज हमारे आचार व विचारों में

बदलाव आया है इस आधुनिकता के माहौल में जो हमें इधर-उधर भटका रही है।

आचार्यश्री ने फरमाया कि हमें परस्पर व मैत्री भावना रखकर विवाद वाली बातों को दूर रखना चाहिए एवं अच्छे आचार व विचारों को अपने जीवन में उतारकर इस मानव जीवन को उत्तम बनाना है साथ ही तपागच्छ के आचार्य श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. का भी राजगढ़ नगर में मंगल प्रवेश हुआ । इस अवसर पर तपागच्छ आचार्यश्री ने कहा कि मैं आज बहुत ही अभिभूत हूँ कि मुझे आचार्य श्री जयंतसेनजी के साथ नगर प्रवेश का अवसर मिला । यहाँ पर चातुर्मास प्रवेश से भी अच्छा माहौल था जिसे देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ एवं मुनिश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने भी धर्मसभा को संबोधित किया । राजगढ़ श्रीसंघ की ओर से दोनों आचार्यों को कांबली अर्पण की गई एवं श्रीसंघ की नवकारसी के लाभार्थी श्री मथुरालाल, घेवरमल, अमृतलाल मोदी परिवार का श्रीसंघ की ओर से बहुमान किया गया । कार्यक्रम का संचालन श्री लोकेन्द्र मोदी व आभार श्री तेजकुमार खजांची ने माना एवं शोभायात्रा का संचालन नवयुवक व तरुण परिषद के सदस्यों ने किया । कार्यक्रम के पश्चात् त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ की ओर से सकल जैन श्रीसंघ के स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया ।

आचार्यश्री के स्वागत में नगर को दुल्हन की तरह सजाया गया था एवं जगह-जगह राष्ट्रसंतश्री के चित्र लगाए गए। रात्रि में श्री राजेन्द्रसूरि स्वर्गारोहण पुण्य भूमि पर बालिका परिषद द्वारा आकर्षक रांगोली एवं तरुण परिषद् द्वारा दीपक से सजावट की गई ।

## मुनिराजद्वय का भव्य प्रवेश

**झकनावद (मनीष कुमठ)।** मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. व मुनिराज श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. दिनांक 1 जुलाई 2016 को मोहनखेड़ा तीर्थ धाम से विहार करते हुए झकनावदा नगर पधारे जहाँ झकनावदा श्रीसंघ, तरुण परिषद्, महिला परिषद् व तेरापंथ युवक परिषद् ने उन्हें ढोल के साथ बदाकर उत्साहपूर्वक नगर प्रवेश कराया । प्रवेश के पश्चात् मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. व मुनिराजश्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. के प्रवचन हुए ।

इस अवसर पर राजगढ़, पेटलावद, रायपुरिया, बनी, नागदा जं. व अनेक श्रीसंघों ने पधार कर लाभ लिया। दोपहर में मुनिद्वय की निश्रा में धर्मचर्चा हेतु मिटिंग का आयोजन किया गया । मिटिंग में झकनावदा श्रीसंघ के श्री कन्हैयालाल माण्डोत, कनकमल माण्डोत, श्री शैतानमल कुमट, श्री मनोहरलाल राठौर रायपुरिया, श्री प्रकाश माण्डोत, श्री विमल सेठिया आदि सदस्यगण उपस्थित थे ।

# अवसर भगवान की तरह है

**विजयवाड़ा (आं.प्र.)।** सुविशाल गच्छाधिपति, युग प्रभावक श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी , मुनिराजश्री भुवनरत्नविजयजी म.सा. का विजयवाड़ा (आं.प्र.) नगर में भव्य चातुर्मास प्रवेश हुआ।

प्रवेश के पश्चात् श्री संभवनाथ राजेन्द्र बालिका परिषद् द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया एवं विजय राठौर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी रामाणी द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया व कु. दक्षा अशोकजी सौलंकी तथा मेहुल संजयजी संघवी ने अपने हृदय के उद्गार प्रकट किये। तत्पश्चात् मुनिश्री संयमरत्नविजयजी ने चातुर्मास की महत्ता बताते हुए प्रवचन में कहा कि जो हमें नहीं मिला है, उसका गम करने की अपेक्षा हमें जो मिला है, उसकी खुशी मनानी चाहिए। युवाओं के लिये अवसर भगवान की तरह है, क्योंकि शुभ अवसर बार-बार नहीं आते। अवसर को पहचानने वाले के जीवन में ही प्रभु वाणी असर करती है।

अवसर की पहचान पात्रता बढ़ाती है। अगर अवसर में अस्वर चलता है, तो अवसर हमारे हाथों से चला जाता है। चातुर्मास का अवसर आया है, तो हमें जागृत होकर अवसर को सुस्वर में निर्मित करना है। स्वामीवात्सल्य के पश्चात् शाम को श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन हॉस्पिटल का उद्घाटन सकुशल सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य हो कि पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के तत्वावधान में स्वतंत्र रूप से मुनि के रूप में मुनिश्री संयमरत्नविजयजी व भुवनरत्नविजयजी के प्रथम स्वतंत्र चातुर्मास का लाभ विजयवाड़ा संघ को प्राप्त हुआ है।

उक्त जानकारी श्री सुजीत सौलंकी ने दी।

---

**नैल्लोर।** दक्षिण भारत की पुण्यधरा स्वर्णनगरी श्री नैल्लोर (आ.प्र.) नगर की पावन धरा पर दिनांक 13 जुलाई 2016 को साध्वीश्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 का भव्य चातुर्मास प्रवेश हुआ। समाजजनों ने जगह-जगह गहुंली कर पूज्य साध्वीजी को बधाया। इस अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, नैल्लोर के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

# श्रद्धांजलि अर्पित की

**पारा।** श्री राजेन्द्रसूरी बाल विकास समिति द्वारा संचालित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर केशरबाग के प्रधानाचार्य दिनेश कुमार इटावदिया, आचार्य परिवार तथा भैया/बहनों ने संचालक समिति के अध्यक्ष प्रकाश छाजेड़ की उपस्थिति में एक शोक सभा का आयोजन किया। शोकसभा में आचार्य रवींद्र सूरीजी के देवलोक गमन पर भावांजलि अर्पित की गई। सभा को संबोधित करते संस्था के व्यवस्थापक प्रकाश तलेसरा ने आचार्यश्री के जीवन पर प्रकाश डाला।

# मुनिराज का भव्य प्रवेश

**कुशलगढ़ (राज.)।** मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा., मुनिराज विद्वद्वरत्न विजयजी म.सा. का मोहनखेड़ा तीर्थ से उग्रविहार कर राजस्थान की धन्यधरा कुशलक्षेम कुशलगढ़ पहुंचकर दिनांक 14 जुलाई 2016 गुरुवार को पहुंचे वहाँ कुशलगढ़ श्रीसंघ ने बेण्ड बाजों, ढोल ताशों के साथ पुज्य मुनिद्वय की आगवानी की। जिसमें मुनिद्वय की दिगम्बर, श्वेताम्बर, तेरापंथ, स्थानकवासी आदि समाज ने एकत्रित होकर आगवानी की। भव्य प्रवेश में श्री अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद्, महिला परिषद्, बालिका परिषद् एवं नवयुवक परिषद् कुशलगढ़ अपनी अपने गणवेश में नाचते, झुमते एवं गरबे खेलते नजर आये। मुनिद्वय की कुशलगढ़ नगर के प्रमुख मार्गों पर समाजजनों गहुंली कर स्वागत किया व शोभायात्रा श्री राजेन्द्र जयन्त उपाश्रय पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तीत हो गई। वहाँ पूज्य मुनिद्वय की कुशलगढ़ एवं सारंगी बालिका मण्डल ने गुरुदेव के स्वागत् गितीका की प्रस्तुति पर नृत्य कर आगवानी की। इस अवसर पर सारंगी, झकनावदा, करवड़, बामनिया, दाहोद, सूरत, रतलाम, महीदपुर, इंदौर, मेघनगर, राजस्थान से भीलवाड़ा, शिवगंज, भावनगर आदि श्रीसंघों ने बड़ी संख्या में पहुंचकर पूज्य मुनिद्वय के दर्शन वंदन किया। इस अवसर पर राजस्थान मेवाड़ से अजैन भक्तों ने भी बड़ी संख्या में पहुंचकर मुनिद्वय के दर्शन किये।

इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश भाई मुंबई से पधारे जो कि इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथी के रूप में रहे, साथ ही अ.भा.श्री रा. जैन तरूण परिषद्

के राष्ट्रीय मंत्री राजेन्द्रजी पटवा, उज्जैन, कुशलगढ़ क्षेत्रीय विधायक भीमाभाई डामोर, कुशलगढ़ नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रेखाबाई जोशी ने मुनिद्वय के प्रवेश में पधारकर दर्शन वंदन किये । कुशलगढ़ श्रीसंघ ने दूर-दराज से पधारे समस्त श्रीसंघों का मंच से माला श्रीफल भेंट कर बहुमान किया । इस अवसर पर मुनिद्वय को बामनिया नाकोड़ा सेठ ने काम्बली का चढ़ावा लेकर काम्बली भेंट करने का लाभ लिया।

## जैन समाज का गौरव बढ़ाया

**मोहीत जैन (शिवगंगा जिला अलिराजपुर, जोबट के संयोजक मंत्री)** ने पूज्य मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजय म.सा. के पथ पर चलकर आपश्री की पावन प्रेरणा से अलराजपुर, जोबट नगर के आदिवासी भाईयों को नशामुक्ति का अर्थ समझाकर करीब दस हजार आदिवासी भाईयों को नशा मुक्त करवाया व इसके साथ ही जैन समाज को गौरवान्तिवित किया उनकी यह मेहनत अनुमोदनीय है ।

## गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाया

गुरु हमें अंधियारे में ज्ञान की रौशनी दिखाते है । गुरु की महिमा का बखान करने में शब्द व उपमा हमेशा कमतर ही रहे है । उक्त उद्‌गार साध्वी श्री चारित्रकलाश्रीजी ने गुरु पूर्णिमा महोत्सव में व्यक्त किये । कार्यक्रम महाविदेह मधुकर धाम के सिद्धाचल दर्शन में हुआ । सर्वप्रथम साध्वीश्री ने मंगला चरण दिया । सामूहिक गुरूवंदन मांगीलाल व्होरा ने करवाया । गुरु भक्ति गीत राजेन्द्र तलेरा, डिंपल जैन, रेखा सियाल, मलका तलेरा ने प्रस्तुत किये । गुरुदेव आचार्य देवेश श्रीमद् विजयजयंत सेन सूरीश्वरजी के चित्र पर 36 बार मन्त्रोच्चार के साथ वासक्षेप पूजा व दीप प्रज्जवन किया गया । प्रथम पूजा व दीप प्रज्वलन का लाभ भंसाली परिवार ने लिया। कमलेश नाहर, तरुण सकलेचा, राजेन्द्र सियाल ने गुरुदेव से जुड़े अपने संस्मरण सुनाये । साध्वी श्री ने कहा कि गुरु तत्व को नजदीक से देखो या दूर से, ये हमेशा सुहाना ही लगता है । गुरु हमें जीवन में पर्व दिखाते है, प्रयाण के लिए राह दिखाकर हमारी अंगुली थाम लेते है । वही गुरु हमारे गिर जाने पर हाथ पकड़कर फिर से खड़ा भी कर देते है ।

उन्होंने कहा कि गुरु बिना ज्ञान नहीं मिलता, मोक्ष की राह नहीं मिलती, सत्य, असत्य की पहचान नहीं की जा सकती । गुरु जयंतसेन सूरीश्वरजी के बारे में कुछ भी कहना सूर्य की दीपक दिखाने जैसा है । जैन समाज में पहली बार हुए इस गुरु पूर्णिमा महोत्सव में समाजजनों ने उत्साह से सहभागिता की। पूर्णिमा महोत्सव लाभार्थी शैतानमल कटारिया व वासक्षेप पूजा के लाभार्थी अशोक भंसाली का बहुमान इंदरमल कटारिया, रमेश नाहर, दिलीप सकलेचा, राजेन्द्र कटारिया ने किया । संचालन कमलेश नाहर ने किया । जानकारी मीडिया प्रभारी ललित सालेचा ने दी ।

# राणापुर की धन्य धरा पर भव्य प्रवेश हुआ

**राणापुर ।** राणापुर की धन्य धरा पर साध्वी श्री चारित्र कला श्री आदि ठाणा 5 का चातुर्मास के लिए भव्य प्रवेश हुआ । आम्बाकुआ स्थित पेट्रोल पंप पर समाज जनों ने साध्वी मंडल की अगवानी की । यहाँ से बेंज-बाजों के साथ समाजजन उन्हें सुविधिनाथ जिन मंदिर ले गए । यह शिवाजी चौक से शुरू होकर एम.जी. रोड़, पुराना बस स्टेण्ड, सुभाष चौपाटी, पड़ाव गली, सरदार मार्ग होकर राजेन्द्र भवन पहुंची । शोभायात्रा में युवा वर्ग पूरे उत्साह के साथ नृत्य कर रहा था । चौराहो पर गरबा खेलने में युवतियां व महिलाएँ भी पीछे नहीं रही । जगह-जगह शोभायात्रा का स्वागत हुआ । शोभायात्रा में राष्ट्रसन्त आचार्य श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी की तस्वीर एक हाथ ठेला में सजाई गई थी । जगह-जगह जैन-अजैन लोगों ने अक्षत से गहुँली की । राजेन्द्र भवन के देशना हाल में धर्मसभा हुई।

इसमें मुख्य अतिथि श्री संघ के राष्ट्रीय संरक्षक मनोहरलाल पुराणिक, परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश धाड़ीवाल थे । अतिथि के रूप में समाजसेवी सुरेश कोठारी, वीरेन्द्र जैन, मुकेश जैन नाकोड़ा, ज्ञानचन्द जैन, अनिल जैन, कीर्ति भाई व्होरा, मोहित तातेड़, प्रकाश छाजेड़, जवाहरलाल काकड़ीवाला, महिला परिषद की प्रदेश अध्यक्ष पद्मा सेठ, सचिन आशा कटारिया, मंगला धाड़ीवाल, नपं. अध्यक्ष कैलाश डामोर थे । शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान के चित्र पर दीप प्रज्जवलन से कार्यक्रम की शुरुआत हुई । गुरुवंदन डिंपल जैन ने करवाया । इसके पश्चात् साध्वी श्री ने मंगला चरण दिया । स्वागत गीत सोमी तलेरा ग्रुप, पवन नाहर ने प्रस्तुत किया । अतिथियों का पुष्पहार से स्वागत श्री संघ, चातुर्मास समिति व परिषद परिवार व रमेश धाड़ीवाल ने सम्बोधित किया । सभी ने चातुर्मास के दौरान साध्वी श्री के ज्ञान का पूरा लाभ उठाने की बात कही । साध्वीश्री चरित्रकलाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में जिनवाणी का श्रवण आत्मा को पानी बनाता है । पानी जिस बर्तन में डाला जाये वैसा रूप ले लेता है । उन्होंने कहा कि जिस आत्मा को सम्यक् दर्शन मिल जाता है वह आत्मा मोक्ष पथ पर अग्रसर होती है ।

साध्वीश्री ने बताया कि चातुर्मास के दौरान शांत सुधारस ग्रन्थ पर नियमित प्रवचन होंगे। ग्रन्थ व्होराने का लाभ जेके नवकार आराधा ग्रुप ने लिया । आभार दिलीप सकलेचा ने माना । संचालन कमलेश नाहर ने किया ।

# सच्चा गुरु वह जो शिष्य को भी गुरु बना दें

**इंदौर ।** विचारों की शुद्धि और समृद्धि पाने के लिए सद्गुरु का सान्निध्य आवश्यक है । गुरु देह से नहीं गुणों से पूजनीय होता है । गुरु त्याग की प्रतिमा होती है । तेल अपने अस्तित्व का त्याग करता है तब दीप प्रज्जवलित होकर अंधकार मिटाता है । पानी की एक बूंद अपने आप को सागर में समाहित करती तो सागर का स्वरूप पाती है । मिट्टी के कणों का त्याग अन्न के रूप में प्रकट होकर प्राणी मात्र की भूख मिटाता है वैसी ही महान आत्मा अपने परिवार सुख-सुविधा, वैभव आदि त्याग कर संयम जीवन अपनाकर स्वंय तीरते और प्राणीमात्र को तिराते है, समाज को दिशा बोध कराते है । जो निश्चित रूप से आत्मा का ज्ञान करावे वे गुरु है । सच्चा गुरु वह जो शिष्य को भी गुरु बना देवे ।

उक्त प्रवचन गुमास्ता नगर स्थित श्री सीमधंर जिनालय राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर में चातुर्मास हेतु विराजित पूज्य मुनिराज श्री वैभवरत्नविजयजी ने एक धर्मसभा में व्यक्त किये । आपने कहाँ अपने आप को मिटाने वाला सब कुछ पा जाता है । अहं का भाव झुकने नहीं देता और अहं का त्याग सब कुछ दिला देता है । गुरु चरणों में जाकर अहं उन्हें अर्पित कर दो ।

# मुनिराजश्री वैभवरत्नविजयजी म.सा. का भव्य प्रवेश

**गुमास्तानगर ।** इंदौर में पूज्य मुनिराजश्री वैभवरत्नविजयजी म.सा. का चातुमार्सिक प्रवेश एक शोभायात्रा व धर्मसभा के साथ हुआ ।

मुख्य अतिथि श्री हुकुमचन्द्र सावला, श्री रमेश धारीवाल, श्री सुरेशजी तांतेड़, श्री सोहनलाल पारेख, सोनकच्छ विधायक श्री राजेन्द्र वर्मा थे । इस अवसर पर पूज्यश्री ने कहा- वैचारिक शुद्धता के बिना धर्म क्रिया में हम आगे नहीं बढ़ सकते । धर्मक्रिया संख्यात्मक नहीं परिणात्मक चाहिए । कार्यक्रम में 'सस्ते आवास व रोजगार, महिलाओं के लिए सुरक्षायंत्र, सी.डी.ी का लाचींग हुआ। पुस्तकों की विमोचन भी किया गया । कार्यक्रम में अहमदाबाद, मुंबई, सुरत व दक्षिण भारत से भी श्रद्धालु आये थे । चातुर्मास पूर्व विभिन्न कालोनियों में अपने जाहीर प्रवचन श्रृंखला से एक जागृति पैदा की ।

# श्री संघ सौरभ

**रतलाम।** रतलाम नगर की धर्मधरा पर जहाँ एक ओर राष्ट्रसंत गच्छाधिपति श्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. मुनिमण्डल एवं साध्वीवृंद का 10 जुलाई को चातुर्मास हेतु ऐतिहासिक एवं भव्य मंगल प्रवेश हुआ वहीं दूसरी ओर त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ रतलाम द्वारा उनके मंगल स्वास्थ्य की कामना में स्वसंचालित धर्मानुष्ठान के तहत नीमवाला उपाश्रय पर रिकार्ड तपस्याएँ जारी की गईं।

इस वर्ष राष्ट्रसंतश्री का चातुर्मास रतलाम नगर में नवोदित तीर्थ श्री जयन्तसेन धाम पर चल रहा है । संपूर्ण चातुर्मास का लाभ त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता एवं नगर विधायक श्री चेतन्यकुमार काश्यप परिवार द्वारा लिया गया है। राष्ट्रसंतश्री के 80 वें जन्मोत्सव वर्ष से 81 वें जन्मोत्सव वर्ष को समर्पित इस धर्मानुष्ठान में 30 जून तक (205 दिन) 250 से अधिक साधकों द्वारा श्री नवकार महामंत्र के 25 लाख, श्री पार्श्वनाथ प्रभु के 13 लाख व गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के 9 लाख जाप हो चुके हैं । इसी क्रम में साधकों द्वारा 3600 सामायिक, 9000 प्रभु पूजन, 3700 प्रतिक्रमण तथा 250 से अधिक पौषध हो चुके हैं।

धर्मानुष्ठान संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने बताया कि राष्ट्रसंतश्री का चातुर्मास श्री जयन्तसेन धाम पर जारी है । जबकि धर्मानुष्ठान नीमवाला उपाश्रय पर हो रहा है। इस संबंध में संयोजक खेड़ावाला, सहसंयोजक निर्मल कटारिया तथा निर्णायक मण्डल के सर्वश्री सुजानमल सोनी, श्रीमती सरोज तेजमल कांसवा व रचनात्मक एवं संस्काररोपण प्रभारी अनोखीलाल भटेवरा ने राष्ट्रसंतश्री व मुनिभगवन्तों से बदनावर प्रवास में मार्गदर्शन लेकर यह निर्णय लिया कि धर्मानुष्ठान सतत् जारी रहेगा।

श्री संघ व ट्रस्ट मण्डल अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन, सहसंयोजक सुरेशचन्द्र बोराना, धर्माराधक सेवा प्रकल्प प्रभारी श्रीमती ममता धनसुख भंडारी, निर्णायक मण्डल के सोहनलाल मूणत, गेंदालाल सकलेचा व महावीर पोरवाड़ ने धर्मानुष्ठान जारी रहने पर हर्ष व्यक्त किया है।

## गुरुमंदिर ध्वजा आरोहण सम्पन्न

**पारा ।** विश्व पूज्य दादा राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा. के मंदिर की 18 वीं वर्षगाँठ पर पारा जैन समाज द्वारा विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम अल सुबह भक्तामर पाठ, गुरुगुण इक्कीसा, गुरुगुणानुवाद और गौतम इकि ईक्कीसा से शुरू हुए । इसके बाद साढ़े सात बजे मंत्रोच्चार और विधि विधान से अठारह अभिषेक का कार्यक्रम शुरू हुआ। विधिकारक त्रिलोकजी कांकरिया ने

कुसुमांजली और चंदन पूजा के साथ अभिषेक करवाए । चार घंटे तक चलने वाले इस अभिषेक कार्यक्रम में संगीतकार मधुकर संगीत नागदा ने अपने सुमधुर वाणी से स्तवनों को प्रस्तुत कर धार्मिक माहौल तैयार किया । मनोहर छाजेड़, पारस कांठेड़, राजेन्द्र कोठारी तथा वालीबाई छाजेड़, जितेन्द्र कोठारी परिवार ने अभिषेक का लाभ लिया । परिषद महामंत्री सुशील छाजेड़ ने बताया कि दिन में प्रतिष्ठा की वर्षगांठ कार्यक्रम में निश्रा प्रदान करने पधारीं साध्वीश्री चारित्रकलाश्रीजी आदि ठाणा ध्वजा के लाभार्थी संघवी वालीबाई सागरमलजी छाजेड़ परिवार के घर समस्त श्रीसंघ के साथ पहुंची जहाँ से ध्वजा को सरमाथे रखकर संपूर्ण नगर में शोभायात्रा निकाली गई । वरघोड़े के नगर भ्रमण के बाद गुरुमंदिर में जयकारों के साथ ध्वजा आरोहण का कार्यक्रम ओम् पुण्यहाम् - पुण्यहाम्, ओम् प्रियंताम - प्रियंताम् के मंत्रों के साथ सम्पन्न करवाया गया । साथ ही छाजेड़ परिवार

द्वारा गुरुश्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमा पर प्रक्षाल, चंदनपूजा, पुष्पपूजा की गई । प्रतिष्ठा वर्षगांठ के इस कार्यक्रम में सुबह जैन श्रीसंघ की ओर से स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया । दोपहर में गुरुपद महापूजन हुई जिसका लाभ वालीबाई सागरमल छाजेड़ परिवार ने लिया । 3 घंटे तक चली इस पूजा के बाद प्रभावना दी गई। शाम के स्वामीवात्सल्य का लाभ श्रीमाल भंडारी परिवार ने लिया । रात्रि में प्रतिक्रमण के बाद महिला परिषद् द्वारा चौविसी का आयोजन किया गया । रात्रि में भक्ति संगीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ । उक्त जानकारी श्री प्रभाष जैन ने दी ।

## लोढ़ा राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित

**निम्बाहेड़ा** । उत्तरप्रदेश संयम भारती द्वारा आयोजित पंचम राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता 2015-16 का परिणाम ऋषभ विहार मांगी तुंगी तीर्थ महाराष्ट्र पर घोषित किया गया । प्रतियोगिता के विषय - 'नारी शक्ति में सुंस्कारों की आवश्यकता' पर श्री विजयसिंहजी लोढ़ा ने राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पुरस्कार प्राप्त किया है ।

श्री लोढ़ा के इस सम्मान पर कवि प्रहलाद क्रान्ति, सोहनलाल जैन, कैलाश शारदा, दिलीप पामेचा, अरविन्द मून्दड़ा, डॉ. जे.एम. जैन, डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय, डॉ. राजेन्द्र सिंघवी, पवन गंग, गणेशलाल चपलोत, नरेश मेनारिया आदि ने हर्ष व्यक्त कर बधाई दी ।

# निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

**कोयम्बत्तूर ।** श्री कोयम्बत्तूर जैन महासंघ द्वारा दिनांक 19.06.2016 रविवार को विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन स्थानीय श्री नेहरू विद्यालय के प्रांगण में किया गया । श्री कोयम्बत्तूर जैन महासंघ द्वारा टी.वी. एण्ड ब्रदर्स के सौजन्य से आयोजित शिविर में दिल, फेफड़े, दाँत, त्वचा, आँख, मधुमेह, कान, नाक, गला एवं स्त्री रोगों के विशेषज्ञों ने सैकड़ों मरीजों की जाँच कर उन्हें परामर्श दिया । इस शिविर के दरम्यान लगभग 750 लोगों ने 14 विभिन्न विभागों में शहर के प्रतिष्ठित डाक्टरों से इलाज करवाकर लाभ प्राप्त किया । शिविर में आये सभी लोगों को निःशुल्क दवाई वितरित की गई । सभी तरह के बेसिक टेस्ट निःशुल्क किये गये ।

शिविर का उद्घाटन श्रीमती रम्या भारती सुपरिन्डेन्ट ऑफ पोलिस (कोयम्बत्तूर ग्रामीण) द्वारा किया गया । प्रारम्भ में मंगलाचरण श्री घीसुलाल हिंगड़ ने किया । महासंघ के उपाध्यक्ष श्री रमेशजी सुतालिया ने पधारे हुए डाक्टर्स, विभिन्न संघों के पदाधिकारियों एवं शिविर में सम्मिलित हुए सभी लोगों का स्वागत किया ।

# पढ़ाई की सामग्री वितरित की

**मैसूर ।** विद्यादान प्रोजेक्ट के अंतर्गत दिनांक 26 जून को आलकद हल्ली हुंडी गाँव (कड़कोला के पास) में शासकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय में परिषद के सदस्यों द्वारा 100 से अधिक विद्यार्थियों को करीबन 1000 नोट बुक, स्टेशनरी एवं मिठाई वितरित की गई । इस अवसर पर परिषद् से श्री अमरलाल राठौड़, श्री शैलेष धोकलु, श्री गुलाबचंद मेहता, श्री अशोक गोवाणी, श्री अशोक वोरा, श्री प्रकाश घोटा, श्री प्रदीप

भंडारी, श्री विनोद वोरा, श्री उत्तमचंदजी सेठिया एवं श्री मंगलचंद झोटा इत्यादि सदस्य उपस्थित रहे। उक्त जानकारी श्री अमरतलाल राठौड़ द्वारा दी गई ।

---

**निम्बाहेड़ा ।** सुश्रावक स्व. श्री मोहनसिंहजी लोढ़ा के पुत्र श्री केशरीसिंहजी लोढ़ा का स्वर्गवास लम्बे समय से चल रही अस्वस्थता के दौरान दिनांक 22 मई 2016 को 75 वर्ष की आयु में हो गया है । वे पू. आचार्य श्रीमद् विजय जयंत सेनसूरीश्वरजी म.सा. के परम भक्त थे । श्री केशरीसिंहजी की इच्छाइनुसार मरणोपरांत उनकी आँखों का नेत्रदान उनके भ्राता श्री विजयसिंह, श्री सज्जनसिंह एवं पुत्र श्री प्रदीप व श्री मोनु द्वारा किया गया । शोक के इन क्षणों में परिवार को मुनिराजश्री नित्यानंदविजयजी म.सा. का सांत्वना संदेश प्राप्त हुआ ।

# वेदलिया को पत्नी शोक

**डीसा ।** जीवदया प्रेमी श्री हसमुखभाई वेदलिया (डीसा) की सुश्राविका श्रीमती वर्षाबेन वेदलिया का 49 वर्ष की उम्र में अकस्मात् स्वर्गवास हो गया । वे विगत 31 वर्षों से श्री हसमुखभाई के साथ दाम्पत्य जीवन में थीं । उनने कई तपश्चाएँ की थीं । वर्धमान तप के पाये से 12 वीं ओली, नवपद ओली, दो उपधान तप, नव्वाणु यात्रा, भारत भर के 108 पार्श्वनाथ तीर्थों में से अधिकांश की यात्रा, श्री शिखरजी आदि कल्याणक भूमियों की यात्रा आदि से जीवन को धर्ममय बनाया । श्री हसमुखभाई के कल्याण मित्र के रूप में आप खूब भक्ति करती थीं । स्वर्गवास दिनांक 3 जुलाई से एक दिन पूर्व श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा की सेवा-पूजा-यात्रा की । स्वर्गवास के दिन श्री हसमुखभाई जीरावला तीर्थ की बैठक में थे। तभी हृदयाघात हुआ । उसी समय मुनिराज श्री हितयश विजयजी म.सा. गोचरी के लिये घर पधारे, उनने मांगलिक श्रवण करवाया तथा श्री वर्षा बहिन को अंतिम उपदेश दिया ।

शाश्वत धर्म द्वारा हार्दिक श्रद्धांजली ।

---

**राजगढ़ ।** आचार्यश्री रविन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की पार्थिव देह दि. 3 जुलाई 2016 को पंचत्व में विलीन हो गई। आचार्यश्री की अंतिम विदाई में भक्तों की आँखों से अश्रुधारा का सैलाब फूट पड़ा ।

दोपहर करीब 3 बजे मोहनखेड़ा महातीर्थ से निकली आचार्यश्री की पालकी यात्रा राजगढ़ के प्रमुख मार्गों से होते हुए पुनः मोहनखेड़ा पहुंची । यहाँ आचार्यश्री का अंतिम संस्कार किया गया। आचार्यश्री को विदाई देने के लिये तीर्थ पर श्री उत्तम स्वामी, मौनी बाबा म.प्र. ऊर्जा मंत्री श्री पारस जैन, रतलाम-झाबुआ सांसद श्री कांतिलाल भूरिया, रतलाम विधायक (एवं श्री संघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता) श्री चैतन्यजी काश्यप, सरदारपुर विधायक श्री वेलसिंह भूरिया, पूर्व नागदा विधायक श्री दिलीपसिंह गुर्जर, अ.भा. सौ. बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन श्वे. संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी रामानी, महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, उपाध्यक्ष श्री शांतिलाल दसेड़ा एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री सुरेशजी तांतेड़ उपस्थित थे ।

## जैन व काश्यप के प्रयत्नों से हर्ष

**भोपाल ।** म.प्र. शासन द्वारा आंगनवाडियों में दिये जाने वाले मध्यान्ह भोजन के मीनू में अंडा परोसा जाने की खबरें प्रकाश में आने के बाद जैन समाज में इस खबर के प्रति रोष था । इस हेतु म.प्र. के ऊर्जा मंत्री श्री पारसजी जैन एवं प्रदेश भाजपा कोषाध्यक्ष व रतलाम शहर विधायक श्री चैतन्यजी काश्यप ने म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंहजी चौहान से भेंटकर अण्डा परोसा जाने की खबर पर जैन समाज के रोष से अवगत कराया । इस पर मुख्यमंत्री ने गंभीरता से लेते हुए मध्यान्ह भोजन में फिलहाल अम्डा न परोसने का आदेश दिये जाने की जानकारी दी । इस संबंध में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ने भी जनप्रतिनिधियों से सम्पर्क किया था । मुख्यमंत्रीजी के कथन से प्रसन्नता व्याप्त हो गई ।

# परिषद प्रांगण से

## परिषद हुई सम्मानित

श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद उज्जैन की नमकण्डी एवं नयापुरा शाखा को श्री राजेन्द्रसूरी शोध संस्थान में आयोजित आठ दिवसीय कन्या शिविर में आठों दिन अपनी महत्वपूर्ण सेवा प्रदान करने पर परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिक्षा मंत्री श्री पारसजी जैन, रमेशजी धारीवाल, राजेन्द्रजी दंगवाड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्री श्रीमाल ने नमक मण्डी, उज्जैन की शाखा के अध्यक्ष नितेश नाहटा, सचिव वीरेन्द्र गोलेचा एवं नयापुरा शाखा के अध्यक्ष मनीष पीपाड़ा एवं सचिव योगेन्द्र पगारिया को प्रशस्ती पत्र प्रदान कर अनुमोदन की। इस अवसर पर संजय कोठारी, राजेश पगारिया, रितेश खाबिया, पंकज जोनवाल, संतोष कोठारी, अतुल चत्तर, जितेन्द्र नारेलिया, प्रवीण गादिया, राजेन्द्र पगारिया व सुधीर मेहता आदि उपस्थित थे।

## पशुओं का किया उपचार

**राजगढ़** । अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा निःशुल्क पशु चिकित्सा व सर्जरी शिविर का आयोजन श्री जयंतसेन म्युजियम परिसर में किया गया । जिसमें 212 पशुओं का उपचार किया गया। शिविर का शुभारंभ मुनिराजश्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा., विद्वदरत्नविजयजी म.सा. व साध्वी श्री सूर्योदयाश्रीजी म.सा. की निश्रा में हुआ ।

इस अवसर पर मुनिश्री ने वासक्षेप कर मांगलिक श्रवण कराई । पश्चात् पशु चिकित्सा सेवाएँ विभाग धार के विशेषज्ञ व सहायक डॉक्टर एवं बजरंग दल रिंगनोद ने पशुओं का उपचार प्रारंभ किया । शिविर प्रभारी श्री दिनेश मामा ने बताया कि शिविर में चटकी ऑपरेशन 36, माईनर ऑपरेशन 13, स्वास्थ्य परीक्षण 53, गर्भ परीक्षण 30, बांझपन उपचार 35 एवं औषधी वितरण 45 पशुओं का किया गया । शिविर में पशुओं का ऑपरेशन एवं रोगानुसार दवाइयाँ भी निःशुल्क दी गईं । शिविर के समापन पर मुख्य अतिथि सुश्रावक श्री रमेशचंद भंडारी, अतिथि श्री जयंतसेन म्युजियम के ट्रस्टी श्री राजेन्द्र भण्डारी, अतिथि श्री जी.एस. सौलंकी, ब्लॉक अधिकारी पशु चिकित्सा विभाग सरदारपुर एवं अध्यक्षता श्री कांतिलालजी जैन पूर्व शाखा अध्यक्ष ने प्रभु श्री पार्श्वनाथ व दादा गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से नवयुवक परिषद जीवदया के क्षेत्र में विगत 11 वर्षों से अच्छा व अनूठा कार्य कर रही है । उन्होंने मूक पशुओं की निःस्वार्थ भाव से सेवा कर एक अनुकरणीय कार्य किया है । साथ ही हमारे विभाग के साथियों ने भी सेवा

कार्यकर क्षेत्र में एक नई पहचान बनायी है । उनको भी साधुवाद देता हूँ । श्री रमेशचंद भंडारी ने कहा कि इतनी तेज गर्मी में आप सभी चिकित्सकों ने सेवा कार्य कर इन मूक पशुओं को वेदना से मुक्ति दिलायी । अतः मैं आप सभी की अनुमोदना करता हूँ । साथ ही श्री प्रकाश कावडिया व श्री कांतिलाल जैन ने भी उद्‌बोधित किया । डॉ. श्री अशोक मालवीया ने कहा कि हम इतने वर्षों से कार्य करते हुए संस्था के मेम्बर जैसे ही हो गए हैं । हम शिविर में श्रेष्ठतम सेवा करने का प्रयास करते हैं । आप जब भी बुलायेंगे हम सेवा देने को तैयार हैं ।

## परिषद का नवीनिकरण

**सकनावदा** । मुनिराजश्री सिद्यरत्नविजयजी म. एवं मुनिराज श्री विद्धरत्नविजयजी म. की निश्रा में नवयुवक एवं महिला परिषद के निर्वाचन हुए जिसमें श्री नवयुवक परिषद में अध्यक्ष पद पर मनीष शैतानमल कुमट को मनोनीत किया गया । उपाध्यक्ष पद पर मनोहर कटकानी, मंत्री प्रकाश माण्डोत, शिक्षा मंत्री मनीष सेठिया व कोषाध्यक्ष दिनेश माण्डोत को नियुक्त किया गया व साथ ही महिला परिषद् के अध्यक्ष पद पर पूर्णिमा माण्डोत, उपाध्यक्ष शोभा सेठिया व कोषाध्यक्ष चंद्रकान्ता माण्डोत को मनोनीत किया गया एवं ही मुनिराज ने सभी सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाई व इस अवसर पर राजगढ़ से पधारे शषांकजी लुणावत, प्रणयजी भण्डारी, विनयजी भण्डारी पंकेशजी चपलोद नागदा जं.आदि उपस्थित थे साथ ही परिषद् परिवार को मुनिराज ने शुभाआशीर्वाद प्रदान किया व उपस्थित परिषद् सदस्यों व श्रीसंघ द्वारा नव निर्वाचित अध्यक्ष व सदस्यों को बधाईयां दी।

श्रीमती पूर्णिमा माण्डोत

श्री मनीष कुमट

---

**कुशलगढ़** । नवयुवक परिषद कुशलगढ़ शाखा के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें अध्यक्ष पद श्री अशोक कुमार जी, उपाध्यक्ष श्री पवनजी गादिया व मनीषजी लुणा महामंत्री श्री आशीषजीलुणा, कोषाध्यक्ष श्री विजयजी मेहता, शिक्षामंत्री श्री अजयजी मेहता, प्रचारमंत्री अशोकजी पोखरना एवं संगठन मंत्री के पद पर श्री निलेशजी चण्डालिया को मनोनित किया गया ।

**खजूरी** । सौ.वृ.तपा. म.प्र. श्वेताम्बर जैन श्रीसंघ के सहयोग से परिषद परिवार खजूरी आगनवाड़ी केन्द्र पर राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वर म.सा. के प्रांत प्रवेशोत्सव के दौरान किए गए रात्रि विश्राम स्थली पर उनकी भावना के अनुरूप आंगनवाड़ी के बच्चों उपहार वितरण किए । साथ ही राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा पौधारोपण किया गया ।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि थांदला भाजपा के मंडल अध्यक्ष बंटी डामोर, आंगनवाडी सुपरवाइजर सकना डामोर, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता रेखा भूरिया, आंगनवाड़ी सहायिका सुशीला जयंती डामोर का बहुमान भी राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के संरक्षक उमेश बी पीचा, अध्यक्ष चंचल भंडारी, सचिव वैभव छिपानी, उपाध्यक्ष नमन चत्तार, कोषाध्यक्ष प्रांशु लुणावत, उज्जवल लुक्कड़, इशंक पीचा द्वारा किया गया ।

# जैन विश्व

* महाराष्ट्र के धोलावाड़ में एक सौ वर्षों मेंपहली बार आचार्यश्री श्री विजयरत्नचंद्रसूरिजी के सान्निध्य में उनके आज्ञानुवर्ती दस मुनियों व 22 साध्वीजी का चातुर्मास हुआ । श्रद्धालु धन्य होकर हर्षित हैं ।

* जैनाचार्य श्री विजय रत्नचन्द्रसूरिजी म. (डहेलावाला) के सान्निध्य में श्री सुमेरू नवकार तीर्थ मिया ग्राम करजन के मध्य पारिवारिक वाचना श्रेणी का आयोजन किया गया जिसमें 500 आराधकों ने भाग लिया ।

* सुप्रसिद्ध सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र कुण्डलगिरि कुण्डलपुर म.प्र. में आयोजित बड़े बाबा महामस्तकाभिषेक महामहोत्सव में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने महामस्ताभिषेक किया एवं धर्म लाभ लिया। लाखों श्रद्धालुओं ने जो देश के कोने-कोने से आये थे, ने बड़े बाबा की अत्यंत मनोहारी 15 फीट ऊँची पद्मासन प्रतिमा के दर्शन किये।

## समग्र जैन चातुर्मास सूची

समग्र जैन सम्प्रदायों (श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगंबर सम्प्रदायों) के लगभग 16 हजार से अधिक जैन साधु-साध्वियों के प्रतिवर्ष होने वाले चातुर्मास एवं समाज की गतिविधियों की जानकारियाँ हेतु समग्र जैन चातुर्मास सूची का विगत 37 वर्षों से प्रति वर्ष नियमित प्रकाशन किया जाता रहा है ।

'समग्र जैन चातुर्मास सूची 2016' हिन्दी भाषा पृष्ठ 600, मुंबई स्थानकवासी जैन चातुर्मास सूची (गुजराती भाषा में) पृष्ठ 500 एवं रंगीन चार्ट के 38 वे अंक का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है।

अतः आपके गाँव, शहर, कस्बे उपनगरों में जिन पूज्य जैन गच्छ नायक, आचार्यों, साधु-साविध्यों के 2016 वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी की जानकारियाँ शीघ्र भिजवावें । चातुर्मास की जानकारियाँ ई-मेल से भी प्रेषित कर सकते हैं ।

Email:ujjwalprakashan@gmail.com
बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल' संपादक- 105 तिरूपती अपार्टमेन्टस, आकुर्ली क्रोस रोड़ नं.1, रेलवे स्टेशन के सामने, कांदिवली (पूर्व), मुंबई 400101, टेलीफैक्स : (022) 28871278, मोबाइल. 093245-21278

---

**उज्जैन** । नवकार की नव उपाधि से उज्जैन में आयोजित त्रिदिवसीय अवार्ड फेस्टीवल में देशभर से समाज के विभिन्न हस्तियों को अलंकृत किया गया । आयोजक विनायक ए. जैन लुनिया ने बताया कि नवकार महोत्सव के अवार्ड फेस्टीवल में देशभर के अनेक विद्वानों को अनेक उपाधियों से सम्मानित किया गया।

---

**मैसूर** । मैसूर परिषद् द्वारा 'अन्नदान प्रोजेक्ट' के अंतर्गत् दिनांक 3.07.2016 रविवार को 'आशादायक सेवा ट्रस्ट, मैंसूर' में जाकर गरीब एवं अनाथ बच्चों को भोजन कराया गया । इस अवसर पर परिषद के सदस्यगण उपस्थित रहे । उक्त जानकारी श्री अमृत जैन ने दी ।

# गच्छाधिपति राष्ट्रसंत
# श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर'
# एवं आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणीवृंद चातुर्मास सूचि -2016

## 1. रतलाम (म.प्र.)

सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.
वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानन्द विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री अपूर्वरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.
बालमुनि श्री प्रसिद्धरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.
बालमुनि श्री प्रत्यक्षरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री जिनागमरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री पवित्ररत्नविजयजी म.सा.

**श्री जयन्तसेन धाम**
सागोद रोड़, रतलाम (म.प्र.) पिन-457001
सम्पर्क 02977-278033 (पेढ़ी)
मो. 9589065208 (धर्मेन्द्र) 9429096616 (हेमूभाई)

## 2. भाण्डवपुर (राज.)

मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री अशोकविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री आनन्द विजयजी म.सा.

**श्री महावीर स्वामी जैन पेढ़ी**
पो. भाण्डवपुर, जिला - जालोर (राज.) पिन - 343022
सम्पर्क - 02977-278033 (पेढ़ी)

## 3. जोधपुर (राज.)

मुनिराज श्री वीररत्नविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री विनीतरत्नविजयजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर विलायती वास

पो. शिवगंज, जिला-सिरोही (राज.
पिन- 307027, सम्पर्क 9413655969 (रमेशजी)

## 4. कुशलगढ़ (राज.)

मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराजश्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर**
महात्मा गांधी मार्ग, कुशलगढ़ (राज.)
पिन- 364270, मो. 9413625065

## 5. पालीताणा (गुजरात)

मुनिराज श्री विनयरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री अजीतसेनविजयजी म.सा.

**श्री यतीन्द्र भवन धर्मशाला**
तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. भावनगर (गुज.)
पिन- 364270 सम्पर्क -02848-252237

## 6. इंदौर (म.प्र.)

मुनिराज श्री वैभवरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराजश्री शंखेशरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री गोयमरत्नविजयजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर**
गुमास्ता नगर, इंदौर
सम्पर्क - 9425052153 (धर्मीचन्दजी)

## 7. विजयवाड़ा (आं.प्र.)

मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी म.सा.
मुनिराज श्री भुवनरत्नविजयजी म.सा.

Shri Rajendra Suri Aaradhna Bhawan
Pool Bhavi Street
Post- VIJAYAWADA (A.P.) 520001
Ph. 0866-2561320, 9440434107 (Paras JI)

## 1. अहमदाबाद रतनपोल (गुजरात)

साध्वी श्री स्वयंप्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री दर्शितगुणाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री विनीतगुणाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री वात्सल्यगुणाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री संयमदर्शिताश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री विशुद्धदर्शिताश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री ज्ञानदर्शिताश्रीजी म.सा.

**कला स्वचेर, पहली मंजिल सुविधा शांपिंग सेन्टर**
पालड़ी, पो. अहमदाबाद (राज.)
पिन- 380001 सम्पर्क 9913139393

## 2. अहमदाबाद नवा वाडज (गुजरात)

साध्वीश्री पूर्णकिरणाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री कल्परेखाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री परमरेखाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री पदरेखाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर**
थीरपुर नगर सोसायटी, नवा वाडज
पो. अहमदाबाद (गुज.)
पिन-380013 सम्पर्क 9898212187

## श्रमणीवृन्द -1

## 3. अलवर (राज.)

डॉ. साध्वीजी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा.
डॉ. साध्वीजी श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन गुरु मन्दिर**
कटी घाटी, जगन्नाथजी का मंदिर, अलवर (राज.)

पिन - 301001, सम्पर्क 9460220981

## 4. सियाणा (राज.)

साध्वीजी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री हितप्रज्ञाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री वैराग्यगुणाश्रीजी म.सा.

**श्री ओसवाल जैन धर्मशाला**
पो. सियाणा, जिला- जालोर (राज.)
पिन- 343024, सम्पर्क - 8890144086

## 5. भाण्डवपुर (राज.)

साध्वीजी श्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री अरूणप्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री सम्यगप्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री शरदप्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री शीतलप्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री विनीतप्रभाश्रीजी म.सा.

**श्री महावीर स्वामी जैन पेढ़ी**
पो. भाण्डवपुर जिला- जालोर (राज.)
पिन- 343022, सम्पर्क : 02977-278033 (पेढ़ी)

## 6. नीमच (म.प्र.)

साध्वीजी श्री सूर्योदयाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री कैलाशश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री विपुलदर्शिताश्रीजी म.सा.

**जैन मंदिर, विकास नगर, नीमच (म.प्र.)**
मो. 9425106060 (शोकिन)

## 7. पालीताणा (गुजरात)

साध्वीजी श्री चन्द्रयशाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री दिव्यदृष्टाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री चिन्तनकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री पुनितकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री मौनदृष्टाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री पावनदृष्टाश्रीजी म.सा.

**श्री यतीन्द्र भवन धर्मशाला**
तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. भावनगर (गुज.)
पिन- 364270 सम्पर्क -02848-252237 (पेढ़ी)

## 8. नैल्लोर (तमिलनाडु)

साध्वीजी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री सम्यगदर्शनाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री चारूदर्शनाश्रीजी म.सा.

Shri Shreyansnath Jain Tample
Mandpala Street. P. NELLORE (A.P.)
M. 986666696 (Shentilalji)

## 9. अहमदाबाद (गुजरात)

साध्वीजी श्री वसंतमालाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री रंजनमालाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री रत्नयशाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर**
राजेन्द्रसूरि चौक, रतनपोल, पो. अहमदाबाद (गुज.)
पिन-380001 सम्पर्क 079-25357725 (पेढ़ी)

## 10. भीलवाड़ा (राज.)

साध्वीजी श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री हर्षदर्शनाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री विरतीदर्शनाश्रीजी म.सा.

**श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ**
महावीर पार्क के सामने, नागोरी गार्डन
पोस्ट - भीलवाड़ा (राज.) 311001
सम्पर्क - 9929445100 (अमृतलालजी)

## 11. जोधपुर (राज.)

साध्वीजी श्री मोक्षगुणाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री नम्रगुणाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर**
खेरादियों का वास, पो. जोधपुर (राज.)
पिन- 242001 सम्पर्क -8107195962

## 12. थराद (गुजरात)

साध्वीजी श्री कैवल्यगुणाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री शुद्धात्मदर्शिताश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री श्रेयसदर्शिताश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रजैन ज्ञान मंदिर**
सदर बाजार, पो. थराद (गुज.)
पिन- 385565 सम्पर्क -9426895111 (शैलेषजी)

## 13. बड़नगर (म.प्र.)

साध्वीजी श्री अविचलदृष्टाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री निरूपमकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री मैत्रीकलाश्रीजी म.सा.
साध्वश्री निरंजनकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री अर्हतप्रियाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्र जैन ज्ञान मंदिर**
राजेन्द्रसूरि चौक, पो. बड़नगर, जिला- उज्जैन (म.प्र.)
पिन- 456771, सम्पर्क - 07367-220107
मो. 9993833991 (शान्तिलालजी)

## 14. आणन्द (गुजरात)

साध्वीजी श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री चैत्यप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री उपशमप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री विवेकप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री विबुधप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री सुव्रतप्रियाश्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री सत्वप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री अर्पणप्रियाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर**
लक्ष्मी सिनेमा की गली, पो. आणन्द (गुज.)
पिन- 388001, सम्पर्क - 9825595131)

## 15. सुरत (गुजरात)

साध्वीश्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री अक्षयकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री निर्वेदकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री आगमकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री विरागदृष्टाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री ध्यानदृष्टाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर**
सुभाष चौक, गोपीपुरा, पो. सूरत (गुज.)
पिन- 395001 सम्पर्क -9824150342

## 16. अहमदाबाद

साध्वीजी श्री अनन्तदृष्टाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री मयूरकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री अध्यात्मकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री अर्पितकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री वीतराग निधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री विरागनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री आज्ञानिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री जिनाज्ञानिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री मुक्तिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री रिद्धिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री सिद्धिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री श्रीनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री परमनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री राजनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री लब्धिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री गोयमनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री द्युतिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री मल्लिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री दीपनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री जयणानिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री देवनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री परागनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री वीरनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री मेघनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री मेरूनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री मौलिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री मंगलनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री सुपार्श्वनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री नमिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री नन्दिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री नेमिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री आदिनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री श्रेयासंनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री तीर्थनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री नयनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री शुभनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री उदयनिधिश्रीजी म.सा.

**श्री यतीन्द्र सूरि क्रिया भवन, मेनहसन की गली**
एच.सी.जी. हॉस्पीटल के सामने मीठा गली 6 रास्ता
पो. अहमदाबाद (गुज.) सम्पर्क, 9824069718

## 17. अहमदाबाद अमराईवाड़ी (गुज.)

साध्वीजी श्री विद्वतगुणाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री रश्मिप्रभाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर**
नानावटी सोसायटी, अमराईवाड़ी, पो. अहमदाबाद (गुज.)
पिन- 380026, सम्पर्क - 9408500131

## 18. मुम्बई (महाराष्ट्र)

डॉ. साध्वीजीश्री दर्शनकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री जीवनकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री अपूर्वकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री सुमनकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री सौरभकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री धैर्यकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री ध्रुवकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री मंत्रकलाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर**
10 वीं खेतवाड़ी, पो. मुंबई (महा.)
पिन-400001, सम्पर्क - 9820374592

## 19. पांथेड़ी (राज.)

साध्वीजी श्री शासनलताश्रीजी म.सा.
डॉ. साध्वीजी श्री अनेकान्तश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री यशोलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री कौविदलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री अतिशयलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री कारुण्यलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री समर्पणलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री वीतरागलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री श्रेयसलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री परमेष्ठिलताश्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीजी श्री हींकारलताश्रीजी म.सा.

श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर
पो.पांथेड़ी, जिला - जालोर (राज.) पिन- 343021

सम्पर्क - 9945841350 महेन्द्र भाई

## 20. रतलाम (म.प्र.)

साध्वीजी श्री तत्वलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री भक्तिरसाश्रीजी म.सा.
डॉ. साध्वीजी श्री अमृतरसाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री कुसुमलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री सिद्धान्तरसाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री राजयशाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री जिनांगयशाश्रीजी म.सा.

**श्री जयन्तसेन धाम**
सागोद रोड़, रतलाम (म.प्र.)
पिन- 457001, सम्पर्क - 02977-278033 (पेढ़ी)
मो. 9589065208 (धर्मेन्द्र), 9429096616 (हेमू)

## 21. आहोर (राज.)

साध्वीजी श्री विज्ञानलताश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री अरिहंतनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री संवरलताश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि क्रिया भवन**
पुराना बस स्टेण्ड, पो. आहोर जिला-जालोर (राज.)
पिन- 307029, सम्पर्क - 9414588335

## 22. राणापुर (म.प्र.)

साध्वीजी श्री चारित्रकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री आर्जवकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री अर्हमनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री देशनानिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री क्रियानिधिश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि भवन**
महात्मा गांधी मार्ग, पो. राणापुर, जि. झाबुआ (म.प्र.)
पिन- 457993, सम्पर्क 9424064501 (तरूण)

## 23. भीनमाल (राज.)

साध्वीजीश्री नयनप्रभाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर**
धोराढाल, भीनमाल, जि.जालोर (राज.) पिन- 343001

## 24. अहमदाबाद मोटेरा (गुजरात)

साध्वीजीश्री भाग्यकलाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री युगप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री यशप्रियाश्रीजी म.सा.

**श्री राज राजेन्द्र नगर, अशोक विहार, सी- ब्लॉक**
इंजीनियर कॉलेज के सामने, गांधीनगर हाईव
पो.मोटेरा जिला- गांधीनगर (गुज.) सम्पर्क -9426462346

## 25. जालोर (राज.)

साध्वीजीश्री काव्यरत्नाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री कुलरत्नाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री विरतिरत्नाश्रीजी म.सा.

**श्री त्रिस्तुतिक जैन धर्मशाला**
कांकरियावास, पो. जालोर (राज.)
पिन- 343001, सम्पर्क 9414152888

## 26. नागदा (आ.प्र.)

डॉ. साध्वीजी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.
डॉ. साध्वीजी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.
डॉ. साध्वीजी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.

**प्रधान पाठशाला भवन**
रानी लक्ष्मीबाई मार्ग, पो. नागदा जं.
जिला- उज्जैन (म.प्र.) पिन- 456335
सम्पर्क 8989615780, 9827095252

## 27. खाचरोद (म.प्र.)

साध्वीजी श्री संवेगप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री कुमुदप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री शाश्वतप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री ऋजुप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री स्मितप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री चित्तप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री परार्थप्रियाश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री सोहमप्रियाश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्र जैन पोषधशाला**
पो. खाचरोद, जिला- उज्जैन (म.प्र.)
पिन- 456335, सम्पर्क 9926570377 (ज्ञानजी)

## 28. डीसा (गुजरात)

साध्वीजीश्री श्रुतनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री योगनिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री श्रद्धानिधिश्रीजी म.सा.
साध्वीजीश्री तपोनिधिश्रीजी म.सा.

**श्री राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मन्दिर**
नेमीनाथ नगर, पो. डीसा (गुज.) पिन- 385535
सम्पर्क - 9426366252 (विनोद भाई)

**श्रमण वृन्द - 24** **श्रमणी वृन्द - 167**

**इस वर्ष कुल चातुर्मास -36 स्थल**

**इस वर्ष में - नूतन दीक्षा -1** **कालधर्म - 3**

**चातुर्मास सूचि संयोजक- मुनि निपुणरत्नविजयजी**

# शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

# श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव
**श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**
की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

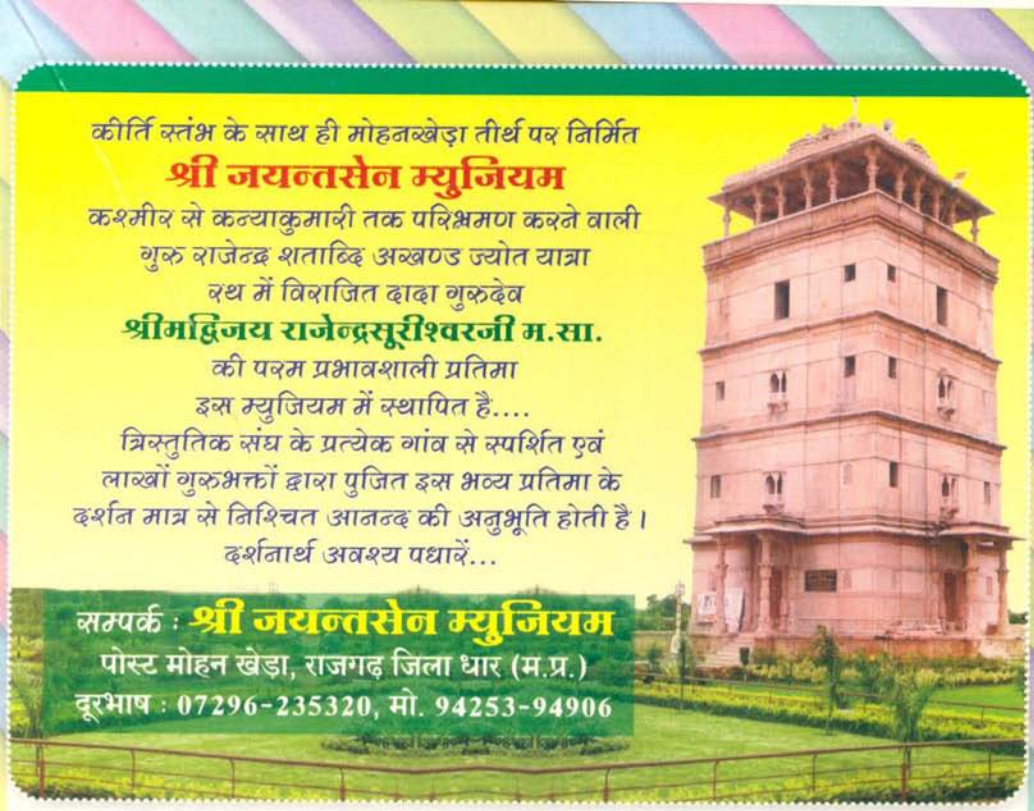

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

---

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि.....  दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

## शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

**तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....**

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

***तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....***

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 132

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी है ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी है ।।

प.पू. सुविशाल गच्छाधिपति,
शासन सम्राट,
राष्ट्रसंत, साहित्य मनिषी
**श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.**
की आज्ञानुवर्ति साध्वीजी
**श्री महाप्रभाश्रीजी** की सुशिष्या
**पू. साध्वी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा.**
के संयम जीवन के 39 वें वर्ष के
मंगल प्रवेश पर वंदना ।
इस शुभावसर पर
आपके दीर्घ व स्वस्थ जीवन की
कामना करते हैं
एवं हार्दिक शुभ कामनाऐं ।

**संघवी शांतिलाल शेषमलजी सामाणी**
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय
जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001